



नमो लोए सव्यसाहणं

नमो उवज्यायाणं

नमो आयरियाणं

नमो सिद्धाणं

नमो अनिहंताणं

एसां पंच नमोक्कारो

जव पावप्पणासणं

मंगलाणं च सव्योदि

पहल हवइ मंगलम

ॐ

आसक्ति

अपरिग्रह

ब्रह्मचर्य

अस्तय



જૈન પ્રકાશન મંદિર, અમદાવાદ.



श्री संखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

सरल विधिसहित (सचित्र)

# श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र

( भावार्थ सहित )



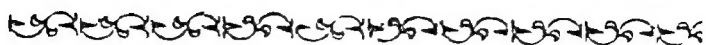
: प्रकाशक :

श्री पारसमल प्रेमचंद  
२७०, सायन (पूर्व)  
बवर्ड-४०००२७

: पुस्तक प्राप्ति स्थान :

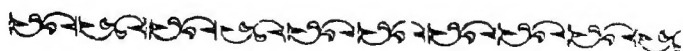
जैन प्रकाशन मन्दिर  
३०९।४ खत्रीनी खडकी  
दोशीवाडानी पोल-अहमदाबाद-१  
फोन-३८३७०६

मूल्य : पन्द्रह रुपया



: पुस्तक प्राप्ति स्थान :

- (१) जैन प्रकाशन मंदिर  
३०९।४ खत्रीनी खडकी  
दोगीवाडा नी पोल  
अहमदाबाद-३८०००१
- (२) सोमचन्द डी-शाह  
जीवन नियाम सामे, पालीताना-३६४०७०
- (३) मेघराज जैन पुस्तक भंडार  
२१९/A कीकास्ट्रीट, गोडाजीनी चाल.  
पायधुनी, बवइ-४००००२
- (४) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार  
मु पो शंखेश्वर-३८४२४६



: मुद्रक :

श्री रामानन्द प्रिन्टींग प्रेस  
काकरिया रोड  
अहमदाबाद-३८००२२



## अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
१ सामायिक लेने की विधि	१
२ राई-प्रतिक्रमण विधि	५
३ सामायिक पारने की विधि	४८
४. देशसीय प्रतिक्रमण-विधि	५१
५. सामायिक पारने की विधि	९३
६. गुरुवन्दन की विधि	१००
७. चैत्यवन्दन करने की विधि	१००
८. पौषध लेने की विधि	१०४
९. पञ्चकूखाणो	११८
१०. स्तवनादि संग्रह	१२२
११. पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि	१४५
१२. चौमासी प्रतिक्रमण विधि	२५६
१३. संजत्सरी प्रतिक्रमण विधि	२५८
१४. नवस्मरणानि-	२५९
१५. पर्वतीथी स्तवनादि संग्रह	२९१
१६. प्रतिक्रमण चित्रावली	१ थी १६
१७. परिशिष्ट १ संक्षिप्त भावार्थ	१-८
१८. परिशिष्ट २ वंदिता सूत्र परिचय	१-१६

## प्रस्तावना

अनादि अनंत कालसे चोगसी लक्षयोनि मे आत्मा का परिभ्रमण चालू है । उसमे अनंत पूण्योदयके कारण जैन धर्मकी प्राप्ति हुई ।

जैन शासनमें आत्म शुद्धि के लीए धर्म क्रिया का महत्व बताया है । जैसे कपड़े पर साबुन लगानेसे मैल दूर होकर वस्त्र उज्ज्वल बनता है, वैसे ही जिन दर्शित क्रिया करने से आत्मा पर लगे हुए कर्म के थर दूर होते हैं और आत्मा उज्ज्वल बनता है ।

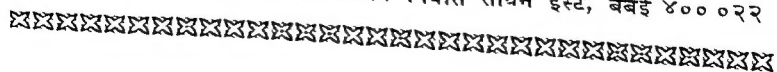
कर्मका आगमन अशुभ क्रिया से होता है, क्रिया याने प्रवृत्ति । आये हुए कर्म संवर निर्जराकी क्रियासे ही दूर होते हैं । कर्मके उदयको अटकाने के लिए संवर क्रियाकी जरूरत है ।

साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघको कर्मवन्धन मे से छूटने के लीए प्रतिक्रमण क्रियाका विधान बताया है ।

प्रतिक्रमण का संस्कृत के नियामानुसार-प्रति-पीछे हटना, क्रमण-गमन करना पापरूप क्रिया से पीछेहट कराना स्वदशार्में आना । प्रमत्तदशासे अप्रमत्तदशार्में आना ।



॥ क पारसमल प्रेमचंद २७०, रुपउदय निवास सायन इस्ट, बबई ४०० ०२२



उस प्रतिक्रमणको मूलमें आवश्यक सूत्रभी कहते हैं प्रतिक्रमण आवश्यक क्रियासे आत्मा अंतर दृष्टिवाला बनता है

ज्ञानी भगवंतोंने आवश्यक क्रियाके छः विभाग बताये हैं

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति स्तव (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) काउस्सग (६) पञ्चकखाण

(१) सामायिक आवश्यक इरियावही करके करेमि भंते का पाठ गुरुमुखसे होता है भूतकाल के पापों की निंदा गद्दी-वर्तमान पाप प्रवृत्तिसे अटकना, और भविष्यके पापके प्रत्याख्यान रूप हैं ।

(२) चतुर्विंशति आवश्यक चतुर्विंशति जिनोंके गुणोंका कीर्तन करते हुए आत्मा भगवान् जैसा बनता है चैत्यवंदन करके चार थोय बोल करके होता है लोगस्स सूत्रसे चतुर्विंशति आवश्यककी आराधना की जाती है ।

(३) गुरु भगवंतके चरणोंमें वादणा देनेसे होते हैं । गुरुका विनय और अपराध की क्षमापना करते और आलोचना लेते समय सुगुरु वंदन सूत्र बोला जाता है गुरुका शुभाशीर्वाद से कैसे या भारी पापों को वो डालता है ।

(४) श्रावक के १२ व्रत संबंधी ७५ अतिचार (दोष और ४९ अतिचार (दोष) पंचाचार-सम्यक्त्व संलेखनाके मिलाकर १२४ अतिचारों को शुद्धि के लिए वदित्तसूत्र

उपयोग पूर्वक अर्थ चिंतनसे बोला जाता है तो अति पापी भी पावन हो जाता है इसीलिए हर एक आत्माको प्रतिक्रमण करना चाहिए—

(५) ज्ञानाचार—दर्शनाचार चारित्र्याचार—तपाचार और वीर्याचार की शुद्धि निमित्त काऊस्मग्ग किया जाता है । सबधर्मानुष्ठानकी शक्तिको विना छुपाकर उद्यम करनेसे वीर्याचार की शुद्धि होती है ।

(६) गुरु भगवत के पास आहारादि के त्यागरूप पञ्च-क्वखाण लेने से पञ्चक्वखाण आवग्यक्त होता है “नारकीजीव सं। वर्षे सो जितना कमे खपाते है उतना कर्म नवकार सीका पञ्चक्वखाणसे आत्मा खपाता है इसीलिए हर एक आत्माको पोगिमि साहुगोरिसि पुरिमुट्टइ इत्यादि करना चाहिए—

प्रतिक्रमणके हर एक सूत्र बहुत ही गाम्भीर्य और तत्त्वसे भरपूर है उसके अर्थ—भावार्थ—समझने से अपार शुभ साधनाकी वृद्धि से आत्मा अनादि कालसे संचित कीष्ट हुए पापका भार उतारके हलका बन जाता है । प्रतिक्रमणके सूत्र मंत्र गर्भित हैं

जैसे गारुडिक लोग सर्प विच्छि आदि का जहर उतारने के लिए मन्त्रोच्चार करते हैं और मन्त्रके बलसे व्यक्ति का जहर

दूर हो जाता है वैसे ही प्रतिक्रमणके सूत्र मंत्राक्षररूप होने से कर्मरूपी जहरको उतारने की शक्तिवाला होनेसे कर्म का जहर दूर होता है ।

इसलिए प्रतिक्रमण पढ़नेवाले और पढ़ानेवाले प्रत्येक मव्यात्मा सूत्रों की शुद्धि एवं समस्त उपर संपूर्ण लक्ष्य देने का ध्यान रखते हुए करे ।

अनादिकालसे उक्कट्टे किये गये पापों का नाश करने वाली लाखों जन्मान्तरों को मंथन करनेवाली ऐसी चौबीस तीर्थंकर के मुखसे निकली हुई धर्मरूपासे अपना जीवन व्यतीत, करे हर एक जीव इसे सुने वाचे और उपयोगमें लावे ।

सम्यग्दृष्टि देवताओं मेरेको धर्म ध्यानमें चित्तकी स्थिरता समाधि और सम्यक्त्वकी प्राप्तिमें निरंतर सहायक हो ।

परम पूज्य आचार्यजी विजय यशोदेव सूरेश्वरजी. ओ. को आज्ञासे श्री युक्ति कमल जैन मोहनमाला कार्यवाहक समिति ने इस पुस्तक में लिए गये चित्रों को पुनः प्रकाशित करने की अनुमति दी है इस सहकार के लिए हम संस्था के आभारी हैं ।

: प्रकाशक :

श्री पारसमल प्रेमचंद

## प्रभु तारु गीत मारे गावुं छे.

प्रभु तारु गीत मारे गावुं छे,  
प्रेमनुं अमृत पावुं छे प्रभु

याय जीवनमा तडका ने छाया  
मागु हुं तागी एक ज माया  
भक्तिना रसमा न्हावुं छे प्रभु

भव सागरमा नाव झकावी  
व्या तो भयानक आधी चडी आगी  
सामे किनारे मारे जावुं छे प्रभु

तु वीतरागी हु अनुरागी  
तारा जीवननी रट मने लागी  
प्रभु तारा जेवुं मारे थावुं छे प्रभु

इस पुस्तक को उपयोग में लेने से पहले  
पुस्तक में दिये गये परिशिष्ट-१ और २ को ध्यान  
में लेना आवश्यक होगा और पुस्तक में दिए गये  
चित्रों को ध्यान से देखना भी आवश्यक होगा ।

प्रकाशक

॥ श्री आदीश्वर भगवान् ॥



प्रकाशक पारसमल प्रेमचंद २७०, रुपउदय निवास सायन इस्ट, बवई ४०००२





॥ श्री महावीराय नमः ॥

सरल विधि सहित—

श्री पञ्च प्रति मण सूत्र

---

### सामायिक लेनेकी विधि

( पहिले उचे आसन पर पुस्तक प्रमुख रखके आवक श्राविका, शुद्ध चस्त्र से कटासणा, मुहपत्ति, चरवला लेकर भूमि पूज के कटासणे पर बैठ के मुहपत्ती बाये हाथमे मूहके पास रखके जिमणा हाथ स्थापनाजीके सम्मुख रखकर ऐसा कहे )

नमो अरिहताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं  
॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥  
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मगलाणं  
च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

( ऐसे एक नवकार गिनकर फिर )

पंचिदिय संवरणो, तह नवविह बंमचेर गुत्तिधरो; चउ-  
विह कसाय मुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पच  
महव्वय जुत्तो, पच विहायार पालण रामत्थो; पंच समिओ  
तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥

( ऐसे पचिदिय कहे, यदि पहिले उस स्थान पर आचार्य प्रमुखकी स्थापना की हुई हो तो वहा नवकार और पचिदिय नहीं कहना, फिर )

इच्छामि समासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीदियाए  
मत्थएण वदामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ?  
इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउ ॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए  
॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,  
ओसा उत्तिग-पणगदग मही-मक्कडा-संताणा-संक्कमणे ॥४॥  
जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिदिया, वेडंदिया, तेडदिया,  
चउरिदिया, पंचिदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया,  
सघाइया, सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उइविया,  
ठाणाओ ठाणं संक्कामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स  
मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही करणेणं,  
विसल्ली करणेणं, पायाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि  
काउस्सगं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छाएणं,  
जभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए

१ प्रतिक्रमण वगैरेह विधिओमे जहा जहा समासमण  
देनेमे आते है वहा वहा खडे होकर देना चाहिये, आदेश  
भी खडे होकर मागना चाहिये ।

॥१॥ सुहुमेहि, अंग संचालेहि, सुहुमेहि, खेलसंचालेहि, सुहु-  
मेहि दिट्ठिसंचालेहि, ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अमग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भग-  
वताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥५॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
आणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( फिर एक लोगस्स या चार नवकारका काउस्सग्ग करना ।  
थोछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे मुताबिक है । )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे, अरिहंते कित्त-  
इरस, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ-मज्झिअं च वदे, संभव-  
मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे  
॥२॥ सुविहि च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस दामुपुज्जं च;  
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सैति च वदामि ॥३॥ कुथु अरं च  
मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिज्जिणं च; वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं  
तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला  
पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिगवरा, तिथ्यरा मे पग्गीयतु  
॥५॥ कित्तिथ वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;  
आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दितु ॥६॥ चंदेसु निम्म-  
लयरा, आडच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गभीरा, सिद्धा  
सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडि-  
लेहु ? इच्छं,

( ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहन करना, फिर )

इच्छामि ख्मासमणो वदिउ , जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण व दामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं !  
“इच्छं” इच्छामि ख्मासमणो वंदिउ , जावणिज्जाए निसी-  
हिआए मत्थएण व दामि.

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? “इच्छं”  
(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोड के नीचे मुजब एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाण,  
नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनयुक्कारो,  
सव्व पावप्पणासणो, मगलाण च सव्वेसि, पढमं हवइ मगलं ।  
पीछे (दो हाथ जोडके)

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी?  
(ऐसा गुरु महाराज को कहना । यदि गुरु न हो तो स्वयं बोलना)

करेमि भंते ! सामाडयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाय  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं मणेण, वायाए, काएणं,  
न करेमि, कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि, (फिर)

इच्छामि खमासमणो । वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । वेसणे संदिसाहुं ? 'इच्छं'  
इच्छामि खमासमणो । वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । वेसणे ठाउं ? 'इच्छं',  
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सज्झाय सदिसाहुं ?  
'इच्छं' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-  
हिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सज्झाय करु ? 'इच्छं'  
( ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़ के तीन नवकार गिनना )

सामायिक लेने की विधि संपूर्ण

## राइ प्रतिक्रमण विधि

[ उपरोक्त प्रकारसे सामायिक लेकर बाद ]

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
त्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । कुमुमिण दुमुमिण  
उड्डावणी राड पायच्छित्त विमोहणत्थं काउस्सग्ग ऋ ? इच्छं,  
कुमुमिण दुमुमिण उड्डावणी राड पायच्छित्त विमोहणत्थं  
करेमि काउस्सग्ग ”

अन्नत्थ जससिएण, निससिएणं, स्वासिएणं, छीएण,  
जभाडएण, उइडुएणं, वायनिसग्गेण, ममलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंग संचालेहि, सुहुमेहि, खेल संचालेहि, मुहु-  
मेहि दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाडएहि आगारेहि, अम्मगो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाय अरिहंताण  
भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण  
मोणेण ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( चार लोगस्सका “चदेसु निग्गल्यरा” तक काउस्सग्ग  
करना । लोगस्स न आता हो तो सोलह नवकारका  
काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पार के प्रगट लोगस्स कहना ।  
वह नीचे मुजब है— )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म—तित्थयरे जिणेः अग्निंते कित्त-  
इस्स, चउत्रीसंपि केवली ॥१॥ उसज—मज्झिं च वंदे, संभव-  
मसिणदण च सुमड च; पडम्पह सुपासं, जिण च चंदप्पह वदे  
॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुडुज्ज च;  
विमल—मणंत च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं  
च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमि—जिण च; वंदामि रिट्ठनेमि,  
पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ विहुय—रय-

मला पहीणजर मरणा; चउवीसंपि जिणयरा, तित्थयरा मे पसी-  
यतु ॥५॥ हित्थिय-पंदिय-महिया, जे ए लोणस्म उत्तमा  
सिद्धा, आरुग्ग वोहिलामं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥  
चंदेसु निम्मलयर, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर  
गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥ फिर,

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदनं करुं ? इच्छ  
( ऐसा कहकर वाया घूटना ऊंचा करके चैत्यवदन करना )  
चैत्यवंदन.

जगचितामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव  
जगसत्थवाह, जगभाव-विअक्खण, अट्ठावय-संठविय-रुव,  
कम्मठ-विणासण, चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहयसा-  
सण ॥१॥ कम्मभूमिहि कम्मभूमिहि पढम-सघयणी, उक्कोसय  
सत्तरिसय, जिणवराण निहरंत लवमइ, नवकोडिहिं केउलीण.  
कोडिसहस्स नव राहु गरमइ, संपद जिणवर वीस मुणि, विहुं  
कोडिहि वरनाण, समणठ कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च  
विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि,  
उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण; भरुअ-  
च्छहि मुणिमुच्चय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अयरविदेहिं  
तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि, तीआणागय सपइअ

मला पहीणजर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसी-  
यतु ॥५॥ कित्थिय-पंदिय-महिया, जे ए लोणस्स उत्तमा  
सिद्धा, आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वर सुत्तम दिंतु ॥६॥  
चंदेसु निम्मन्थयरा, आइच्चेसु अदियं पयासयरा; सागर वर  
गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥ फिर,

इच्छामि स्वमासमणो ! वदिउं जायणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करं ? इच्छ  
( ऐसा कहकर वाया घूटना ऊँचा करके चैत्यवदन करना )  
चैत्यवंदन.

जगचितामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव  
जगसत्थवाह, जगभाव-विअक्खण, अट्ठावय-संठविय-रुव,  
कम्मठ-विणासण, चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहयसा-  
सण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहि पढम-सघयणी, उक्कोसय  
सत्तरिसय, जिणवराण निहरंत लब्भइ, नवक्कोडिहिं केउलीण.  
कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं  
कोडिहि वरनाण, समगह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च  
विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि,  
उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण; भरुअ-  
च्छहि मुणिमुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अपरविदेहि  
तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिकेवि, तीआणागय सपइअ



वंदुं जिण सव्वेवि ॥३॥ सत्ताणवड सहस्सा, लक्ख्खा छप्पन्न  
अट्ठ कोडीओ; वत्तीससय वासिआड, तिअलोए चेइए वंदे  
॥४॥ पनरसकोडि सयाइ, कोडि वायाल लक्ख्ख अडवन्ना;  
छत्तीस सहस असिइं, सासय विवाइं पणमामि ॥५॥

जंकिचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाइ  
जिण विवाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नद्धुत्थुण अरिहताणं भगवंताणं ॥१॥ आडगराण तित्थ-  
यराण, सयसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाण, पुरिस  
वर पुडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं,  
लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं  
॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं,  
बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म नायगाण,  
धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्ठीणं ॥६॥ अप्प-  
डिहय-वग्गनाण-दसणधराण, विअट्ठ छउमाणं ॥७॥ जिणाणं  
जावयाणं, तिन्नाण तारयाणं, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताणं मोअ-  
गाण ॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण सिव-मयल-मरुअ-  
मणत-मक्खय मव्वाबाह मणुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेय  
ठाणं संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जे अ अईआ  
सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले, संपइ अ वट्ठमाणा,  
सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावति चेइआइ, उइडे अ अहे ल तिरिअ लोए अ;  
सव्वाइ ताइ वंदे, इह संतो तत्थ संताइ ॥१॥

( फिर खमासमण नीचे मुताविक देना )

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वदामि.

जावंत केवि साहू, भग्गेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसि  
तेसि पणओ, तिविहेण तिवंद विरपाणं ॥१॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर  
विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवास ॥१॥ विसहर फुलिगमतं,  
कठे धारेइ जो सया मणुओ; तस्स-गह रोग मारी, दुट्ठ जरा  
जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामोकि बहु-  
फलो होइ; नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं  
॥३॥ तुह सम्भत्ते लद्धे, चितामणि-कप्पपाय-वव्वमहिए;  
पावंति अविग्घेणं, जीया अयरामरं ठाण ॥४॥ इअ मथुओ  
महायस ! भत्तिम्मए-निम्मरेण हिअरुण, ता दे। दिज्ज  
बोहि, भवे भवे पास जिगचंद ॥५॥

( फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर )

जय वीयराय ? जगगुरु, होउ मम तुइ पमाओ भयवं;  
भग्निव्वेओ मग्गाणुत्तारिआ इड्डफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्ध-  
च्चाओ, गुरुजगगूआ परत्थरुग च; सुहगुरुजोगो तव्वयण  
सेवणा आभवमखडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण, वधणं  
यराय ! तुह समय; तह मि मम हुज्ज सेगा, भवे भवे तुम्ह

चलणाण ॥३॥ दुवखवखओ, कम्मवखओ, समाहिमरण च  
 वोढिलामो अः सपज्जउ मत्थ एअं, तुत्त नात्त पणाम करणेण  
 ॥४॥ सर्व मंगल मागल्यं, सर्व कल्याण कारणम्, प्रधानं सर्व  
 धर्माणां, जैन जयति शासनम् ॥५॥

( यहा एक एक समासमण देकर भगवानह इत्यादि एक  
 एक पद कहना चाहिये यह नीचे मुताबिक बोलना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि, 'भगवानहं' इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं  
 जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'आचार्यहं'  
 इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि, 'उपाध्यायहं' इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं  
 जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'सर्वसाधुहं.'

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि ।

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय सदिसाहुं ?'  
 इच्छं, इच्छामि खमासमणो ? वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वंदामि;

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ?' इच्छं.

( ऐसा कहकर एक नववार गिनना, फिर भरहेसरकी  
 सज्झाय कहनी वह नीचे मुजब )

सज्झाय.

भरहेसर बाहुवली, अभयकुमारो अ उंढण कुमारो;  
 सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥ मेअज्ज

धूलिमहो, वयगरिनी नंदिसेण सीहगिरीः कयवन्नो अ मुक्तो-  
सल, पुडरीओ केसि करुइ ॥२॥ दल्ल विहल्ल मुदंनण, नाल  
महासाल सालिमहो अ, भदो दसन्नमहो, पन्नन्नचंदो अ  
जसमहो ॥३॥ जवुपह वरुचलो, जयमुकुमालो अवंतिसुकु-  
मालो; वन्नो इलाडपुत्तो, चिल्लाडपुत्तो अ वाहमुणी ॥४॥ अज्ज  
गिरिअज्ज-रक्सिअ, अज्जसुहत्ती उढादगो मणगो; काल-  
यद्धरी संगो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥५॥ पमवो पिण्हुकुमारो,  
अहकुमारो दढप्पहारी अ; सिज्जंस कूग्गइ अ, सिज्जंभव  
मेहकुमारो अ ॥६॥ एमाइ महासत्ता, दित्त सुह गुणगणेहि  
संजुत्ता; जेसि नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥७॥ सुलसा-  
चंदनवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती; नमया सुंदरी सीया,  
नंदाभदा सुभदा य ॥८॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा  
सिरीदेवी; जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पमावई चिल्लणादेयी ॥९॥  
वंभी मुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती सिवा जयंती य; देवई दोवई  
धारणी, कलावई पुप्फच्लाय ॥१०॥ पउमावई य गोरी, गधार  
लक्खमणा सुसीमा य; जबूवई सच्चमामा, रुपिणी कण्हट्ठ  
महिसीओ ॥११॥ जक्खा य जक्खादिन्ना, भूआ तह चेत्र  
भूअदिन्ना य; सेणावेणा रेणा, भयणीओ धूलिमहस्स ॥१२॥  
इच्चाड महासईओ, जयंति अकलंक सील कलिआओ; अज्जावे  
वज्जइ जासि, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,  
नमो उवज्जायाण, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमु—

क्कारो सव्व पावप्पणासणो, मगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवड मंगलं ॥

इच्छकार सुहराड, सुसुतप, शरीर निरावाधः सुसुसंज-  
मजात्रा निर्वहो ओजीः स्वामी जाता छे जी ?

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ? राड पडिक्कमणे ठाउं  
इच्छ.

सव्वस्सवि राडअ दुच्चित्तिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,  
मिच्छामि दुक्कडं

नमुत्तुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥ आइगराण, तित्थ-  
यराण, रायंसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरि-  
सवरपुंडरीआण, पुरिसवरगघट्ठयीण ॥३॥ लोनुत्तमाणं, लोग-  
नाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥  
अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिद-  
याण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्म-देसयाण धम्म-नायगाण,  
धम्म-सारहीण, धम्मवरचाउरंत, चक्कवट्ठीण ॥६॥ अप्पडित्थ-  
वरनाण-दंसणं-धराण विअट्ठ-छउमाण ॥७॥ जिणाण जाव-  
याण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाणं, सुत्ताण, मोअगाणं  
॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणत  
मवखय-मव्वावाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ -नामधेयं-ठाण  
संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा,  
जेअ भविस्संति णागए काले; सपइ अ वट्ठमाणा, सव्वे  
प्रतिविहेण वंदामि ॥१०॥

करेमि भंते । सामाडयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव  
नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण, मणेणं, वायाए,  
काएण, न करेमि, न कारवेभि तस्स भंते ! पडिक्कमामि,  
निद्रामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ( फिर )

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ अइआरो, कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अक्कप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचित्तिओ, अणायारो, अणि-  
च्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,  
सुए, सामाइए, तिण्ह गुत्तीण, चउण्हं कसायाण, पंचण्ह मणु-  
व्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्हं सिक्खावयाण, वारसवि-  
हस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि  
दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेण, पायच्छित्त करणेण, विसोही  
करणेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माण, निग्घा-  
यणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएण, निरासिएण खासिएण, छीएण,  
जंभाइएण उइडुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेळसंचालेहिं, सुहु-  
मेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो-  
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भग-  
वंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण  
आणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

क्कारो सव्व पाप्पणासणो, मग्गणां च सव्वेसि, पढमं  
हवड मगलं ॥

इच्छकार सुत्तराड, सुसतप, शरीर निराबाध. सुससज-  
मजात्रा निर्वहो ओजीः स्वामी गाता छे जी ?

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ? राड पडिक्कमणे ठाड  
इच्छ.

सव्वस्सवि राडअ दुच्चित्तिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,  
मिच्छामि दुक्कडं

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥ आइगराण, तित्थ-  
यराण. रायसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरि-  
सवरपुंडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण ॥३॥ लोनुत्तमाण, लोग-  
नाहाण, लोगहिआण, लोगपट्टाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥  
अभयदयाण, चक्खुदयाण. मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिद-  
याण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्म-देसयाण धम्म-नायगाण,  
धम्म-सारहीण, धम्मवरचाउरंत, चक्कवट्ठीण ॥६॥ अप्पडिह्य-  
वरनाण-दंसणं-धराण विअट्ठ-छउमाण ॥७॥ जिणाण जाव-  
याण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताण, मोअगाणं  
॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणत्त  
मवखय-मव्वावाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ -नामधेयं-ठाण  
संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा,  
जेअ भविस्संति णागए काले; संपड अ वट्टमाणा, सव्वे  
प्रतिविहेण वंदामि ॥१०॥

करेमि भंते । सामाडयं, सावज्जं जोगं पञ्चकुसामि, जाव  
नियम पञ्जुवासामि, दुव्विह ति विहेण, मणेण, वायाए,  
काएणं, न करेमि, न कारवेभि तस्स भंते ! पडिक्कमामि,  
निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ( फिर )

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राडओ अडआरो, कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अरुप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणि-  
च्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,  
सुए, सामाडए, तिण्ह गुत्तीण, चउण्ह कसायाण, पंचण्ह मणु-  
व्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्हं सिक्खावयाण, वारसवि-  
हस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि  
दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेण, पायच्छित्त करणेण, विसोही  
करणेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माण, निग्धा-  
यणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएण, निरासिएण खासिएण, छीएण,  
जंभाडएण उइडुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तपुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहु-  
मेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाडएहिं आगारेहि, अभग्गो  
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भग  
वंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण  
आणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥



( फिर एक लोगस्स 'चदेसु निम्मल्यरा' तक या चार नव-  
कारका काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे  
मुताबक हे । )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे,  
संभव मभिणदणं च सुमट् च; पउमप्पहं सुपासं, जिण च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुप्पिहिं च पुप्फदत्तं, सीअल सिज्जंस  
वामुपुज्ज च; विमल मणत्तं च जिण, धम्म संति च वंदामि  
॥३॥ कुंतुं अर च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिण च;  
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभि-  
थुआ, विहुय रयसला पहीण जर मरणाः चउवीसंपि जिण-  
वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥४॥ कित्थिय वदिय महिया,  
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोहिलामं, समाहिवर-  
मुत्तमं दितु ॥६॥ चदेसु निम्मल्यरा, आइस्सेसु अहियं पयास  
यरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धासिद्धि मम दिसंतु ॥७॥ (फिर)

सव्वलोए अरिन्त चेइआण, करेमि काउस्सग्ग ॥१॥  
वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण-  
वत्तिआए, वोहिलाम वत्तिआए, निरुपसग्ग वत्तिआए ॥२॥  
सद्धाए, मेहाए, धोइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वद्धमाणीए,  
ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिण्ण, नीससिण्णं, खासिण्ण, छीण्ण,  
जंभाइण्ण, उद्धुण्णं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए,

॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंवालेहि, सुहुमेहिं खेळसंवालेहिं, सुहु-  
मेहिं दिट्टिसंचालेहि ॥२॥ एउमाइएहि आगारेहि, अमग्गा  
अविराहिओ, हुज्ज ये काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहताण-  
भगवताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, द्वाणेण,  
मोणेणं, द्वाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

( फिर एक लोगस्सग 'चदेसु निम्मलपरा' तक या चार  
नवकार का काउस्सग करना । फिर पुस्खररदी वड्डे  
कहना । वह नोचे मुजव है । )

पुक्खर वरदीवड्डे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ ॥ भरहेर-  
चय विदेहे, धम्माइगरे नमंसांमि ॥१॥ तम तिमिर पडल  
विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद-महिअस्स; सीमा धरस्स वंदे,  
पप्फोडिअ मोह जालस्स ॥२॥ जाइ जरामरण सोग पणास-  
णस्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देव-  
दाणव नग्गिदणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवल्लभ करे पमाय  
॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नदी सया संजमे ॥  
देवं नागसुवन्न किन्नर गणसब्धुअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ  
पट्टिआ जगघिण तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्डड सासओ  
विजयओ धम्पुत्तरं वड्डड ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि  
काउस्सग्गं ॥ वदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्ति-  
आए, सम्माण वत्तिआए ॥ वोहिलाभवत्तिआए ॥ निखसग्ग  
वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए  
वड्डमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाडएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए  
 ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहु-  
 मेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवामाडएहि, आगारेहि, अभग्गो  
 अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं  
 भगवताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं,  
 मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( फिर अतिचार की आठ गाथा ' का काउस्सग करना,  
 यदि न आता हो तो आठ नवकार मन्त्र ही गिनना । काउ-  
 स्सगमे गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है )

नाणमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियमि ॥  
 आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काले  
 विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ  
 तदुभए ॥ अट्ठविहो नाण मायारो ॥२॥ निस्संक्रिय निक्कं-  
 खिअ ॥ निव्वित्तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववुह थिरीकरणे,  
 वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥३॥ एणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहि  
 समिडहि तिहि गुत्तीहि ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्ठविहो होइ  
 नायव्वो ॥४॥ वारसविहंभि वि तवे ॥ सब्भितर बाहिरे  
 कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो  
 ॥५॥ अणसण मूणोअरिआ ॥ वित्ती संखेवण रसच्चाओ;  
 कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं  
 विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; ज्ञाण उस्सग्गो वि  
 अ ॥ अब्भितरओ तवो होइ । ७॥ अणिगूहिअ वल वीरिओ

परक्रमड जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहा<sup>११</sup>थामं, नायव्वो  
वीरिआयारो ॥८॥

( काउत्सग्ग पारके सिद्धाण बुद्धाण कहना वह नीचे मुजव है )

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाणं ॥ लोअग्ग-  
मुव्वगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाण ॥ १ ॥ जो देवाण  
वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, त देवदेव—महिअं, सिरसा  
वदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर—वसहस्स  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥ ३ ॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाण निसीहिआ जस्स । त  
धम्मचक्कवट्ठिं; अरिट्टनेमि नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि—अट्ठ—दस  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ—निट्ठि—अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंनु ॥ ५ ॥

( फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहन काके दो  
वादणा देना, वह नीचे मुजव है )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसी-  
हिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि,  
अ—होका—यं का—य, संकासं खमणिज्जो मे किलामो, अप्प  
किलताणं, बहुसुभेण मे राई वडक्कंता ! ॥ ३ ॥ जत्ता मे ?  
॥ ४ ॥ ज—व—णिज्जं च मे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो,  
राडअं वडक्कम्मं ॥ ६ ॥ आपस्सिआए पडिक्कमामि, खमासम-  
णाण राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिचि

तिण्ह गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खयाव्वयाणं, वारसविहस्स सावगय-  
म्मरस, जं खंडिअं ज विराडिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सात लाख पृथ्वाकाय ॥ सात लाख अप्रकाय ॥ सात  
लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दण लाख प्रत्येक  
वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख सावारण वनस्पतिकाय ॥ वे  
लाख वेइद्रिय, वे लाख तेइद्रिय, वे लाख चउरिद्रिय ॥ चार  
लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेद्रिय ॥  
चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चौरासी लाख जीवायोनिमांहे,  
म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता  
प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायाए करी  
मिच्छामि दुक्कडं.

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृपावाद, त्रीजे भदत्तादान,  
चोथे मैथुन, पाचमे परिग्रह ॥ छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे  
आया, नवमे लोभ, ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह,  
तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य; पन्नरमे रति अरति, सोलमे  
परपरिवाद, सत्तरमे माया मृपावाद, अठारमे मिथ्यात्व शल्य,  
ए अठार पापस्थानक माहि म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्यु  
होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सर्वे  
मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि राइअ दुच्चित्तिअ दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥  
इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥३॥ ज  
 बद्ध मिदिएहि, चउहि कसाएहि अप्पसत्थेहि; रागेण व दोसेण  
 व, तं निदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे  
 चंक्रमणे अणाभोगे; अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअ  
 सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिगीसु ।  
 सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअ सव्व ॥६॥ छक्काय समा-  
 रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तद्वा य परद्वा, उभ-  
 यद्वा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं  
 च तिण्ह मइयारे; सिक्खाणं च चउण्ह, पडिक्कमे राइअ सव्वं  
 ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, धूलग-पाणाइवाय-विइओ; आय-  
 रिय मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥९॥ बह्वंधव्विच्छेए,  
 अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे  
 राइअं सव्वं ॥१०॥ वीए अणुव्वयंमि, परिधूलग-अलियव्वयण  
 विइओ । आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेण ॥११॥  
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । वीअ-वयस्स-  
 इआरे, पडिक्कमे राइअ सव्व ॥१२॥ तइए अणुव्वयमि, धूलग  
 परदव्व-हरण विइओ । आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण  
 ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिक्खे विरुद्ध गमणेअ । कूडतुल  
 कूडमाणे, पडिक्कमे राइअ सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणु-व्वयंमि,  
 निच्चं परदारगमण-विइओ; आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-  
 प्पसंगेण ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणगविवाह तिच्च-  
 अणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअ सव्वं ॥१६॥

इत्तो अणुव्वए पचमंमि, आयरियमपसत्थमि । परिमाण  
 पग्निच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१७॥ वण वन्न सित्त-  
 वत्थु, रूप सुप्पन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप-  
 यमि य, पडिक्कमे राइअ सव्व ॥१८॥ गयगरण उ परिमाणे,  
 दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअ च । बुद्धिह सडअं तरुआ, दममि  
 गुणव्वए निदे ॥१९॥ मज्जमिअ, मंसंमिअ, पुाफे अ फाले अ  
 गंधमल्ले आउवन्नोग परिभोगे, वीयंमि गुणव्वए निदे ॥२०॥  
 सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअ च आहारे । तुच्छोसहि-  
 भवखणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२१॥ इगाली-वण साडी,  
 भाडी फोडी सुवज्जए ममं । वाणिज्जं चैवय दं, लवय रस  
 वेस-दिसविसयं ॥२२॥ एव खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लच्छणं  
 च दददाण । सर-दह-तलाय-सोसं, असट्ठपोसं च वज्जिज्जा  
 ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल जंतग, तण कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।  
 दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअ सव्वं ॥२४॥ न्हाणु-व्व-  
 द्ढण-वन्नग, विलेवणे सह रुव-रस गंधे । वत्थासण आभरणे,  
 पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२५॥ कडप्पे कुवकुडए, मोहरि अहि-  
 गरण भोग अडरित्ते । दंडमि अणट्ठाए, तअंमि गुणव्वए  
 निदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ  
 विहूणे । सामाडअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निदे ॥२७॥  
 आणवणे पेसवणे, सहे रुवे अ पुगलक्खेवे । टेसावगासिअमि,  
 वीए सिक्खावए निदे ॥२८॥ संथारुच्चारविहि, पमाय तह  
 चेव भोयणाभोए । पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निदे

॥२९॥ सच्चित्ते निविखवणे, पिहिणे ववणम मच्छरे  
 चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे मिक्खवाए निदे ॥३०॥  
 सुहिण्णु अ दुहिण्णु अ, जा मे असजण्णु अणुक्कपा ।  
 रागेण व दोसेण व, तं निदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साह्म  
 संविनागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु । संते फासुअ-  
 दाणे, तं निदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलाए, परलोए,  
 जीविअ-भरणे अ आससपओगे । पंचविहो अड्यारो, मा  
 मज्झ हुज्ज सरणंते ॥३३॥ काएण काडअस्स, पडिक्कमे वाड-  
 अस्स वायाए । मणमा माणमिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स  
 ॥३४॥ वदण वयसिक्ख-गारवेसु, सन्ना कमायदटेसु । शुत्तीसु  
 ए समिड्ढसु अ, जो अट्ठारो अ तं निदे ॥३५॥ सरमदिट्ठी  
 जीवो, जडवि हु पावं समायरे किंचि । अप्पोमि होइ वंधो,  
 जेण न निदधं कुण्ड ॥३६॥ त पि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-  
 आवं सउत्तरगुणं च । खिण्णं उवत्तामेइ, वाहिं व सुमिखिअओ  
 विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्टगयं, मंतमूल विसारया । जिज्जा  
 हणंति संतेहि, तो त हवट्ठ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं,  
 राग दोस-समज्जिअं । आलोअतो अ निदंतो, खिण्णं हणइ  
 सुमावओ ॥३९॥ कयपावोपि, मणुस्सो, आलोइअ, निदिअ  
 गुरुसगासे । होइ अडरेग लहुओ ओहरिअ-भस्सव भारवहो  
 ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ।  
 दुक्खानमतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा  
 बहुविहा, न य सभरिआ पडिक्कमण-काले । मूलगुण-उत्तर



गुणे. त निदे त च गरिहामि ॥४२॥ तस्य यम्मस्य केयन्दी-  
यन्नत्तस्स ॥

( यहा से दाहिना गोडा न चे राखकर बोल्ना )

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विगहणाए ।  
तिविहेण पडिक्कतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति  
चेइआड, उइडे अ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाड ताडं वंदे,  
इह सतो तत्थ संताडं ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहा-  
विदेहे अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं  
॥४५॥ चिर संचिय पावपणासणीड, भवसय सहस्स महणीए ।  
चउवीस-जिण-किणिग्गय-कहाडं, वोल्तु मे दिअहा ॥४६॥  
मम मगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअ च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी  
देवा दितु समाहि च वेहि च ॥४७॥ पडिसिद्धाण करणे,  
किच्चाणमकरणे पडिक्कमण । असइहणे अ तहा, विवरीय पस्-  
वणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ।  
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥४९॥ एदमह-  
आलोडअ, निदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडि-  
क्कतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

( फिर दो बार वादगा नीचे मुताविक देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अ हो का-यं,  
काय संफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलताणं बहुमुभेण

भे राई वड्कंता ? ॥३॥ ज-त्ता भे ? ॥४॥ ज व-णिज्जं च भे ?  
॥५॥ खामेमि खमासमणो ! राइअं वड्कम्मं ॥६॥ आवस्सि-  
आए, पडिक्कमामि, खमासमणणं राइआए, आसायणाए,  
तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्क-  
डाए, काय दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए,  
सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,  
आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो !  
पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि  
आए ॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गह, ॥२॥ निसीहि, अहो-  
कार्यं-काय संफास, खमणिज्जो भे किलामौ, अप्पकिलं-  
ताण बहुसुभेण भे ! राई वड्कंता, ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥  
जवणिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअ वड्कम्मं  
॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणणं राइआए आसायणाए, तित्ती-  
सन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए,  
कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए,  
सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,  
आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो  
पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुद्धिओमि अट्ठिभतर  
राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअ.

(पीछे जीमणा हाथ जमीनपर रखके)

जं किंचि अपत्तिअ, परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए.  
वेआवच्चे, आलावे, संलावे. उच्चासणे, समासणे. अंतरभा-  
साए, उवरिभासाए, जहिचि मज्झ विणय-परिहीणं, मुहुम  
वा वायरं वा. तुब्भे जाणह अत्त न जाणामि तस्स मिच्छामि  
दुक्कड ॥

( फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणहः मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अ-हो.  
काय, कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं  
बहुमुभेण भे, राई वडक्कता ? ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥ ज-  
वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमारामणो ! राडअं वडक्कम्मं  
॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण राडआए,  
आसायणाए, तिच्चीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मण-  
दुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, लोहाए, माणाए,  
मायाए. लोभाए सब्बकालिआए, सब्बमिच्छोवयाराए.  
सब्बधम्माट्ठकमणाए, आसायणाए, जो मे अडआरो कओ  
तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, अप्पाणं  
वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो काय  
काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताण  
बहुमुभेण भे राई वडक्कता ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥

णिज्जं च मे ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअं वडक्कम्मं ॥६॥  
पडिक्कमामि खमासमणार्णं राइआए आसायणाए तित्तीसन्न-  
यराए जंकिचि मिन्हाए, मग्गदुक्काडाए, मग्गदुक्काडाए, माय-  
दुक्काडाए, बोहाए, माणाए, मायाए, तोशाए, मव्वकाळि-  
आए, सव्वमिन्छोय्याराए, सव्वधम्मोडक्कमणाए, आसा-  
यणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि,  
निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

आयरिय उव्वज्झाए, सीसे साहम्मिए कुळणणे अ; जे-  
मे वंड कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स-  
समणसंघरत्त, मग्गदओ अजाल दरीअ सीसे । सव्वंस्समावडत्ता,  
समामि सव्वरत्त अहयपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरामिस्स,  
भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो । सव्वं स्समावत्ता, समामि  
सव्वस्स अहयपि ॥३॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए,  
काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते, ! पडिक्कमामि  
निदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ, अइआरो, कओ.  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्सग्गो, अक्कप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचित्तिओ, अणायारो, अणिच्छि-  
अव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामा-  
इए, तिण्हगुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं-

गुणव्यापण, चउण्ह मिस्सावयाणं, वारमविहम्मस मावगय-  
म्मस्त, जं सडिअं, जं विराहिअं, तस्म मिच्छामि दुक्कड ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेण,  
विसल्लीकरणेणं, पावाण कम्माण निग्वायणट्ठाए ठामि  
काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, सासिएण, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि,  
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एममाइएहि आगारेहि,  
अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव  
अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव  
कायं ठाणेणं, मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(अहा पर तप चित्तन का काउस्सग्ग करना, यदि न आता  
हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर काउस्सग्ग पारके प्रकट लोग-  
स्स कहना, वह नीचे सुताविक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वंदे, संम-  
वमभिणंदणं च सुमइ च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-  
प्पह वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं  
च । विमलमणंत च जिण, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु  
अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठ-

यरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-  
यरा मे पसीयतु ॥४॥ कित्थिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स-  
उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग वोहिलामं, समाहिवरमुत्तम दित्तु ॥५॥  
चंदेसु निम्मलयरा, आडच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवर-  
गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

(फिर छट्ठे आवश्यक को मुद्रपत्ति पडिलेहन कर के दो  
वादना देना वह नीचे मुजब है । )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए-  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं-  
काय संफास खमाणज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहु-  
सुभेण भे राई वइक्कंता ! ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्ज-  
च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राडअ वइक्कम्मं ॥६॥  
आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राड्आए आसा-  
यणाए, तित्थीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए,  
वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए,  
लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-  
इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स-  
खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं-  
वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो-  
कायं काय संफास खमाणज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं,  
बहुसुभेण भे राई वइक्कता ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं-

गुणव्ययाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, वारमपिहस्स मावगव-  
म्मरस, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेण,  
विसल्लीकरणेणं, पायाण कम्माण निग्वायणट्ठाए ठामि  
काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएण, छीएणं,  
जंभाडएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि,  
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एमाइएहि आगारेहि,  
अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव  
अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव  
कायं ठाणेणं, मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(अहा पर तप चित्तन का काउस्सग्ग करना, यदि न आता  
हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर काउस्सग्ग पारके प्रकट लोग-  
स्म कहना, वह नीचे मुताविक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
क्वित्तडस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वंदे, संभ-  
वमभिणंदण च सुमइ च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-  
प्पह वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं  
च । विमलमणंत च जिण, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु  
अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठ-  
नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभियुआ, विहु-

यरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-  
यरा मे पसीयतु ॥४॥ किच्चिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स-  
उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलामं, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥५॥  
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवर-  
गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

(फिर छद्दे आवश्यक को मुहपत्ति पडिलेहन कर के दो  
वादणा देना वह नीचे मुजब है । )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए-  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं-  
काय संफास खमाणज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहु  
सुभेण मे राई वइक्कंता ! ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥ जवणिज्ज-  
च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअ वइक्कम्मं ॥६॥  
आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसा-  
यणाए, तिच्चीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए,  
वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए,  
लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-  
इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स-  
खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं-  
वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो-  
काय काय संफास खमाणज्जो मे किलामो अप्पकिलताणं,  
बहुसुभेण मे राई वइक्कता ॥३॥ जत्ता मे ॥४॥ जवणिज्जं-



भाख ॥७॥ एकसो एंशी विव प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या  
जाण । तेरसे क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड  
॥८॥ वत्रीसे ने ओगणसाठ, तीछीळोळमा चैत्यनो पाठ ।  
त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते विव जुहार ॥९॥  
व्यतर ज्योतिषिमा वली जेह, जाश्वता जिन वंदु तेह । ऋषभ  
चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥ समेत-  
शिखर वंदु जिन वीश, अष्टापद वंदु चोवीश । विमलाचल ने  
गढ गिरनार, आवु उपर जिनवर जुहार ॥११॥ शखे-  
श्वर केसरिओ सार, तारंगे श्री अजित जुहार । अंतरिक  
वरकाणो पास, जीरावलो ने यमण पास ॥१२॥ गाम  
नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान  
वंदुं जिन वीश, रिद्ध अनंत नमु निश दिश ॥१३॥ अढी  
द्वीपमा जे अणगार, अढार सहस शीलागना धार । पंच-  
महाव्रत समिति सार, पाळे पळावे पचाचार ॥१४॥ बाह्य-  
अभ्यंतर तप उजमाळ, ते मुनि वंदुं गुण मणिमाळ । नित  
नित उठी कीर्ति करुं, जीव कहे भवसायर तरुं ॥१५॥  
( फिर जो पंचचक्खाण धारना हो वो यहा पर धार लेना । )

**नमुक्कार सहिअं मुट्टिसहिअं का पच्चक्खाण**

उगए सरे नमुक्कारसहिअ मुट्टिसहिअ पच्चक्खाइ ।  
चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-  
भोगेणं, सस्सागारेणं, महत्तरागारेणं, सब्बसमाहिच्चियागा-

रेणं वोसिरड ।

## पोरिसि सोद्धपोरिसि का पच्चक्खाण

उग्गए सूरें नमुक्कारसहिअ पोरिसिं साद्धपोरिसि मुट्ठि-  
सहिअ पच्चक्खाड उग्गए सूरें चउव्विहपि अ हारं असणं, पाणं,  
खाडमं, साटम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, पच्चउन्नका-  
लेण, दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि-  
वत्तिआगारेण वोसिरड ।

सामायिक, चउव्विसत्थो, वादणा, पडिक्कमणु, काउ-  
स्सग्ग, पच्चक्खाण किया हे जी (किया हो तो किया है, धारा  
हो तो धारा है, ऐसा कहना और नोकारसि पोरिसि उपरात  
पच्चक्खाण करना हो तो भी यहा पर धार लेना ।)

( पुरुष इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं  
नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ऐसा कहके विशाल  
लोचन कहे ।

विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंताशुकेसर; प्रातर्वीरजिनैद्रस्य,  
मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षं  
भरात् सुखं सुरेन्द्राः । तृणमपि गणयन्ति नैव नार्कं, प्रातः सतु  
शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्क-  
राहुग्रसनं सदोदयं, अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं, दिनागमे नौमि-  
बुधैर्नमस्कृतं ॥३॥

खुद पच्चक्खाण करने वाला 'वोसिरामि' ऐसा कहे ।

( फिर स्त्रीओ प्रतिक्रमण करती हो तो यहा पर ससारदावा कहे वह नोचे मुजब है. )

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं, माया-  
रसादारणसारसीर, नमाम वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावा-  
वनाम सुरदानव मानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि,  
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज  
पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभि-  
रामं, जीवार्हिसाविरललहरी संगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरु-  
गममगिसंकुलं दूरपार, सार वीरागमजलनिधि सादरं  
साधु सेवे ॥ ३ ॥

( फिर निचे सुताविक नमुत्थुणं कहना )

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थ-  
यराणं, सयं संबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरससीहाणं,  
पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिरावर गध हत्थीणं ॥३॥ लोगुत्त-  
माणं, लोगनाहाणं लोगहिआण, लोगपईआणं, लोगपज्जो-  
अगराणं ॥४॥ अमयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-  
दयाण, बोहिदयाणं, ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म  
नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्खट्ठीणं ॥६॥  
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं; विअट्ट छउमाण ॥७॥  
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाण,  
मुत्ताणं मोहयाणं ॥८॥ सब्वन्नूण सब्वदरिसीणं, सिव-

मयल-मरुअ-मगत- मक्सय मव्वावाट मपुणरात्रिचि सिद्धि-  
गइ-नामयेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिगाण जियभयाण ॥९॥  
जे अ अईआ मिद्धा, जे अ मयिस्मंति णागए काले, संपइ अ  
वइमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

अरिहतचेडभाणं करेमि काउस्सग्ग वदणवत्तिआए पूअणव-  
त्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिलाभयत्तिआए  
निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुपेहाए  
वइदमाणीए ठामि काउस्सग्ग

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जभाइएणं, उइडुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंग सचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहु-  
मेहि द्विदिसचालेहि, ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहताण भग-  
वताण नसुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेणं  
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धा-  
चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहना, वह  
नीचे मुताबिक है.)

कल्लाणकंदं पढम जिणिदं, संति तओ नेमिजिणं मुणीदं ।  
पासं पयासं सुगुणिककठाणं,, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्त-  
इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिअं च वदे, संभव-  
मभिणंदणं च सुमइ च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे  
॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जेस वान्नुपुज्जे च;  
विमलमणंतं च जिण, धम्म संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च  
मल्लि, वंदे सुणिसुव्वय नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं  
त्तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला  
पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणयरा, तित्थयरा मे पसीयंतु  
॥५॥ कित्थिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;  
आरुग्ग वोहिलामं, समाहि वर मुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्म-  
लयरा, आइच्चेसु अहिर्य पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए  
पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिला-  
भवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अग संचालेहि, सुहुमेहिं खेल संचालेहि; सुहु-  
मेहिं दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो  
अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवं-

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइइएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं;  
सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि, आगारेहिं, अभग्गो  
अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाअरिहताणं भगवं-  
त्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं,  
आणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

( फिर एक नवकार का काउस्सग्ग, करना काउस्सग्ग पारके  
एक स्तुति करनी वह नोचे मुत्तव है )

निव्व्राणमग्गे वरजाणकप्प, पणासियासेसकुवाइदप्पं ।  
भयं जिणाण सरणं बुद्धानं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परपरगयाणं ॥ लोअग्ग-  
मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि  
देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वदे  
महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमा-  
णस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्खट्ठिं, अरिहनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ-दस-  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं

ताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( एक नववार का काउस्सग्ग करके नमो अरिहताण बोल  
कर पारना. फिर स्तुति करनी वह नीचे मुजब है )

अपार ससार समुदपार, पत्ता सिवं दितु सुइक्कसारं ।  
सव्वे जिणिंदा सुरविदवदा, कल्लाण वल्लीण विसाल-  
कदा ॥२॥

पुक्खर वरदीवड्ढे, धायई संडे अ जंबुदीवे अ ॥ भर-  
हेरवय विदेहे, धम्माङ्गरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर पडल  
विद्धं-सणस्स, सुरगण नरिंद महिअस्स; सीमा धरस्स वंदे,  
पप्फोडिअ मोह जालस्स ॥२॥ जाइ जरामरण सोग पणास्सण  
स्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव  
नरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवलब्ध करे पमाय ॥३॥  
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नदी सया सजमे ॥ देवं नाग-  
सुवन्न किन्नर गणसब्भुअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पण्डित्थो  
जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ  
धम्मउत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्ग ॥  
वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्तिआए, सम्माण  
वत्तिआए ॥ वोहिलाभवत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥  
सद्धाए मेहाए धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठाम्मि  
काउस्सग्ग ॥५॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि;  
सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि, आगारेहि, अभग्गो  
अधिराहिओ; हुज्ज मेकाउस्सग्गो ॥३॥ जाअरिहताणं भगवं-  
त्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं,  
झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

( फिर एक नवकार का काउस्सग्ग, करना काउस्सग्ग पारके  
एक स्तुति करनी वह नोचे मुजब है )

निव्व्राणमग्गे वरजाणरूप, पणासियासेसकुवाइदप्यं ।  
मयं जिणाणं सरणं बुद्धाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परपरगयाणं ॥ लोअग्ग-  
सुवग्गयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि  
देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे  
महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमा-  
णस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्खट्ठिं, अरिट्ठनेमि नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ-दस-  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
रसिद्धि मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं



करेमि काउस्सगं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहु-  
मेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो  
अविराहिओहुज्ज मेकाउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भग-  
वंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव काय ठाणेणं मोणेणं  
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( एक नवकारका काउस्सग करके पारके नमोऽर्हत् सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति करनी वह नीचे मुजब है )

कुदिदु गोक्खीर तुसार वन्ना, सरोजहत्था कमले नि-  
सन्ना । वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सय  
पसत्था ॥४॥

( फिर नमुत्थुण कहना )

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥ आइगराणं, तित्थ-  
यराणं, सयंसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं, पुरिसवर  
पुंडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण । ३। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं,  
लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाण,  
चक्खुदयाण, मग्गदयाण सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्म-  
दयाण, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाण, धम्मसारहीणं धम्म-  
वरचाउरत चक्खट्ठीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराण.

विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं,  
बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताण मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं,  
सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ सणंत मक्खय-सव्वावाट-  
मपुणरावित्ति-सद्धिगइ-नामवेयं ठाणं सपत्ताण, नमो  
जिणाणं, जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ  
भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण  
वंदामि ॥१०॥

( यहा पर चार वखत एक एक खमासमण देकर दरेकके  
अन्त मे नीचे मुताबिक भगवानह आदि कहना )

भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुह.

(किर)

अइढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिष्ठ, जावंत  
केवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा  
अट्ठारससहससीलांगधारा अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥१॥

श्री सीमंधर स्वामीका दुहा.

अनंत चौवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड;  
केवलनाणी धिविर सवि, वंदुं वे कर जोड. ॥१॥  
वे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश;  
सहस कोडी युगल नष्ट, साधु सरव निशदिश. ॥२॥

जे चारित्रे निर्मला, ते पंचानन सिंहः  
 विषय कषायने गंजीया, ते प्रणमु निगदिग, ॥३॥  
 राक तणीपरे रडवडयो, निरधणीयो निरधारः  
 श्री सीमंधर साहिवा, तुम विण इणे संसार. ॥३॥

( फिर एक खमासमण देकर इच्छाकारेण सदिसह भगवन्  
 श्री सीमंधरस्वामी आराधनार्थ चैत्यवदन करू 'इच्छ' कहके )

### श्री सीमंधर स्वामीका चैत्यवंदन.

श्रीसीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमेउपगारी । श्री श्रेयास  
 पिता कुले, बहु गोभा तुमारी ॥ १ ॥ धन्य धन्य माता  
 सत्यकी, जेणे जाया जयकारी । वृषभलछने विराजमान,  
 वंदे नरनारी ॥२॥ धनुष पाचशे देहडीए, सोहिये सोवन  
 वान । कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥३॥

जंकिचि नाम तित्थं, सग्ले पायालि माणुसे लोए; जाडं  
 जिण विवाडं, ताडं सव्वाइ वंदामि ॥१॥

नमुत्पुण अरिहंताण भगवंताण ॥ १ ॥ अङ्गण,  
 तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिमसी-  
 हाण, पुरिसवरपुडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥  
 लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिआणं, ॥ लोगपईवाण,  
 लोगपज्जोअगराण, ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण,  
 मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण,  
 धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण ॥ धम्मसारहीण, धम्मवर-

चाउरतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दसण-  
धराणं, विअट्टुउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाणं  
तारयाण ॥ बुद्धाण वोइयाण, मुत्ताण मोअणाण ॥ ८ ॥  
सव्वन्नूणंसव्वदरिसीण, मित्रमयलमरुअमणतमक्खयमव्वावा-  
हमपुणरावित्ति, सिद्धगइनामवेयं, ठाण संपत्ताण, नमो  
जिणाण जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ  
भविस्संति णागए काले ॥ सपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण  
चंदामि. ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उइढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ;  
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि खमासमगो वंदितुं जाअणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वदामि.

जावत केवि साहु, भरहेखय महाविदेहे अ; सव्वेसि  
त्तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

( ऐसा कहकर स्तवन करना )

**श्री सीमंधर स्वामीका स्तवन**

पुक्खलई विजये जयोरे, नयरी पुंडरीगिगी सार ।  
श्रीसीमंधर साहिबारे, राय असांस कुमार ॥

जिणदराय धरजो धर्म सनेह । ए आंरुणी ॥ १ ॥  
 म्होटा न्हाणा अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ।  
 शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत । जि०ध० ॥२॥  
 ठाम कुठाम नवि लेखवेरे, जग वरसंत जलधार ।  
 कर दोय कुसुमे वासियेरे, छाया सवि आधार । जि०ध० ॥३॥  
 राय ने रंक सरीखा गणेरे, उद्योते शशि सूर ।  
 गंगाजल ते बिहुं तणारे, ताप करे सवि दूर । जि०ध० ॥४॥  
 सरिखा सहुने तारवारे, तिम तुमे छो महाराज ।  
 मुजशुं अंतर किम करोरे, बाह्य ग्रह्यानी लाज । जि०ध० ॥५॥  
 मुख देखी टीळुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ।  
 मुजरो माने सवि तणोरे, साहिव तेह सुजाण । जि०ध० ॥६॥  
 वृषभलंछन माता सत्यकीरे, नंदन रुकमिणीकंत ।  
 वाचक जस एम विनवेरे, भयभंजन भगवत । जि०ध० ॥७॥

( फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर )

जय वीयराय जगगुरु, होउ मम तुह पभावओ भयवं ।  
 भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-  
 विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो  
 तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआ-  
 णवंधणं वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे  
 तुम्ह चलणाण ॥ ३ ॥ दुक्खवखओ कम्मवखओ, समाहि  
 मरणं च बोहिलाओ अ । संपज्जउ मह एअ, तुह ना

पणामकरणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमागल्यं, सर्वकल्याणकारणं ।  
प्रधान सर्वधर्माणां, जैन जयति शासनम् ॥

अरिहतचेड्आणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए,  
पूअणवत्तिआए सक्कतारवत्तिआए सम्माणणत्तिआए वोहि-  
लाभवत्तिआए निरुयसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं, ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचाळेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं  
भगवंताण नमुवकारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं,  
मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(यहा पर एक नवकारका काउस्सग्ग करके फिर  
नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसवसाधुभ्यः कहकर एक स्तुति  
करनी, वह नीचे मुजब है

**श्री सीमंधर स्वामीकी स्तुति.**

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिव देव ।  
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करु सेव ॥  
सकलागम पारग, गणधरभापित वाणी ।  
जयवती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥१॥

## श्री सिद्धाचलजीका दुहा

सिद्धाचल समरु सदा, सोरठदेश मोझार ।  
मनुष्य जन्म पामी करी, बंदू वार हजार ॥१॥

एकेकु डगलुं भरे, शेनु जा साहमु जेह ।  
रिषभ कहे भवकोडना, कर्म खपावे तेह ।  
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्ध अनंती कोड ।  
ज्या मुनिवर मुक्ते गया, बंदू बे कर जोड ॥२॥

शेनु जा समो तीरथ नहीं, रुषभ समो नहि देव ।  
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वदू तेह ॥४॥

सोरठ देशमा संचर्यो, न चडयो गढ गिरनार ।  
शेनु जी नही नाह्यो नहीं, एळे गयो अवतार ॥५॥

इच्छामि खुमासमणो ! वदिउं जागणिज्जाए निसीहिआए  
अत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि महान् तीर्थ  
आराधनार्थं चैत्यवंदनं कुरु “इच्छं” ॥

## श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन.

श्रीशत्रु जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।  
भव धरीने जे चडे, तेने भवपार उतारे ॥१॥  
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।

पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥

सूरजकुण्ड सोहामणो, कवड यक्ष अभिराम ।

नाभिराया कुलमडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाई  
जिणविवाइ, ताईं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताण भगवंताण ॥१॥ आइगराणं तित्थ—  
यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,  
पुरिसवर पु डरीआणं, पुरिसवरगघहत्थीणं ॥ ३॥ लोगुत्तमाणं,  
लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोहगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं  
॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं  
बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनाय—  
गाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥  
अप्पडिहय वरनाणदंसणधराणं, वियट्ठउमाणं ॥ ७ ॥  
जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाण,  
मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं,  
सिवमयलमरुअमणंतमवखयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइना-  
मधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे  
अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणाए काले; संपइ अ  
वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावति चेइआइं, उइहे अ अहे अ तिरिय लोए अ ।  
सव्वाइ ताईं वदे, इह सतो सताइ ॥-१ ॥



## श्री सिद्धाचलजीका दुहा

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठदेश मोझार ।  
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदू वार हजार ॥१॥

एकेकु डगलुं भरे, शेत्रु जा साहमु जेह ।  
रिषभ कहे भवकोडना, कर्म खपावे तेह ।  
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्ध अनंती कोड ।  
ज्या मुनिवर मुक्ते गया, वंदू बे कर जोड ॥२॥

शेत्रु जा समो तीरथ नहीं, रुपभ समो नहि देव ।  
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वदू तेह ॥४॥

सोरठ देशमा संचर्यो, न चडयो गढ गिरनार ।  
शेत्रु जी नदी नाह्यो नहीं, एळे गयो अवतार ॥५॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं. जाणिज्जाए निसीहिआए  
अत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि महान् तीर्थ  
आराधनार्थं चैत्यवंदनं कुरु “इच्छं” ॥

## श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन.

श्रीशत्रु जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।  
भव धरीने जे चडे, तेने भवपार उतारे ॥१॥  
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।

पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥

सूरजकुण्ड सोहामणो, कवड यक्ष अभिराम ।

नाभिराया कुलमडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाई  
जिणविंशइ, ताई सव्वाइ वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताण भगवंताण ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थ—  
यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,  
पुरिसवर पु डरीआणं, पुरिसवरगधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं,  
लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं  
॥ ४ ॥ अमयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं  
बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनाय—  
गाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥  
अप्पडिहय वरनाणदंसणधराणं, वियट्ठउमाणं ॥ ७ ॥  
जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाण,  
मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं,  
सिवमयलमरुअमणंतमवखयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइना-  
मधेय ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाण, जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे  
अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले; संपइ अ  
वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावति चेइआइं, उइढे अ अहे अ तिरिय लोए अ ।  
सव्वाड ताई वदे, इह सतो संताइ ॥-१ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वडिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि.

जावत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं  
त्तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाण ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(ऐसा कहकर स्तवन कहना)

## श्री सिद्धाचलजीका स्तवन.

विमलाचल निनु वंदिये, कीजे एहनी सेवा ।

मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा । विमला० ॥१॥

उज्ज्वल जिनगृह मंडली, तिहा दीपे उत्तगा ।

मानु हिमगिरि विश्रमे, आइ अंवर गंगा । विमला० ॥२॥

कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले ।

एम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमवर बोले । विमला० ॥३॥

जे सवळा तीरथ कर्या, यात्रा फल कहिए ।

तेहथी ए गिरि भेटता, शतगणु फल लहिए । विमला० ॥४॥

जनम सफल होय तेहनो, जेह ए गिरि वंदे ।

सुजशविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे । विमला० ॥५॥

( फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर )

जय वीरराय ! जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं;  
अव निव्वेओ मग्गाणु-सारिआ इट्ठ फलसिद्धी ॥१॥ लोगविरूढ

च्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थ करण च; सुहगुरुजोगो तव्वयण,-  
सेवणा अभवमंखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण, बंधणं  
वीयराय ! तुह समए, तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह  
चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहि मरणं च  
वोहिलाओ अ; संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेण  
॥४॥ सर्व मंगल मागल्यं, सर्व कल्याण कारणम्; प्रधानं सर्व  
धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंत चेडआण करेमि काउस्सगं, ॥१॥ वंदणवत्तिआए  
पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिलाभ-  
वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेढाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वइढमाणीए ठामि काउस्सगं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएण ऊइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमन्नीए, पित्तमुच्छाए,  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसवालेहिं, सुहुमेहि खेरुसंवालेहिं, सुहु-  
मेहिं दिट्ठिसंवालेहिं, ॥२॥ एअमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाअ अरिहंताणं,  
भगवंताण, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥५॥ ताव कायं ठाणेणं  
मोणेण ज्ञाणेण अग्गाण वोसिरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग करना, काउस्सग पारके  
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कह कर  
स्तुति करनी )

## श्री सिद्धाचलजीकी स्तुति

पुडरीकगिरि महिमा आगममा परसिद्ध ।  
 विमलाचल भेटी लहिण अविचल रिद्ध ॥  
 पंचमी गति पहोत्या, मुनिवर कोडाकोड ।  
 एणे तीरथे आची, कर्म विपाक विछोड ॥१॥

### अथ सामायिक पारने की विधि,

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि ॥३॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क—  
 मामि ? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउ ॥१॥ इरियावहियाए,  
 विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, वीयक्कमणे,  
 हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणगदग मट्टी मक्कडा-संताणा-  
 संक्कमणे ॥४॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, वेडंदिया,  
 तेइंदिया, चउरिंदिया, पडिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया,  
 लेसिया, संघाडया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उड-  
 विया, ठाणाओठाणसकामिया, जीवियाओ, वदरोविया, तस्स  
 मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्त करणेणं, विसोहि कर-  
 णेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माणं, निग्घायणट्ठाए,  
 ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएण,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए,  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहि,  
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं,  
अभग्गी अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव  
आरहंताण भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव  
कायं ठाणेण मोणेणं झाणेणं अपाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस का काउस्सग्ग करना लोगस न आता हो  
तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारके प्रगट  
लोगस कहना वह नीचे मुजव है )

लोगस उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते  
कित्तिइस्सं, चउत्रीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिं च वदे,  
संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिण च  
चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासु-  
पुज्जं च; विमल-मणंतं, च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥  
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिण च; वंदामि  
रिट्ठनेमि, पासं तह उद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ,  
विहुय-रय-मला पहीणजर-मरणा; चउत्रीसंपि जिणवरा,  
तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्थिय-वंदिय-वहिया, जे ए  
लोगस उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं  
दित्तु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा;  
सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी. फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? सामायिक पारुं ?  
‘यथाशक्ति.’

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सामायिक  
पार्यु “तहत्ति”

( ऐसा कहकर फिर आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे  
मुजव बोलना )

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,  
सव्व पाणप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मगलं ॥

(फिर)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ  
असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइअमि उ कए,  
समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं,

बहुसो सामाईय कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन वत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

## अथ देवसिय प्रतिक्रमण विधि.

( प्रथम स्थापना स्थापन करनेके लिए नीचे मुजब बोलना )

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आय-  
रियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

१ आचार्यजी हो तो नवकार पचिदिय न कहना, न ही तो पुस्तक नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करनेके लिये दाहिना हाथ सामने रखके नवकार पचिदिय कहना ।



इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? सामायिक पारुं ?  
‘यथाशक्ति.’

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सामायिक  
पार्यु “तहत्ति”

( ऐसा कहकर फिर आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे  
मुजब बोलना )

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,  
सव्व पाप्पणासणो, भगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ भगलं ॥

(फिर)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होड नियमसंजुत्तो । छिन्नइ  
असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइअमि उ कए,  
समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं,

बहुसो सामाईयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन बत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

## अथ देवसिय प्रतिक्रमण विधि.

( प्रथम स्थापना स्थापन करनेके लिए नीचे मुजब बोलना. )

नमो अरिहंतारणं ॥१॥ नमो सिद्धारणं ॥२॥ नमो आय-  
रियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलारणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

१ आचार्यजी हो तो नवकार पचिदिय न कहना, न हो तो पुस्तक नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करनेके लिये दाहिना हाथ सामने रखके नवकार पचिदिय कहना ।

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह वंभचेर गुत्तिधरोः चउ-  
विह कसाय सुक्को, इअ अट्टारस गुणेहि संजुत्तो । १॥ पच  
महव्वय जुत्तो, पच विहायार पालण समत्थोः पंच समिओ  
तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ. ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वदामि.

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियाहिय पडिक्क-  
मामि, इच्छं, इच्छामि दडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए-  
विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, वीयक्कमणे,  
हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा  
सकमणे, ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ, ॥५॥ एगिदिया,  
वेडदिया, तेइदिया, चउरिदिया, पंचिंदिया, ॥६॥ अनिहया,  
वत्तिया, लेसिया, सत्ताइया सवट्टिया, परियाविया,  
क्किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं सकामिया, जीवियाओ  
ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । ७॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही  
करणेणं, विसल्ली करणेण, पावाणं कम्माणं निग्वायणट्ठाए  
ठामि काउस्सग्ग ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएण. खासिएण, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं.

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अ मग्गो  
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं  
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं  
सोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

ऐसा कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता  
हो तो चार नक्कार गिनके, फिर प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे  
मुताबिक )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते  
किच्चइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसम मज्झि च वंदे,  
संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पह सुपासं, जिण च चंद-  
प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च; पुप्फदत्तं, सीअल सिज्जंस वासु-  
पुज्जं च; विमल मणत्तं च जिण, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥  
कुंथु अर च मल्लि, वंदे सुणिसुव्वयं नमिजिण च; वंदामि  
रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ,  
विहुय रय मला पहीण जर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा ॥  
इत्तिथयरा मे पसीयंतु ॥५॥ किच्चिय वंदिय महिया ॥ जे ए  
लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग वोहिलाभं ॥ समाहिवर  
मुत्तमं दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पया-  
सयरा ॥ सागरवर गंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
सत्थएण वदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

( ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर )

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छं” ।

( ऐसा कहकर एक नवकोर गिनती )

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दडक उच्चरावोजी ।

( ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भते उच्चरना वह नीचे मुताबिक )

‘करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चवखामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविह, तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण न करेमि, न कारवेमि, तरस भंते ! पडिक्कामामि, निंदामि, गरिहामि, अपाण वोसिरामि ॥२॥

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे बैठे करेमि भते उच्चरना

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे  
संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वदिउं जाव-  
णिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह  
भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउ  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण  
संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि  
खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण  
वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करु ? “इच्छं” ।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोडकर नीचे लिखा नवकार मन्त्र  
तीन वक्त गिनना )

नमो अरिहताणं ॥ नमो सिद्धाण ॥२॥ नमो आयरियाणं  
॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥  
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं  
च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

## सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

\*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

\*यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन  
नहीं करना और वादणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो  
सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुह-  
पत्ति पडिलेहन कर दो वादण भी लेना,

इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर )

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छं” ।

(ऐसा कहकर एक नवकोर गिनना )

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दडक उच्चरावोजी ।

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भते उच्चरना वह नीचे मुताबिक )

‘करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविह, तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण न करेमि, न कारवेमि, तरस भंते ! पडिक्कामामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

१ यदि चरवला हो तो खडे होव  
बैठे करेमि भते उच्चरना

बैठे

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे  
संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वदिउं जाव-  
णिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह  
भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउ  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण  
संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि  
खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण  
वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करु ? “इच्छं” ।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोडकर नीचे लिखा नवकार मन्त्र  
तीन वक्त गिनना )

नमो अरिहताणं ॥ नमो सिद्धाण ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं  
॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाण ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥  
एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं  
च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

## सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

\*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

\*यदि चौविहार उपवास क्रिया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन  
नहीं करना और वादणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो  
सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुह-  
पत्ति पडिलेहन कर दो वादण भी लेना,



इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर )

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छं” ।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना )

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवड मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ।

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भते उच्चरना वह नीचे मुताबिक )

‘करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविह, तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण न करेमि, न कारवेमि, तरस भंते ! पडिक्कामि, निंदामि, गरिहामि, अपाण वोसिरामि ॥२॥

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे बैठे करेमि भते उच्चरना

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे  
संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वदिउं जाव-  
णिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह  
भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउ  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण  
संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि  
खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण  
वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करू ? ‘इच्छं’।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोड़कर नीचे लिखा नवकार मन्त्र  
तीन वक्त गिनना )

नमो अरिहताणं ॥ नमो सिद्धाण ॥२॥ नमो आयरियाणं  
॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥  
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं  
च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

## सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

\*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

\*यदि चौविहार उपवास क्रिया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन  
नहीं करना और वादणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो  
सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुह-  
पत्ति पडिलेहन कर दो वादण भी लेना,

आए मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
पच्चक्खाण मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छ” ।

( ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वादणा देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अ-हो, का-य,  
काय,संफास,खमणिज्जो मे किलामो,अप्पकिलताणं बहुसुभेण  
मे, दिवसो वइवक्तो ? ॥३॥ ज त्ता मे ? ॥४॥ ज व-णिज्ज  
च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्म ॥६॥  
आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाण देवसिआए, आसा-  
यणाए, तिच्चीसन्नयराए, जकिचिमिच्छाए, मणदुक्कडाए, वय-  
दुक्कडाए, कायदुक्कडाए; कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए,  
सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,  
आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ।  
पडिक्कमामि, निदामि गग्गिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह, ॥२॥ निसीहि, अहो काय  
काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलताण बहुसु-  
भेण मे दिवसो वइवक्तो ॥३॥ जत्ता मे ॥४॥ जवणिज्ज  
च मे ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो देवसिअ वइक्कम्मं ॥६॥  
पडिक्कमामि खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तिच्ची-  
सन्नयराए जकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए काय  
दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए

सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो  
मे अइयारो कओ तस्स खुमासमणो पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि अग्गण वोसिरामि ॥७॥

(फिर पच्चक्खाण करना.)

### चउविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहार, असणं,  
पाणं-खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेणं, महत्तरा-  
गारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ × ॥

### तिविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं, असणं,  
खाइम, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरइ ॥

### दुविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं,  
अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिव-  
त्तिआगारेण वोसिरइ ॥

### पाणहारका पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिम पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसा-

× खुद पच्चक्खाण करे तो वोसिरामि कहे

१ यदि एकासण, त्रिआसण व आयबिल निवी तथा तिवि-  
हार उपवास किया हो तो पाणहारका पच्चक्खाण करना,

गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

चौदह नियम धारनेवालों को देसावगासियका  
पच्चक्खाण,

देसावगासिअं उवभोगं परिभोग पच्चक्खाइ अन्नत्थ-  
णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं'  
( ऐसा कहकर बोया घुटना ऊचा करके चैत्यवदन करना )

## अष्टमी का चैत्यवंदन

महासुदि आठमने दिने, विजयासुत जायो ।

तिम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आयो ॥ १ ॥

चइतर वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभजिणंद ।

दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥

माधवसुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ।

अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥

एही ज आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ।

आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥

जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रतस्वामी ।

नेम आपाढसुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥  
 श्रावणवदनी आठमे, नमि जन्म्या जगमाण ।  
 तिम श्रावणसुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ॥ ६ ॥  
 भादरवा वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास ।  
 जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।  
 जाई जिणविंवाइ, ताई सव्वाइ वंदामि. ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताणं ॥ १ ॥ आइगराण, तित्थ-  
 यराणं, सयसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं,  
 पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं. ॥ ३ ॥ लोगुत्त-  
 माणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपर्दवाण, लोगपज्जो-  
 अगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाण, मग्गदयाणं, सरण-  
 दयाण, बोहिदयाणं. ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-  
 नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्खवट्ठीणं ॥ ६ ॥  
 अपडिहय वरनाण-दसणधराणं; विअट्ट छउमाण ॥ ७ ॥  
 जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाण; बुद्धाणं वोहयाण,  
 मुत्ताणं मोअगाणं, ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं; सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-  
 मरुअ-मणंत-मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धि-  
 गइ-नामधेय ठाणं-संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥  
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपई अ

वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

अरिहतचेट्ठाणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए  
पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोढिलाभ-  
वत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए विईए  
धारणाए अणुप्पेद्दाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं,  
जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहु-  
मेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाट्ठेहि आगारेहि, अभग्गो  
अविराट्ठिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहताणं भग-  
वताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
ज्ञाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत  
सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहना  
चइ नीचे सुताविक है)

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;  
अनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु ॥१॥

(फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते  
किट्ठस्स, चउवीसपि केउली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभ-  
वमभिणदणं च सुमइ च । पउमप्पह सुपासं, जिणं च चंद-

प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं,  
च । विमलमणंतं च जिणं, धम्म संति च वंदामि ॥३॥ कु थुं  
अर च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च; वदामि रिट्ठ  
नेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभियुआ, विहुय-  
रयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा  
मे पसीयतु ॥६॥ कित्ति य वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
सिद्धा । आरुग्ग वोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥५॥ चंदेसु  
निम्मलयरा, आडच्चेसु अहिय, पयासयरा । सागरवरगभीरा,  
सिद्धा सिद्धिं सम दिसतु ॥७॥

अरिहंतवेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वंदण वत्तिआए-  
पूअणवत्तिआए सवकारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि  
लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊत्तसिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि,  
सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि; अभग्गो  
अविराहओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण-  
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव काय ठाणेण-  
मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नयकार वा काउस्सग्ग करके नमो अरिहताण वोळ  
कर पारना, फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है )



दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोळा जिनवर  
गुणनीला; दोय नीला दोय शामळ कहा, सोळे जिन कंचन-  
वर्ण लहा. ॥२॥

पुक्खर वरदीगुढे, धायई संडे अ जंबूदीवे अ ॥ भरहेर-  
वय विदेहे, धम्माङ्गरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर पडल  
विद्ध - सणस्स सुरगण नरिंद महिअस्सः सीमा धरस्स वंदे,  
पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाड जरामरण सोग पणासण-  
स्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव  
नरिदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवलब्भ करे पमायं ॥३॥  
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया सजमे ॥ देवं  
नागसुवन्न किन्नरगण सब्भुअभावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइ-  
ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुर ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ  
विजयओ धम्मउत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करोमि  
काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्ति  
आए, सम्माणवत्तिआए, वोहिलाभवत्तिआए ॥ निरुवसग्ग-  
वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए  
चड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण,  
जंभाइएणं, उड्ढुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीएपित्तमुच्छाए ॥१॥  
सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिखेलसंचालेहिं, सुहुमेहिदिट्ठि  
संपालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ;

हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमु-  
क्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं ज्ञाणेणं,  
अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक नवकार का कऊस्सग्ग करना नमो, अरिहताण  
बोलकर काउस्सग्ग पारके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब)  
आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;  
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुओ शिवमुख साखीयो ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाणं, लोअग्ग  
मुवगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो,  
जं देवा पंजली नमसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे  
महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-उसहस्स वद्धमा-  
णस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्कं, अरिट्टनेमिं नमसामि ॥४॥ चत्तारि-अट्ठ दस  
दोय, वदिया जि रा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि, अट्ठा,  
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं  
करेमि काउस्सग्ग ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिण्णं, नीससिण्णं, खासिण्णं, छीण्णं,  
जंभाइण्णं, उइडुण्णं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंवाळेहिं, सुहुमेहिं खेळसंवाळेहिं, सुहुमेहिं

दिद्विसंचालेहिं ॥२॥ एवमाट्टएहिं आगारेहिं, अमग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताणं  
नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण आणेणं  
अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकारका काउरसग करके पारके नमोऽर्हत्सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहनी वह नीचे  
मुजव है)

धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती,  
सहु संघना संकट चूरती, नय त्रिमळना वाछित पूरती ॥४॥

( बाया घुटना ऊंचा करके )

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताणं, ॥१॥ आङ्गराण, तित्थ-  
यराणं, सयसबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसव-  
रपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगना-  
हाण, लोगहिआणं, लोगपडवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥  
अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिद-  
याणं ॥५॥ धम्म-दयाणं, धम्म देसयाणं धम्म नायगाणं धम्म  
सारहीण, धम्म-वरचाउरंत चक्खट्ठीणं ॥६॥ अप्पडिहय वर-  
नाण दंसण धाराण, विअट्ठउमाणं ॥७॥ जिणाण जावयाणं,  
तिन्नानां तारयाण, बुद्धाण वोहयाण, मुत्ताण मोअगाण ॥७॥  
सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणत मक्खय-  
मव्वावाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगड-नामधेयं-ठाण सपत्ताण, नमो

जिणाण, जिअभयाणं ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

( फिर )

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्य्हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्याय्हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । देवसिय पडिक्कमणे ठाउं ? इच्छ, सव्वस्स वि देवसिय दुच्चितिय दुब्भासिअ दुच्चिद्धिअ मिच्छामि दुक्कडं ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणे, गंवाया ए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणरिओ उस्सुत्तो उम्मगो अक्कपो

अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओअणायारो अणिच्छिअव्वो  
असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए  
तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्ह  
शुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स  
ज खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्म उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेण, विसोही कर-  
णेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि  
काउस्सग्ग ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाय अरिहंताणं भगवताणं  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताय कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर अतिचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि न  
आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना काउस्सग्ग से गिनने  
की आठ गाथा नीचे सुजब है )

नाणमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥  
आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काळे  
विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ

तदुभय ।, अट्टविहो नाण मायारो ॥२॥ निस्संकिअ निक्कं-  
खिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे,  
चच्छल-पभावणे अट्ट ॥३॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं  
समिइहिं तिहिं गुत्तीहि ॥ एस चरित्तायारो । अट्टविहो होइ  
नायव्वो ॥४॥ बारसविहंमि वि तवे ॥ सव्विभतर वाहिरे  
कुसल दिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो  
॥५॥ अणसण मूणोअरिया ॥ वित्ती संखेवणं रसच्चाओ;  
कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं  
विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; ज्ञाणं उस्सग्गोवि अ ॥  
अविभतरओ तवो होई ॥७॥ अणिगूहिअ बल वीरिओ,  
परक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जु जइ अ जहा थामं, नायव्वो  
वीरिआयारो ॥८॥

( काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब है. )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे, जिणे; अरिहंते कित्त-  
इस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसम मज्झिअं च वंदे, संभव-  
मभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं च;  
विमल-मणंत च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अर च  
मल्लिं, वदे मुणिसुव्वयं नमि-जिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं  
तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विट्ठय-रय-मला  
पहीण जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु

॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;  
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्म-  
लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गभीरा,  
सिद्धा सिद्धि मम दिसन्तु ॥७॥

( फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर दो  
बार वादणा नीचे मुताबिक देना । )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं, ॥२॥ निसीहि, अहो कायं काय  
संफास खमणिज्जो भे किलामो अप्पक्किलंताण बहुसुभेण भे  
दिवसो वडक्कतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्ज च भे ॥५॥  
खामेमिखमासमणो देवसिअं वडक्कम्मं ॥६॥ आवस्सिआए पडि-  
क्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नय-  
राए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए  
कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमि-  
च्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे  
अड्यारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो काय काय  
संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पक्किलंताणं बहुसुभेण भे  
दिवसो वडक्कतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे ॥५॥  
खामेमि खमासमणो देवसिअं वडक्कम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि

खमासमण्णाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि  
मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए  
मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वध-  
म्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स समा-  
समणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

( फिर खडे होकर )

इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

“इच्छं आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकर-  
णिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो,  
असावगपाउग्गो; नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए,  
तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं  
गुणव्वयाणं, चउण्ह सिद्धखावयाणं, बारसविहस्स सावग-  
धम्मस्स, जं खंडिअं ज विराहिअं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

( फिर हाथ जोड कर )

सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात  
लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक  
वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ वे  
लाख वेईन्द्रिय, वे लाख तेइन्द्रिय, वे लाख चउरिन्द्रिय ॥ चार  
लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय ॥



चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चौराशी लाख जीवायोनिमाहि,  
म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतं  
प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी  
मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, बीजे अदत्तादान,  
चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह ॥ छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे  
माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह,  
तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे  
परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्व शल्य,  
ए अठार पापस्थानकमांहि महारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं  
होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हु  
मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चित्तिअ, दुव्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥  
इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

( वाद मे दाहिना घुटना ऊचा करके नीचे मुजब बोलना )

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुकारो,  
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवड मंगल ॥

करेमि भंते ! सामाट्यं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव  
नियम पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविह, तिविहेणं, मणेण, वायाए,  
काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि.

निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिक्कमिउ, जो मे देवसिओ अइआरो कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अक्कपो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छि-  
अव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए,  
सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसायाणं ॥ पंचण्ह मणुव्व-  
याण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, वारसविह-  
स्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअ जं विराहिअ तस्स मिच्छामि  
दुक्कडं

वंदित्तु सव्वसिट्ठे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि  
पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो  
नाणे तह दसणे चरित्ते अ; सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं  
च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ  
आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं  
वद्ध मिंदिएहिं, चउहि कसाएहि अप्पसत्थेहि; रागेण व दोसेण  
व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे  
चंक्रमणे अणाभोगे; अभिओगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं  
सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु;  
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥६॥ छक्काय समा-  
रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभ-  
यट्ठा चेव त निंदे ॥७॥ पचण्ह--मणुव्वयाणं, गुण--व्वयाणं

चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोराशी लाख जीवायोनिमाहे,  
म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतं  
प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी  
मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान,  
चोथे मैथुन, पाचमे परिग्रह ॥ छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे  
माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह,  
तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे  
परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्व शल्य,  
ए अठार पापस्थानकमाहि महारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं  
होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हु  
मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चित्तिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥  
इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

( वाद मे दाहिना घुटना ऊचा करके नीचे मुजब बोलना )

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाण, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुकारो,  
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवड मंगल ॥

करेमि भंते ! सामादयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव  
नियम पज्जुवासामि. ॥१॥ दुविह, तिविहेणं, मणेणं, वायाए,  
काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भते पडिक्कमामि,

निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिक्कमिउ, जो मे देवसिओ अइआरो कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अरुप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्जाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छि-  
अव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए,  
सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसायाणं ॥ पंचण्ह मणुव्व-  
याण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, वारसविह-  
स्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअ तस्स मिच्छामि  
दुक्कडं.

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि  
पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो  
नाणे तह दसणे चरित्ते अ; सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं  
च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ  
आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं  
वद्ध मिदिएहिं, चउहि कसाए हिं अप्पसत्थेहि; रागेण व दोसेण  
व, तं निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे  
चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं  
सव्वं ॥५॥ संका कंस त्रिगिच्छा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु;  
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥६॥ छक्काय समा-  
रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभ-  
यट्ठा चेव त निंदे ॥७॥ पचण्ह--मणुव्वयाणं, गुण--व्वयाणं

च तिण्ह मड्यारे; सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं  
 ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाडवाय-विरइओ; आय  
 रिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह वंध छविच्छेए,  
 अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे  
 देसिअं सव्वं ॥१०॥ वीए अणुव्वयमि, परि थूलग अलीयवयण  
 विरइओ । आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥  
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । वीअ वयस्स-  
 इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयमि, थूलग  
 परदव्व-हरण विरइओ । आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-  
 संगेण ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे  
 अ, कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे  
 अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ, आयरिय-मप्पसत्थे,  
 इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणगविवाह  
 तिव्व-अणुरागे । चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं  
 ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि; परिमाण  
 यरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्तवत्थु,  
 रूप सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्पयंमि य,  
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसामु  
 उड्ढं अहे अ तिरिअ च । वुड्ढि सडअ तरद्धा, पढमंमि गुणव्वए  
 निदे ॥१९॥ मज्जंमि अ, मंसमि अ, पुप्फे अ फले अ गधमल्ले  
 अ । उवभोग परिभोगे, वीयंमि गुणव्वए निदे ॥२०॥  
 सचित्ते पडिवद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअ च आहारे; तुच्छोमहि-

भक्खणया, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥२१॥ इगाली-वण-साडी,  
 भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्ज चेव दंत, लक्ख-रस  
 केस-विसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्ल-  
 छणं च दवदाणं । सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च  
 चज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण कट्ठे-मंत मूल  
 भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥२४॥  
 न्हाणु व्वट्ठण वन्नग, विलेवणे सद्द रूव रस-गंधे । वत्थासण  
 आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुडए,  
 मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते । दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तद्दा  
 सइ विहूणे । सामाअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥  
 आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमि,  
 बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ सथारुच्चारविहि, पमाय तह  
 चेव भोयणाभोए । पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे  
 ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिखवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव;  
 कालाडकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ  
 दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकपा । रागेण व दोसेण  
 व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागे, न  
 कओ त-चरण-करण जुत्तेसु । संने फासुअदाणे, तं निंदे  
 तं च गरिहामि ॥३२॥ इडलोए परलोए, जीविअ-  
 मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइयारो, मा मज्झ  
 हुज्झ मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइ-

અસ્સ વાયાએ । મળસા માણસિઅસ્સ, સવ્વસ્સ વયાઈઆરસ્સ ।  
 ॥૩૪॥ વંદણવયસિવ્ખા-ગારવેસુ, સન્ના-કસાયદંઢેસુ । ગુત્તીસુ  
 અ સમિહસુ અ, જો અહારો અ ત નિંદે ॥૩૫॥ સમ્મદિટ્ઠી  
 જીવો, જહિવિ હુ પાવ સમાયરે કિં ચિ । અપ્પોસિ હોઈ બંધો,  
 જેણ ન નિદ્ધધસં કુણહ ॥૩૬॥ તં પિ હુ સપઢિવ્કમણં, સપ્પ-  
 રિઆવં સઉત્તરગુણં ચ । ચિપ્પ ઉવસામેહ, વાહિન્વ સુસિવિલ્લઓ  
 વિજ્જો ॥૩૭॥ જહા વિસં કુટ્ટગયં, મંતમૂલ વિસારયા । વિજ્જા  
 હણંતિ મંતેહિં, તો તં હવહ નિવ્વિસં ॥૩૮॥ એવં અટ્ઠવિહં  
 કમ્મં, રાગ દોસ-સમજ્જિઅં । આલોઅંતો અ નિંદંતો, ચિપ્પં  
 હણહ સુસાવઓ ॥૩૯॥ કયપાગોવિ મણુસ્સો, આલોઈઅ  
 નિંદિઅ ગુરુસગાસે । હોઈ અહરેગ લહુઓ, ઓહરિઅ-મરુચ્ચ  
 ભારવહો ॥૪૦॥ આવસ્સણેણ એણ, સાવઓ જહિવિ વહુરઓ  
 હોઈ । દુક્ખાણમંતકિરિઅં, કાહી અચિરેણ કાલેણ ॥૪૧॥  
 આલોઅણા વહુવિદ્ધા, નય સંભરિઆ પઢિવ્કમણ કાલે ।  
 મૂલગુણ-ઉત્તર ગુણે, તં નિંદે તં ચ મરિહામિ ॥૪૨॥ તસ્સ  
 ધમ્મસ્સ કેવલિપન્નત્તસ્સ ॥

(ઇધર સઢા હોંકર વોલના)

અબ્બુટ્ઠિઓ મિ આરાહણાએ, વિરઓમિ વિરાહણાએ ।  
 તિવિહેણ પઢિવ્કંતો, વંદામિ જિણે ચઉવ્વીસં ॥૪૩॥ જાવત્તિ  
 ચેહાહ, ઉહ્ઠે અ અહે અ તિરિઅ લોએ અ । સવ્વાઈ તાઈ વંદે  
 હહ સંતો તત્થ સંતાઈ ॥૪૪॥ જાવંત કેવિસાહુ, મરહેરવય મહા-  
 વિદેહે અ । સવ્વેસિં તેસિં પણઓ, તિવિહેણ તિદંહ વિરયાણં

॥४५॥ विरसंचिय-पावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए ।  
 चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोळतु मे दिअहा ॥४६॥  
 मम मंगल मरिहता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिही  
 देवा, दितु समहिं च वोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे,  
 किच्चाणमकरणे पडिक्कमण । असइहणे अतहा, विवरीयपरु-  
 वणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा समंतु-  
 मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केगइ ॥४९॥ एवमहं  
 आलोइअ, निदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्म । तिविहेण पडि-  
 ककंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥५०॥

(फिर दो वादणा नीचे सुताधिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए ॥१॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि-  
 अ हो कायं का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकि-  
 लंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥३॥ जत्ता भे ?  
 ॥४॥ ज-उ-णिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देव-  
 सिअ वइक्कम्मं ॥६॥ आवस्सियाए पडिक्कमामि, खमासमणाणं  
 देवसिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जकिचि मिच्छाए  
 मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए; कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,  
 मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए,  
 सव्ववम्माडक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अडयारो कओ,  
 तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अपाणं  
 वोसिरामि ॥७॥



इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥१॥ अणुजाणह-मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो, का-य  
 -का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसु-  
 भेण, भे दिवसो वडक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ ज-वणिज्जं  
 च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअं वडक्कम्मं ॥६॥  
 पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तिच्ची-  
 सन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए,  
 कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वका-  
 लिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माडक्कमणाए, आसा-  
 यणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्क-  
 मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भन्तर  
 देवसिअं खामेउ ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअ  
 परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे  
 उच्चासणे समासणे अतरभासाए उतरिभासाए जं किंचि  
 मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुव्वं जाणह अह न  
 जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दो वादणा नीचे मुताविक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,

का यं, काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं  
 बहुसुभेण भे, दिवसो वड्ढकंतो? ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ ज-  
 वणिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वड्ढ-  
 कम्म ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसि  
 आए आसायणाए तिच्चीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-  
 दुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥१॥ अणुजाणह-मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो, का-यं  
 -का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पक्किलंताणं बहुसु-  
 भेण, भे दिवसो वडक्कंतो ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥ ज-वणिज्जं  
 च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअं वडक्कम्म ॥६॥  
 पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तिच्ची-  
 सन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए,  
 कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वका-  
 लिआए, सव्वमिच्छोवयाराए. सव्वधम्माडक्कमणाए, आसा-  
 यणाए, जो मे अडआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्क-  
 ञ्जामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

(फिर दाहिना हाथ चरबले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर  
 देवसिअं खामेउं ? इच्छ, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअ  
 परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे  
 उच्चासणे समासणे अतरभासाए उवरिभामाए जं किंचि  
 मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुव्वमे जाणह अह न  
 जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(फिर दो वादणा नीचे मुताविक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,

का यं, काय-संफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं  
बहुसुमेण मे, दिवसो वइक्कंतो? ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥ ज-  
वणिज्जं च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइ-  
क्कम्म ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसि  
आए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-  
दुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए  
लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइ-  
क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमास-  
मणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अहो  
कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं  
बहुसुमेण मे दिवसो वइक्कंतो ॥ ३ ॥ जत्ता मे ॥४॥ जव-  
णिज्जं च मे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं  
॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए  
तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-  
डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-  
कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसा-  
यणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि,  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

(बाद मे दोनो हाथ जोड मस्तक को लगाकर नीचे का,  
सूत्र बोलना)

આયરિય ઉવજ્ઞાણ, સીસે સાહમ્મિણ કુલગણે અ; જે  
મે કેહ કસાયા, સવ્વે તિવિહેણ યામેમિ ॥ ૧ ॥ સવ્વસ્સ  
સમણસંઘસ્સ, ભગવઓ અંજલિ કરીઅ સીસે । સવ્વ યમાવ-  
હિતા, યમામિ સવ્વસ્સ અહયંપિ ॥ ૨ ॥ સવ્વસ્સ જીવરાસિસ્સ,  
ભાવઓ ધમ્મનિહિઅ નિઅચિત્તો । સવ્વં યમાવહિતા, યમામિ  
સવ્વસ્સ અહયંપિ ॥ ૩ ॥

કરેમિ મંતે ! સામાઙ્ગ, સાવજ્જં જોગ પચ્ચક્ખામિ, જાવ  
નિયમં પજ્જુવાસામિ, ॥ ૧ ॥ દુવિહ, તિવિહેણં, મણેણ, વાયાણ,  
કાણ, ન કરેમિ, ન કારવેમિ, તસ્સ મંતે ! પહિક્કમામિ,  
નિદામિ, ગરિહામિ, અપ્પાણં વોસિરામિ ॥

ઈચ્છામિ ઠામિ કાઉસ્સગ્ગં, જો મે દેવસિઓ અહારો  
કઓ, કાહઓ, વાહઓ, માણસિઓ, ઉસ્સુત્તો, ઉમ્મગ્ગો, અકપ્પો,  
અકરણિજ્જો, દુજ્ઞાઓ, દુવ્વિચિંતિઓ, અણારો, અણિચ્છિ-  
અવ્વો, અસાવગ પાઉગ્ગો, નાણે, દંસણે, ચરિત્તાચરિત્તે, સુણ,  
સામાઙ્ગ, તિણ્હ ગુત્તીણં, ચઉણ્હ કસાયાણં, પંચણ્હ મણુવ્વયાણં,  
તિણ્હં ગુણવ્વયાણ, ચઉણ્હ સિક્ખાવયાણ, વારસવિહત્સ સાવગ-  
ધમ્મસ્સ, જં યંહિં અં જં વિરાહિં, તસ્સ મિચ્છામિ દુક્કહં ॥

તસ્સ ઉત્તરી કરણેણં, પાયચ્છિત્તકરણેણ, વિસોહીકરણેણ,  
વિસલ્લીકરણેણં, પાવાણ કમ્માણં નિગ્ધાયણદ્વાણ ઠામિ  
કાઉસ્સગ્ગ ॥

અન્નત્થ ઝસસિણં, નોસસિણં, યાસિણં, છીણ,

जभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं;  
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अम-  
ग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, ॥३॥ जाव अरिहं-  
त्ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं  
ठाणेणं माणेणं ज्ञाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(ऐसा कहकर दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता  
हो तो आठ नवकार गिनके, फिर प्रगट लोगस्स कहना. ब्रह्म  
नीचे सुताबिक है )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिं च वंदे,  
संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस  
वासुपुज्जं च; विमलमणतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वदाम ॥३॥ कुंतुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिज्जिणं  
च; वदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥  
एवं मए अमिथुआ, त्रहुय रय मला पहीणजरमरणा ॥  
चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्थिय,  
वंदिय, महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग  
ओहिलाभं ॥ समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,

आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए,  
पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोहि-  
लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण,  
जमाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं; सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहु-  
मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि अभग्गो  
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण  
भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं  
मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक लोगस्स या चार नवकारका काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट पुक्खरवरदीवइडे, कहना सो नीचे मुताबिक है )

पुक्खरवरदीवइडे, धायईसंडे अ जंचूदीवे अ, भरहेरवय-  
विदेहे, धम्म्याइगरे नमसामि ॥१॥ तमत्तिमिरपडलविद्ध-  
सणस्स सुरगणनरिदमहियस्स । सीमाधरस्स वदे, पप्फो-  
डिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाड जरा मरण सोग पणासण-  
स्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । कोदेव दाणव नरि-

दगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारहुवलब्भ करे पमाय ॥३॥  
 सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नदी सया संजमे, देवं नाग-  
 सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ  
 जगमिणं तेलुक्कमच्चासुर । धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ  
 धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं  
 ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्मा-  
 णवत्तिआए बोदिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥  
 सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि  
 काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
 जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
 ॥१॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं; सुहु-  
 मेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो  
 अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं,  
 भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं,  
 मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( एक लोगस्सका चदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना,  
 न आवडे तो चार नववार गिनना, फिर सिद्धाण बुद्धाण कहना )

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं ॥ लोअग्गमु-  
 वगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि  
 देवो, ज देवा पजली नमंसंति; त देवदेव महिअं, सिरसा



वंदे महावीरं ॥२॥ इकोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्कवट्ठि, अरिट्ठनेमिं नमंsam ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविरा-  
हिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके नमोऽर्हत्सि-  
द्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहनी वह नीचे  
मुजब है )

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसघायं ।

तेसिं खवेउ सयय, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥१॥

( इन्द्रियों को कमलदल की स्तुति कहना चाहिए वह नीचे  
मुताबिक है )

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ।

कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥१॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमल्लिए पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचाळेहिं, सुहुमेहिं खेलसचाळेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचाळेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अबग्गो, अवि-  
राहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहताणं  
अगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं  
ठाणेणं सोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके  
नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कह कर एक स्तुति  
कहनो वह नीचे मुजब है )

जीसे खित्ते साहु, दसणनाणेहिं चरणसहिं ॥

साहंति सुखमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ॥१॥

( स्त्रियोंको यस्याः क्षेत्र की स्तुति कहनी चाहिये वह नीचे  
मुजब है )

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।

सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरि-  
याणं ॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सच्चसाहूणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाण च सन्वेसिं ॥८॥ पदमं हवइ मंगलं ॥९॥

( फिर = दूठे आवश्यकको मुहपत्ति पडिलेहन करना, मुह-पत्तिका पडिलेहन करके फिर दो वादणा देना, वह नीचे सुता-बिक है )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि  
आए ॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो का-  
यं, काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं  
बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ ज-व-  
णिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं  
॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि, असमणाणं देव-  
सिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए,  
मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए,  
माणाए, मायाए, लोभाए, सब्बकालिआए, सब्बमिच्छो-  
वयाराए, सब्बधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे  
वइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं  
काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलताणं बहुसुभेण  
भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे ?  
॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ॥६॥ पडिक्क-  
मामि, खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए तित्तीसन्नय-  
राए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदु-

कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए,  
सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइकमणाए, आसायणाए, जो  
मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदन, पडिक्कमणु, काउस्सग्ग,  
पच्चक्खाण किया है जी ।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धा-  
चार्यापध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावा-  
समोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारवि-  
न्दराज्या, ज्ञायः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति  
संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥  
कषायतापादितजतुनिर्वृत्ति, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः ।  
स भुक्त्वा मोक्षानुष्टिमग्निभो, दद्यातु तुष्टिं नयि विस्तरो  
गिराम् ॥३॥

(यदि स्त्रिया प्रतिक्रमण करतो हो तो यहां पर संसार-  
दावा की जग कडी कहे वह नीचे मुताबिक है )

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं; माया  
रसादारणसारसीरं, नमामि वीर गिरिसारथीरं ॥१॥ भावा-  
चनाम सुरदानत्र मानवेन, चूआविलोचकमलावलिमालितानि;  
संपूरितामिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज-

पदानि तानि ॥२॥ बोधागाध सुपदपदवीनीरपूराभिरामं  
जोवार्हिसाविरललहरी संगमागाहदेह । चूलावेलं गुर  
गममणिसंकुल दूरपार, सार वीरागमजलनिधिं सादरं सा  
सेवे ॥३॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताण ॥१॥ आङ्गराणं, तित्थ  
यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं  
पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्त-  
माणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोगपज्जो-  
अगराण ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण  
दयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसणाणं, धम्म-  
नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥  
अप्पडिहय वरनाण-दंसणधराणं, विअट्ठछउमाण ॥ ७ ॥  
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं  
मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्तूणं, सव्वदरिसीण, सिव  
मयल मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वावाह-मपुणरावित्ति-सिद्धि  
गइनामधेणं ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥  
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले; संपइ ३  
वट्ठमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(इच्छाकारेण सदिसह भगवन् स्तवन भणुं “इच्छ” कहके)  
नमोऽईत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(ऐसा कहके स्तवन कहना)

## स्तवन

जगजीवन जगबालहो, मरुदेवीनो नंद लालरे;  
 मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनद लालरे. जग०१  
 आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लालरे;  
 बदन ते शरद चंदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे. जग०२  
 लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहस उदार लालरे;  
 रेखा करचरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे जग०३  
 इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लही घडीयु अंग लालरे;  
 भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह उत्तंग लालरे. जग०४  
 गुण सघळा अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे;  
 वाचक यशत्रिजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लालरे. जग०५

वरकनकशंखविद्रुम,—मरकतघनसन्निभं विगतमोह ।

सप्ततिशतं जिनानां, सर्गामरपूजितं वंदे ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

(फिर दाहिना हाथ चरबले पर रखके मस्तक झुकाकर)

अइहाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावत केवि साहु, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा, अट्टारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छित्त-  
विसोहणत्थ काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, देवसियपायच्छित्तविसोह-  
णत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण,  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,  
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो  
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं  
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं,  
मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(ऐसा कहकर चार लोगसका चदेसु निम्मलयरा तक  
काउस्सग्ग करना, न आता हो तो सोलह नवकार गिनना,  
फिर प्रगट लोगसस कहना, वह नीचे मुताबिक है )

लोगसस उज्जौअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्त-  
इस्सं, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिअ च वदे, संभव-  
मभिणदण च सुमइ च; पउमप्पह सुपास, जिणं च चंदप्पहं वदे  
॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वागुपुज्जं च;

विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्ययं नमि-ज्जिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं,  
यासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-  
मला पहीणजर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे  
पसीयंतु ॥५॥ कित्थिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
सिद्धा; आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दित्तु ॥६॥ चंदेसु  
निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा,  
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ?  
“इच्छं”

इच्छामि खमा णो ! वदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करू ? “इच्छं”

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,  
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुक्कारो,  
सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मगलं ॥

सज्झाय.

आप स्वभावमा रे, अवधु सदा मगन मे रहना । जगत  
जीव है करमावीना, अचरिज कलुअ न लीना ॥ आप०



॥१॥ तुम नहीं केरा कोई नहिं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ।  
 तेरा है सो तेरी पासे, अवर सवे अनेग ॥ आप० ॥ २ ॥  
 बपू बिनागी तुं अबिनागी, अब है इनकुं बिलासी । बपू  
 संग जब दूर निकासी, तब तुम गिवका वासी ॥ आप०  
 ॥३॥ राग ने रीसा टोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ।  
 जब तुम उनकु दूर करीसा, तब तुम जग का ईसा ॥ आप०  
 ॥४॥ परकी आगा सदा निरागा, ए है जगजन पासा ।  
 वो काटनकु करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आप०  
 ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुवा  
 अपभ्राजी । कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी  
 बाजी ॥ आप० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान  
 ध्यान मनोहारी । कर्मकलंककुं दूर निवारी, जीव बरे गिव  
 नारी ॥ आप० ॥ ७ ॥

नमो अरिहताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं  
 ॥३॥ नमो उवज्जायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥  
 एसो पंच नमुकारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं  
 च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मगलं ॥९॥

इच्छामि खुमासमणो ! वडिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! दुःखवस्त्रय-कम्मवस्त्रय  
 निमित्त काउस्सग्ग करु ? “इच्छ” दुःखवस्त्रय कम्मवस्त्रय

निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिण्णं, निससिण्णं, खासिण्णं, छीण्णं,  
जंभाडण्णं, उड्डुण्णं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,  
सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं,  
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिह-  
ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव, कायं-  
ठाणेणं, मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(चार संपूर्ण लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता हो तो  
सोलह नवकार गिनना. फिर सब लोग काउस्सग्ग अवस्था में ही  
रहे और एक आदमी नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः  
ऐसा कहकर शांति बोले वह नीचे मुताबिक है)

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य ।  
स्तोतुः शान्तिनिमित्त, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥  
ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।  
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दक्षिणाम् ॥ २ ॥  
सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपू-  
जिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वांरसु-  
समूह-स्वामिकसंपूजिताय न जिताय । भुवनजनपालनोद्यत-  
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन-कराय  
सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथ-

नाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ।  
 विजया कुरुते जनहित-मिति च जुता नमत तं शातिम् ॥ ६ ॥  
 भवतु नमस्ते भगवति ! विजये सुजये परापरैरजिते । अप-  
 राजिते जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ! ॥ ७ ॥ सर्व-  
 स्यापि च सङ्गस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधुना च  
 सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृत-  
 सिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि सत्त्वानाम् । अभयप्रदाननि-  
 रते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतूना,  
 शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्दृष्टीना धृति, रतिमति-  
 बुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरताना, शातिनताना  
 च जगति जनतानाम् । श्रीसंपत्कीर्तियशो-वर्द्धनि जयदेवि !  
 विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर-दुष्टग्रहराजरोग-  
 रणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी-चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥  
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं- कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सत्रेति ।  
 तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम्  
 ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशाति-तुष्टिपुष्टिस्वस्ताह कुरु  
 कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः  
 क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर-पुरस्सरं  
 संस्तुता जयादेवी । कुरुते शाति नमता, नमो नमः शातये  
 तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वहरिदर्शित-मंत्रपदविदग्धितः स्तवः  
 क्षान्तेः । सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्ति-

मताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति  
वा यथायोगम् । स हि शान्तिपदं यायात्, स्वरिः श्रीमान-  
देवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न-  
वल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥  
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्व, धर्माणां,  
जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

( फिर )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथयरे जिणे; अरिहते-  
किच्चइस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-  
मभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च;  
विमल मणंतं च जिणं, धम्मं सत्तिं च वंदामि ॥३॥ कुशुं  
अरं च मल्लि, वदे सुणिसुव्वय नमिजिणं च; वंदामि रिद्धि-  
नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिधुआ, विहुय  
रयमला पहीण जर मरणा; चउवीसपि जिणवरा ॥ तिथयरा  
मे पसीयंतु ॥५॥ किच्चिय वंदिअ महिया । जे ए लोगस्स  
उत्तमा सिद्धा ॥ आरग्ग बोहिलाभ ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु  
॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥  
सागर वर गभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

श्रीदेवसिप्रतिक्रमणमेंसामायिक पारनेकी विधि

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए

मत्थएण वदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्कमामि ?  
 इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए, विराहणाए  
 ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,  
 ओसा उत्तिंग-पणग दग, मट्टी-मक्कडा-संताणा-संक्रमणे ॥४॥  
 जे मे जीवा विराहिआ ॥५॥ एगिंदिया, वेइदिया, तेइदिया,  
 चउरिदिया, पंचिंदिया, ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया,  
 संघाडया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया,  
 ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स  
 मिच्छामि दुक्कड ॥७॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेण, विसोही  
 करणेण, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए  
 ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
 जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥  
 सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेल संचालेहि, सुहुमेहिं  
 दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अवि-  
 राहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिइंताण भगव-  
 ताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं,  
 ओणेण, ज्ञाणेण, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

( एक लेगस्सका चदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग

करना, लोगस्स न आता हो तो चार नवकारका काउस्सग करना । काउस्सग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजव है ।)

लोगस्स उज्जोगगरे, धम्मतिथयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चदप्पहं वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलं सज्जंस-वासुपुज्जं च ॥ विमलमणतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एयं मए अभिथुआ, त्रिहुयरयमत्ता पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय, वंदिय, महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि-यम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर बायां घुटना ऊचा करके चउक्कसाय कहना.)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणवाणमुसुमूरणु । सरसपिअंगुवन्तु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहड फणिमणि-किरणालिद्धउ । न नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु

પયચ્છુ વહ્ણિ ॥૨॥

નમુત્થુણં અરિહંતાણં મગવતાણ ॥૧॥ આદ્ગરાણં, તિથ-  
યરાણ, સયસબુદ્ધાણ ॥૨॥ પુરિસુત્તમાણં, પુરિસસીહાણ, પુરિ-  
સવર પુંડરીઆણ, પુરિસવરગંધહત્થીણ ॥ ૩ ॥ લોગુત્તમાણં,  
લોગનાદાણં, લોગહિઆણ, લોગપર્દવાણ, લોગપડ્જોઅગરાણ  
॥૪॥ અમયદયાણં, ચવસુદયાણં, મમ્મદયાણં, સરણદયાણ,  
બોહિદયાણ ॥૫॥ ધમ્મ-દયાણ, ધમ્મ-દેસયાણ, ધમ્મ નાય-  
ગાણ, ધમ્મ-સારહીણ, ધમ્મ વરચાઉરત-ચક્કવટ્ટીણ ॥૬॥  
અપ્પહિહય વરનાણ-દસણ-ધરાણં, દિઅટ્ટ છુટમાણ ॥૭॥ જિનાણં  
જાવયાણં, તિન્નાણ તારયાણં, બુદ્ધાણં બોહયાણં, મુત્તાણં મોઅ-  
ગાણં, ॥૮॥ સવ્વન્નૂણં, સવ્વદરિસીણં, સિવ-મયલ-મરુઅ મળંત-  
મવસુય-મવ્વાવાહ-મપુણરાવિત્તિ-સિદ્ધિગઈ-નામધેય-ઠાણં—  
સંપત્તાણં, નમો જિનાણં જિઅમયાણં ॥૯॥ જે અ અઈઆ સિદ્ધા,  
જે અ મદિસ્સંતિ ણાગણ કાલે ॥ સંપઈ અ વટ્ટમાણા, સવ્વે  
તિવિહેણ વંદામિ ॥૧૦॥

જાવતિ ચેઈઆઈં, ઉઢ્ઠે અ અહે અ તિરિઅ લોઅ અ;  
સવ્વાઈં તાઈં વંદે, ઇહ સંતો તત્થ સંતાઈં ॥૧॥

ઈચ્છામિ સમાસમણો ! વદિઉં જાવણિજ્જાણ નિસીહિ-  
આપ મત્થણ વંદામિ

जावंत केवि साहु, भरहेरवय महाविदेहे अ; सन्वेसिं  
तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर  
विसनिन्नासं, मंगल कललाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग-  
मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ; तस्स-गह रोग मारी, दुट्ठ  
जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि  
बहुफलो होइ; नर-तिरिण्णु वि जीवा, पावंति न दुक्खदो-  
गच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिण्ण;  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ  
महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण; ता देव दिज्ज बोहिं,  
भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

( फिर दोनों हाथ मस्तकको लगाकर )

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयचं ।  
भवनिब्भेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-  
विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो  
तव्वयण, -सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआ-  
णवंधणं, वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे  
भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समा-  
हिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणा-  
मकरणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमागलयं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं  
सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥



इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

( ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना )

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? ‘यथा-  
शक्ति’ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक  
पार्युं, “तहत्ति”

( ऐसा कहकर दाहिना हाथ आसन पर रखके नीचे मुजब  
बोलना )

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं,  
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पच नमु-  
क्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं  
हवइ मगलं ॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होड नियमसंजुत्तो ।  
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइ-  
यंमि उ कए, समणो इव ओ हवइ जम्हा । एएण  
कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि

जो कभी अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुकडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन वचनस दोषोंमें जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुकडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

यथाविधि क्रम देवसि प्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

**प्रतिक्रमणमें छींक आइ हो तो उनकी विधि.**

समुदायमें किसीको अतिचार वाद छींक आइ हो, तो छेलेले सज्जाय होने वाद नवकार मंत्र गीन खमासमण दे, फिर हरियावही कर काउस्सग करके प्रगट लोगस्स कहना. पिछे खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षुद्रोपद्रव उड्ढावणार्थ काउस्सग करुं? इच्छं क्षुद्रोपद्रव उड्ढावणार्थ करेमि काउस्सगं, अन्नत्थ कहकर चार लोगस्स का सागरवरगंभीरा तक काउस्सग करना. पिछे एक शक्सने पारकर नीचेकी थोड् कहना. और सब काउस्सग में रहे हुए सुने.

सर्वे यक्षाग्निकाद्या ये, वैयावृत्त्यकरा जिने ।

क्षुद्रोपद्रवसंघात, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥१॥

पिछे काउस्सग पारके प्रगट लोगस्स कहकर आगेकी विधि करना यदि अतिचार के पेशतर आई हो तो प्रतिक्रमण चैत्यवंदन से फिरसे करना.

## गुरुवन्दन की विधि

- १ गुरु के पास आकर पहले दो खमासमण देना.
- २ पिछे खड़े होकर “इच्छकार सुहराड” (सुवे वार वजे तक ‘सुहराड’ और पिछे साम तक ‘सुहदेवसि’) पाठ कहना
- ३ फिर एक खमासमण देकर अब्भुट्टिओ साम कर,
- ४ फिर एक खमासमण देकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना-

## चैत्यवन्दन करने की विधि

( पहिले प्रभुस्तुति करके मन्दिरके बीचमे आके प्रथम तीन खमासमण देके बाया घुटना ऊचा करके ) इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । चैत्यवन्दन करु ? इच्छ, कहके नीचे मुताबिक चैत्यवन्दन कहना )

सकळ कुशळ वल्ली, पुष्करावर्तमेघो;

दुरित तिमिर भानुः, कल्प-वृक्षोपमानः ।

भवजलनिधि-पोतः, सर्व संपत्ति हेतुः,

स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः

श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥१॥

## श्री महावीर स्वामीका चैत्यवन्दन

सिद्धारथ सुत वदिष्ट त्रिशलानो जायोः

क्षत्रियकुडमा अवतर्यो; सुर नरपति गायो ॥१॥

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय ।

वहीतेर वर्पनु आउखुं, श्री वीर जिनेश्वरराय ॥२॥

सीमाविजय जिनरायनो ए, उत्तम गुण अवदात ।

सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं  
जंजण विंवाइ, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, ॥ १ ॥ आइगराणं,  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससी-  
हाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपईवाणं,  
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, चक्खुदयाणं,  
मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं,  
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-  
चाउरंतक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणं—दंसणधराणं,  
विअट्ठउमाणं, ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥  
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताण मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं  
सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ-मणंतमक्खय-मव्वावाहमपुणरा-  
वित्ति—सिद्धिगइनामधेय । ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाणं  
जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति  
णागए काले ॥ संपइ अ वट्ठमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ;  
सव्वाइं ताइ वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहु, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं  
त्तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥ १॥

नमोऽहत्तसिद्धाचार्योपाध्याय—सर्वसाधुभ्यः

## श्री ऋषभदेव स्वामिका स्तवन.

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी ।  
 प्रथम तीर्थकर प्रथम नरेश्वर, प्रथम यति व्रतधारी ॥ज०॥१॥  
 वरसीदान देइ तुम जगमे, ईलती ईति निवारी ।  
 तैसी काही करतु नाहिं करुना, साहेव बेर हमारी ॥ज०॥२॥  
 मागत नाहीं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ।  
 दियो मोही चरण कमलकी सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥३॥  
 भवलीला वासित सुर डारे, तो पर सब ही उवारी ॥  
 मै मेरो मन निश्चय कीनो, तुम आणा शिर धारी ॥ज०॥४॥  
 ऐसी साहिव कोऊ नहीं जगमे, यासुं होय दिलदारी ।  
 दिल ही दयाल प्रेम के विचे, तिहा हठखेचेगमारी ॥ज०॥५॥  
 तुम हि साहिव मै हूं बदा, या मत दियो विसारी ।  
 श्रीनयविजय विबुध सेवक के, तुम होपरम उपकारी ॥ज०॥६॥

(फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।  
 भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोगवि-  
 रुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो  
 तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥ वारिज्जइ जइवि निआण-  
 वधणं, वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे  
 तुम्ह चलणानं ॥ ३ ॥ दुवखखओ कम्मखओ, समाहि-  
 मरणं च वोहिलाभो अ । संषजउ मह एअं, तुह नाह

पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्य, सर्वकल्याणकारणं ।  
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ खडे होकर.

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वंदणवत्तिआए  
पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि-  
लाभवत्तिआए निखवसग्गव त्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए-  
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिण्णं, नीससिण्णं, खासिण्णं, छीण्णं,  
जंभाइण्णं, उइडुण्णं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं  
नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण ज्ञाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुजब.)

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;

मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया,

जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया;

केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ।

## श्री ऋषभदेव स्वामिका स्तवन.

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी ।  
 प्रथम तीर्थकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारी ॥ज०॥१॥  
 वरसीदान देड तुम जगमे, ईलती ईति निवारी ।  
 तैसी काही करतु नाहिं करुना, साहेब बेर हमारी ॥ज०॥२॥  
 मागत नाहीं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ।  
 दियो मोही चरण कमलकी सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥३॥  
 भवलीला वासित सुर डारे, तो पर सब ही उवारी ॥  
 मैं मेरो मन निश्चय कीनो, तुम आणा शिर धारी ॥ज०॥४॥  
 ऐसो साहिव कोऊ नहीं जगमे, यासुं होय दिलदारी ।  
 दिल ही दयाल प्रेम के बिचे, तिहाहठखेचेगमारी ॥ज०॥५॥  
 तुम हि साहिव मैं हूं वदा, या मत दियो बिसारी ।  
 श्रीनयविजय विबुध सेवक के, तुम होपरम उपकारी ॥ज०॥६॥

(फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर)

जय बीरराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।  
 भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोमवि

पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्य, सर्वकल्याणकारणं ।  
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ खडे होकर,

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वंदणवत्तिआए  
पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि-  
लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए-  
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण  
नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण द्वाणेणं  
अप्पाणं वोत्तिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुजब.)

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;

मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया,

जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया;

केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ।



## पौषध में लेनेकी विधि.

### पौषध में रखनेका उपकरण

पौषधमे १ धोती, १ उत्तरासन, १ कवल, मात्राकी कुडी, पुंजणी, ठल्ला मात्राके लिये १ धोती अलग रखना, दडासन, चरवला, मुहपत्ति, कटासना [ बेटका ] सूत का कंदोरा इनके सिवाय विशेष उपकरण नहीं रखना

प्रथम एक खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह कर एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार) का काउस्सग्ग कर के फिर प्रगट लोगस्स कहना । बादमें एक खमासमण देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं, कह कर ५० बोल से मुहपत्ति पडिलेहन करना ।

फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह संदिसाहू ? इच्छं. फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह ठाऊ ? इच्छ. कह कर दोनों हाथ जोड एक नवकार गिनना ।

फिर इच्छकारी भगवन् पसाय करी पोसह दडक उच्चरावोजी ? कह कर गुरु महाराज या व्रतधारी के पास पोसह का पच्चवखाण करना । यदि गुरु या व्रतधारी का योग न हो तो स्वयं नीचेमुताविक 'करेमि भंते पोसह उच्चरे' ।

## पौषध का पञ्चवखाण सूत्र

करेमि भंते ! पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, सरीरसक्कार पोसहं सव्वओ, वंभवेर पोसह सव्वओ, अव्वा-चार पोसहं सव्वओ, चउव्विह पोसहं ठामि, जाव दिवसं अहोरत्त पज्जुगसामि द्विहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि तरुस भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं.' कह कर मुहपत्ति पडिलेहन करके, फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाऊं । इच्छं,' कहकर.

दोनों हाथ जोड एक नवकार मंत्र गिन कर । इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ?' कह कर 'करेमि भंते सामाईयं' का पाठ उच्चरना.

फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्

१ दिन का पौषध लेना हो तो 'जाव दिवस' दिन-रात का पौषध लेना हो तो 'जाव अहोरत्त' और सिर्फ शाम का लेना हो तो 'जाव शेष दिवस' कहना ।

२ करेमि भंते सामाईय के पाठ में 'जाव नियम' की अवेज में 'जाव पसह' कहना ।

बेसणे सदिसाहूं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाऊं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्झाय करूं ! इच्छं,' फिर हाथ जोड़कर तीन नवकार मंत्र गिनना. फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल सदिसाहू ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल करशुं ? इच्छं'

### सुबह को पौषध पडिलेहण विधि

१ पौषध के साथ ही साथ क्रिया करना हो तो एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् पडिलेहण करूं ? इच्छं.' कहकर मुहपत्ति, चरवला, कटासणा, धोती और कंदोरा) पाच वस्त्र पडिलेहण करना । ये पडिलेहण कर के खडे हो जाना.

२ पिले खमासमण देकर 'इच्छाकारी भगवन् पसाय करके पडिलेहणा पडिलेहावोजी ! इच्छं,' कह के—

३ पिले खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं' कह कर मुहपत्ति पडिलेहण करना. फिर खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि संदिसाहूं ? इच्छं' फिर खमासमण देकर

‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेह ? इच्छं’.

कह के बाकी के वस्त्र का पडिलेहण करना.

४ (पीछे दंडासन जाच के इरियावही कर के दंडासन से काजा लेकर एक स्थान पर इकट्ठा कर देख कर सुपडी मे भरना, फिर भरनेवाला स्थापनाचार्यजी के सामने ‘इरियावही पडिक्रम के निर्जीव स्थान पर जा के ‘अणुजाणह जस्सुग्गहो’ कह के परठव दे. पीछे तीन वक्त ‘वोसिरे वोसिरे वोसिरे’ कहना.

५ पीछे आकर खमासमण देकर ‘इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह के एक लोगस्स(चंदेसु निम्मलयरा तक)या तो चार नवकारका काउस्सग्ग करके फिर लोगस्स कहना.

### सुवे पौषधमें श्री देववंदन विधि

१ प्रथम खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक)या चार नवकार का काउस्सग्ग कर के लोगस्स कहना । पीछे उत्तरासन डाल के ‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं,’ कहके चैत्यवंदन कहकर, पीछे जंकिंचि नमुत्थुणं, कह के आभवमखण्डा तक जयवीयराय कहना

२. फिर खमासमण देकर ‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं,’ कहके चैत्यवंदन कहकर जंकिंचि, नमुत्थुणं कह खडे हो के अरिहंत चेडयाणं, अन्नत्थ कह के

एक नवकार का काउस्सग कर पिछे नमोऽर्हत्० कह के चार थुइ के जोडे मे से पहली थुइ कहना ।

३. फिर लोगस्स कह सव्वलोए अरिहतचेइआणं, अन्नत्थ कह के एक नवकार का काउस्सग करना । फिर दूसरी थुइ कह के पुक्खरवरदी सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग वदणवत्तिआए० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग कर तीसरी थुइ कह के पारना ।

४. फिर सिद्धाणं बुद्धाण, वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग कर 'नमोऽर्हत्०' कह के चौथी थुइ कहना । पिछे बैठ के 'नमुत्थुण' कह खडे हो के अरिहत चेइआणं अन्नत्थ कहके एक नवकार का काउस्सग कर पिछे नमोऽर्हत्० कह के चार थुइमे से पहली थुइ कहना,

५ फिर लोगस्स कह सव्वलोए अरिहतचेइआणं, अन्नत्थ कह के एक नवकार का काउस्सग करना । फिर दूसरी थुइ कह के पुक्खरवरदी, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग कर तीसरी थुइ कह के पारना । फिर सिद्धाणं बुद्धाण, वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग कर 'नमोऽर्हत्०' कह के चौथी थुइ कहना । पिछे बैठ के नमुत्थुणं, जावति चेइआईं, खमासमण, देकर पिछे जावंत केवि साहू, नमोऽर्हत् कह स्तवन कहना । फिर आधा जयवीरराय आभवमखण्डा तक कहना ।

६ फिर खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदनं करु ? इच्छं, कह कर चैत्यवंदन करना, पिछे जंकिंचि, नमुत्थुणं कह के संपूर्ण जयवीयराय कहना । पिछे एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? इच्छं', फिर एक नवकार गिन कर नीचे मुताविक मन्नह जिणाणं की सज्झाय करना.

### मन्नह जिणाणं की सज्झाय,

मन्नह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।  
छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥१॥  
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।  
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥  
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ॥  
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥३॥  
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।  
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥  
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।  
सइहाण किच्चमेयं, निच्च्य सुगुरूवएसेणं ॥५॥

### अथ पोरिसी मुहपत्ति विधि

पोसहवालोंने छ घड़ी दिन गये बाद (सुबह के नौ बजे लगभग) स्थापनाजी के सामने खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुन्ना पोरिसी ? इच्छं'

कहके फिर खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक) या चार नवकार का काउस्सग्ग कर पारके प्रगट लोगस्स कहना. फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करुं ? इच्छं' कहके ५० बोलसे मुहपत्ति पडिलेहण करना.

### राइ मुहपत्ति की विधि

गुरु महाराज हो, व उनकी साथ प्रतिक्रमण प्रातः काल में नहीं किया हो तो यह विधि करनी.

- १ खमासमण देकर इरियावही से लोगस्स तक कहना. पिछे
- २ खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइ मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहके मुहपत्ति पडिलेहण करना
- ३ पिछे खडे होके दो वांदणा देना फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? इच्छं' कहके 'इच्छ आलोप्पमि जो मे राइओ अडआरो' सूत्र कहना.
- ४ फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् गमणागमणे आलोउं ? इच्छं' कहके गमणागमणे का पाठ कहना, पिछे 'सव्वस्सवि राइअ,' पाठ कहके (पन्यासजी हो तो दो वादणा देना, न हो तो) खमासमण देकर 'इच्छ-कार सुहराइ, अब्भुट्ठिओ सूत्र कहके फिर दो वांदणा देकर पच्चक्खाण करना.

## गमणागमणे का सूत्र.

इरिया समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, अदान भंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति यह पाँच समिति, तीन गुप्ति आठों प्रवचन माता अच्छी तरह पाली नहीं, पौषध सामायिक चारित्र में जो कुछ विराधना हुई हो, वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं ॥

### अथ पौषधमें शामकी पडिलेहण विधि

- १ प्रथम खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुपडिपुन्ना पोरिसि ? इच्छ.' फिर 'खमासमण' दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ? इच्छ. इच्छामिपडिक्कमिउं' कहके इरियावही से लोगस्स तक कहना. पिछे खमासमण दे के 'गमणागमणे आलोउं' का पाठ कहना.
- २ फिर खमासमण दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करु ? इच्छं' कह के फिर 'खमासमण' देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसहगाला प्रमार्जु ? इच्छं' कह के बैठ के मुहपत्ति पडिलेहण करना । पीछे चरवला, वेटका, कंदोर, धोती (उपवास किया हो तो मुहपत्ति, चरवला, कटासना ये तीन चीज और खाया हो तो पाचों ) पडिलेहण करना.



- ३ पिछे खमासमण देकर ( खाया हो तो ) इरियावही कर के और न खाया हो तो वैसे ही खमासमण देकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय कर के पडिलेहणा पडिले-हावोजी ? इच्छं' कह के (व्रतधारी का, या बडे आदमी का) एक उनी कपडा पडिलेहण करना
- ४ पिछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कह के मुहपत्ति पडिलेहना । फिर खमासमण दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? इच्छं' कह के एक नवकार मंत्र गीन के 'मन्नहजिणाणं' की सज्झाय कहना
- ५ फिर खाया हो तो वादणा देकर, न खाया हो तो वैसे ही खमासमण देकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय कर के पच्चवखाण की आज्ञा देनाजी' फिर पच्चवखाण करना
- ६ फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि संदिसाहुं ? इच्छं' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहुं ? इच्छं' कह के बाकी के सब पडिलेहन करना
- ७ पिछे काजा लेकर निर्जीव स्थान पर डाल कर खमासमण देना पिछे इरियावही से लोगस्स तक कह के देववंदन करना. (अत मे सज्झाय नहीं :

## रात्रि पौषधवालों को करने के मांडले.

यह छ मांडले सथारे के पास करने के हैं ।

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

२ अघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ।

३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे ।

५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे ।

( दाहिने हाथ मे चरवला रख, बांये हाथ तरफ  
फलिया रख, चरवला हिलाते रहना. )

यह छ मांडले उपाभय के द्वार के अदर करने के हैं ।

७ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ।

८ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।

९ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

१० आघाडे मज्झे पासवणे अहियासे ।

११ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

१२ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे ।

( दाहिने हाथ तरफ फलिया रहे ऐसे चरवला हिलाना )

यह छ मांडले उपाश्रय के द्वार के बाहर करने के हैं

१३ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१४ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ।

१५ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१६ अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे ।

१७ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१८ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे ।

( दाहिने हाथ के पिछे फलिया रहे वैसे चरबला हिलाना ) यह छ मांडले उपाश्रय से सौ हाथ के अदाज दूर करने के हैं ( बाये हाथ के पिछे फलिया रहे वैसे चरबला हिलाना )

१९ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२० अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।

२१ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२२ अणाघाडे मज्झे पासवणे अहियासे ।

२३ अणाघाडे दूर उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२४ अणाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ।

## पौषध पारने का सूत्र

सागरचंदो कामो, चंदवडिसो सुदसणो धन्नो ।

जेसि पोसह पडिमा अखंडिआ जीविअंते वि ॥ १॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ।

जास पसंसड भयवं, दढव्वयत्तं महावीरो ॥ २॥

पौषध विधि से लीया, विधि से पारा, विधि में कुछ अविधि आशातना हुइ वह सब मन वचन कायाएकरी मिच्छामि दुक्कडं

## रात्रि पौषधवालों के संधारा पोरिसी की विधि.

( रात को नौ बजे करना. )

१ खमासमण दे कर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुन्ना पोरिसी' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावद्वियं पडिकमामि इच्छं, इच्छामि पडिकमिउ, कह के इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह एक लोगस्स ( चंदेसु निम्मलयरातक ) या चार नवकार का काउस्सग कर के लोगस्स कहना । फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइअ संधारण ठामि ? इच्छं,' कह के 'चउकसाय' का चैत्यवन्दन, नमुत्थुण, जावति चेइआई, खमासमण देकर जावंत केवि साह, नणोऽहत्त, उवसग्गहरं और जय वीयराय कहना, फिर एक खमासमण देकर,

२ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, संधारा पोरिसि विधि यहने के लिये मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं,' कह के मुहपत्ति पडिलेहन कर के संधारा पोरिसीका पाठ नीचे मुताविक कहना.

### संधारा पोरिसी का पाठ.

निसीहि निसीहि निसीहि, नमो खमासमणाणं गोय-  
भाईण महामुणीणं ॥

( फिर नवकार, करेमि भंते, कह के फिर दूसरी वक्तउपर मुताविक 'निसीहि' का पाठ कहकर नवकार, करेमि भंते

सूत्र कह के फिर तीसरी ववत 'निसीहि' का पाठ उपर  
मुताबिक कह कर नवकार मंत्र, करेमि भंते कहना, इस तरह  
तीन वक्त कहना पीछे दूसरी गाथाएं नीचे मुताबिक कहना ॥  
अणुजाणह जिद्विज्जा ! अणुजाणह, परमगुरु !

गुरुगुण रयणेहि मडियसरीरा ! बहुपडिपुन्ना  
पोरिसी, राइय संधारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह संधारं, बाहुवहाणेणं वामपासेण ।

कुक्कुडि पायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥

सकोइभ संडासा, उव्वट्ठते अ कायपडिलेहा ।

दव्वाइ उवओगं, ऊसासनिरुंभणाऽऽलोए ॥ ३ ॥

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीय ।

आहार सुवहि देह, सब्ब तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

चत्तारि मगलं, अरिहंता मंगलं सिद्धा मगलं ।

साहू मंगल, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा ॥

साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो, धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि सरण पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि ।

सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,

केवलिपन्नत्तं धम्म सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं चोरिक्क मेहुणं दविणमुच्छं ।

कोहं माणं मायं लोभ पिज्ज तथा दोसं ॥ ८ ॥

कलहं अवभक्खाण, पेसुन्न रइ-अरइ समाउत्तं ।  
 परपरिणायं माया, -मोसं मिच्छत्तसल्ल च ॥ ९ ॥  
 वोसिरिष्ठु इमाइ, मुखमग्गसंसग्गविग्घभूयाइ ।  
 दुग्गइ-निबंधणाइ, अट्टारस पावठाणाई ॥ १० ॥  
 एगोऽह नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ।  
 एव अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ११ ॥  
 एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।  
 सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १२ ॥  
 संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।  
 तम्हा संजोगसम्बधं, सव्वं तिविहेण वोसिरअं ॥ १३ ॥  
 \*अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
 जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥  
 खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीरनिकाय ।  
 सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥  
 सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत ।  
 ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झ वि तेह खमंत ॥ १६ ॥  
 जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं ।  
 जं जं कायेण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

\* (तीन वक्त यह गाथा कहना और सात नवकार  
 गिनना पीछे नीचे की गाथाए कहना )

## पञ्चवखाणो.

### १ ॥ नमुक्कार सहिअं का पञ्चवखाण ॥

उग्गए सूरें नमुक्कार सहिअं, मुट्टिसहिअ पञ्चवखाइ चउ-  
व्विहं पि आहारं, असण पाण खाइमं साइम, अन्नत्थाभोगेण,  
सहसागारेण महत्तरागारेण, सब्वसमाहिवत्तिआगारेण-  
वोसिरइ.<sup>१</sup>

### २ ॥ पोरिसी साइढपोरिसीका पञ्चवखाण ॥

उग्गए सूरें, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुट्टि-  
सहिअं पञ्चवखाइ, उग्गए सूरें चउव्विह पि आहारं, असण  
पाण खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण,  
पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, महत्तरागारेण  
सब्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरइ.

### ३ ॥ पुग्गिड्ड अवड्ड का पञ्चवखाण ॥

सूरें उग्गए पुग्गिड्ड, अवड्ड मुट्टिसहिअं पञ्चवखाइ  
चउव्विहपि आहार असण, पाण, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-  
भोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवय-  
णेण, महत्तरागारेण, सब्वसमाहिवत्तिआगारेण, वोसिरइ.

१ पञ्चवखाण मे जहाँ पञ्चवखाइ शब्द आवे वहाँ पर  
पञ्चवखाण लेनेवाला मनमे पञ्चवखामि कहे

२ जहाँ पर वोसिरइ आवे वहाँ वोसिरामि कहे

## ४ ॥ एकासणा त्रिआसणा का पञ्चकखाण ॥

उगगए सूरें नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुट्टिसहिअ पञ्चकखाइ, उगगए सूरें चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइम, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, यच्छन्न कालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, विगइओ पञ्चकखाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेण उक्खित्तविवेगेण पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, त्रिआसणं पञ्चकखाइ (एकासणा करना हो तो एकासणं पञ्चकखाइ) त्रिविहंपि आहार असणं पाण खाइम साइमं अन्नत्थाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेण, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.

## ५ ॥ आयंवल का पञ्चकखाण ॥

उगगए सूरें, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्टिसहिअ, पञ्चकखाइ. उगगए सूरें चउव्विहंपि आहार, असणं पाण खाइमं, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंवलं पञ्चकखाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेण, उक्खित्तविवेगेण, पारिट्ठावणिया-



गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं  
 पच्चवक्खाइ तिविहंपि आहारं, असण, खाइमं, साइमं, अन्नत्थ-  
 णाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं,  
 गुरुअब्भुट्टाणेण, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्व-  
 समाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण  
 वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ

### ६ ॥ तिविहार उपवास का पञ्चवक्त्राण ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चवक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं,  
 खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणिया-  
 गारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार  
 पोरिसिं, साढ पोरिसि, पुरिमइठं मुट्टिसहिअ पच्चवक्खाइ, अन्न-  
 त्थणाभोगेण, सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण, साहु-  
 वयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण । पाणस्स  
 लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण  
 वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ॥

### ७ ॥ चौविहार उपवास का पञ्चवक्त्राण ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चवक्खाइ, चउत्विहंपि आहारं  
 असणं, पाण, खाइम, साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं  
 पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं  
 वोसिरइ.

## ८ ॥ पाणहार का पञ्चक्खाण ॥

पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं परिमुइढ मुद्विसहियं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण । पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वोसिरइ.

## शामका पञ्चक्खाणे

### १ ॥ पाणहार का पञ्चक्खाण ॥

पाणहार दिवस चरिम पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ,

### २ ॥ चौविहार का पञ्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहार, असणं, पाणं, खाइम साइम, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ

### ३ ॥ तिविहार का पञ्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ.

### ४ ॥ दुविहार का पञ्चकखाण ॥

दिवस चरिम पञ्चकखाइ दुविहपि आहारं, असणं, खाइमं  
अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण सव्वसमा-  
हिवत्तियागारेण वोसिरइ

### ५ ॥ देसावगासिक का पञ्चकखाण ॥

देसावगासियं उवभोगं परिभोगं पञ्चकखाइ, अन्नत्थ-  
णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ.

### ६ ॥ अभिग्रह का पञ्चकखाण ॥

अभिग्रहं पञ्चकखाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,  
महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ.

## चैत्यवंदन—संग्रह

### १ श्री आदिनाथजिन चैत्यवंदन

प्रथम नमुं श्री आदिनाथ, शत्रुञ्जयगिरि सोहे;  
नाभिराया मरुदेवी नंद, त्रिभुवन मन मोहे ॥१॥  
लाख चोराशी वरस आयु, सुवर्ण समकाय;  
राणी सुनंदा सुमगळा, तस कंत सोहाय ॥२॥  
लंछन वृषभ विराजतो ए, धनुष पाचसे देह;  
विनिता नगरीनो धणी, रूप कहे गुणगेह ॥३॥

## २. श्री महवोरस्वामीनुं चैत्यवंदन,

सिद्धारथ सुत वदीए, त्रिशलानो जायो;  
 क्षत्रियकुंडमा अवतर्यो, सुरनरपति गायो ॥१॥  
 मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय;  
 बहोतेर वर्षनुं आउखुं, श्री वीर जिनेश्वरराय ॥२॥  
 क्षमाविजय जिन राजना ए, उत्तम गुण अवदात;  
 सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥३॥

## ३. श्री सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन,

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो;  
 करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥१॥  
 सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;  
 भवोभव हूं छुं ताहरो, नहि मेळुं हवे साथ ॥२॥  
 सयल संग छंडी करी, चारित्र लेईशु;  
 पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं ॥३॥  
 ए अळजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;  
 इहा थकी हु विनवु, अवधारो मुज सेव ॥४॥  
 कर जोडी ऊभो रहु सामो रही ईशान ।  
 भाव जिनेश्वर भाणने देजो समकित दान ॥५॥

## ४. श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

श्री शत्रुजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे;  
 भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार उतारे ॥१॥  
 अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय,  
 पूर्व नवाणुं रीखवदेव, ज्या ठवीया प्रभु पाय ॥२॥

सूरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम;  
नाभिराया कुळ मडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

### ५. श्री सिद्धोचलजीनुं चैत्यवन्दन

विमल केवल ज्ञान कमळा, कलित त्रिभुवन हितकर;  
सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वर ॥१॥  
विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुण गण भूधर;  
सुर असुर किन्नर कोडि सेवित; नमो आदि जिनेश्वरं ॥२॥  
करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं;  
निर्जरावली नमे अर्हनिश, नमो आदि जिनेश्वर ॥३॥  
पुंडरीक गणपति सिद्धि साथी, कोडी पण मुनि मनहरं,  
श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्ध्या, नमो आदि जिनेश्वरं ॥४॥  
निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोटीअनत ए गिरवरं;  
मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वर ॥५॥  
पाताळ नर सुर लोकमाहि, विमल गिरिवर तो पर;  
नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं ॥६॥  
विमळ गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहडण व्याइए;  
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइए ॥७॥  
जित मोह काहे विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकर;  
गिरिराज सेवा करण तत्पर, पञ्चविजय सुहितकर ॥८॥

### ६. श्री पर्युषण पर्वनुं चैत्यवन्दन

नय चौमासी तप कर्या, त्रण मासी दोय,  
द्वोय दोय अढीमासी तेम, दोढ मासी होय ॥१॥

बहोनेर मासक्षमण कर्या, मासखमण कर्या बार;  
 षड्द्विमासी तप आदर्या, बार अठम तप सार ॥ २ ॥  
 षड्मासी एक तप कर्यो, पचदिन उण षट्मास;  
 वसो ओगणत्रीश छट्ठ भला, दिक्षा दिन एक खास ॥ ३ ॥  
 भद्र प्रतिमा दोय भली, महाभद्र दिन चार;  
 दश सर्वतोभद्रना, लागट निरधार ॥ ४ ॥  
 विण पाणी तप आदर्यो, पारणादिक जास;  
 दवाहारे पारणा कर्या, त्रणसो ओगणपचाश ॥ ५ ॥  
 छन्नस्थ एणीपरे रखा ए, सखा परीसह घोर;  
 शुक्लध्यान अनले करी, बाळ्या कर्म कठोर ॥ ६ ॥  
 शुक्लध्यान अंते रखा ए, पाण्या केवलज्ञान;  
 पद्मविजय कहे प्रणमता, लहीए नित्य कल्याण ॥ ७ ॥

### ७ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व चिंतामणीयते;  
 ह्रीं धरणेंद्र वैरोट्या, पद्मादेवी युताय ते ॥ १ ॥  
 शांति तुष्टि, महा पुष्टि, धृति कीर्ति विधायिने,  
 ॐ ह्रीं द्विह्रव्याल वैताल, सर्वाधि व्याधि नाशिने ॥ २ ॥  
 जया जिताख्या विजया,—ख्यापराजतयान्वितः;  
 दिशांपालैर्ग्रहै र्यक्षै, विद्यादेवी—भिरन्वितः ॥ ३ ॥  
 ॐ असिया उसाय उसाय नम, स्तत्र त्रैलोक्य नाथतां:  
 चतुष्पष्टिः सुरेद्रास्ते, भासंते छत्र चामरैः ॥ ४ ॥

श्री शखेश्वर मंडन पार्श्वजिन, प्रणत कल्प तरु कल्प;  
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय मे वांछि तं नाथ ॥ ५ ॥

### ८ सामान्य जिन चैत्यवंदन

तुज मूरतिने निरखवा, मुज नयणा तरसे;  
तुज गुणगणने बोलवा, रसना मुज हरसे ॥ १ ॥  
काया अति आनंद मुज, तुम युग 'पद' फरसे;  
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरशे? ॥ २ ॥  
एम जाणीने साहिवा ए, नेक नजर मोहि जोय:  
ज्ञानविमल प्रभु (सु)नजरथी, ते शुं जे नवि होय ? ॥ ३ ॥

## स्तुति संग्रह

### १. श्री सिद्धचक्रनी स्तुति

अह ऊठी वंदुं, सिद्धचक्र सदाय,  
जपीए नवपदनो, जाप सदा सुखदायः;  
विधि पूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाळ,  
ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥  
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत,  
तस कर्म संयोगे, कोढी मळीयो कंत,  
गुरु वयणे तेणे आराध्यु तप एह,  
सुख संपदा वरीया, तरीया भवजल तेह ॥ २ ॥

आंवील नै उपवास, छट्ट बळी अट्टम,  
 दस, अट्टाई, पंदर, मास छ मास विशेष;  
 इत्यादिक तप बहु, सहुमांढि शिरदार,  
 जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥  
 तप सांनिध्य करशे, श्रीविमलेश्वर यक्ष;  
 सहु संघना संकट, चूरे थह प्रत्यक्ष;  
 पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,  
 बुद्ध दर्शन विजय कहे, पहाँवे सकळ जगीश ॥ ४ ॥

## २. आदिनाथ स्वामीकी स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोचन्न काया,  
 मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया;  
 जगत् स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,  
 केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ॥ १ ॥  
 सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,  
 दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी;  
 श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,  
 नमिये नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥  
 समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा,  
 करे गणप पइहा, इंद्र चंद्रादि दीठा;  
 डादशागी वरिहा, गुंथता टाळे रिहा,  
 भविजन होय रिहा, देखी पुन्ये गरिहा ॥ ३ ॥



શ્રી શેશશ્વર મંડન પાર્શ્વજિન, પ્રણત કલ્પ તરુ કલ્પ;  
ચૂરય દુષ્ટ વ્રાતં, પૂરય મે વાંછિ તં નાથ ॥ ૫ ॥

## ૮ સામાન્ય જિન ચૈત્યવંદન

તુજ મૂરતિને નિરખવા, મુજ નયણા તરસે;  
તુજ ગુણગણને વોલવા, રસના મુજ હરસે ॥ ૧ ॥  
કાયા અતિ આનંદ મુજ, તુમ યુગ પદ ફરસે;  
તો સેવક તાર્યા વિના, કહો કિમ હવે સરશે? ॥ ૨ ॥  
સમ જાણીને સાહિવા એ, નેક નજર મોહિ જોય;  
જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ (સુ)નજરથી, તે શું જે નવિ હોય ? ॥ ૩ ॥

## સ્તુતિ સંગ્રહ

### ૧. શ્રી સિદ્ધચક્રની સ્તુતિ

અહ ઝઠી વંદું, સિદ્ધચક્ર સદાય,  
જપીએ નવપદનો, જાપ સદા સુખદાય;;  
વિધિ પૂર્વક એ તપ, જે કરે થઈ ઉજમાલ,  
તે સવિ સુખ પામે, જિમ મયણા શ્રીપાલ ॥ ૧ ॥  
માલવપતિ પુત્રી, મયણા અતિ ગુણવંત,  
તસ કર્મ સંયોગે, કોઢી મઠીયો કંત,  
ગુરુ વયળે તેણે આરાધ્યું તપ એહ,  
સુખ સંપદા વરીયા, તરીયા ભવજલ તેહ ॥ ૨ ॥

आंवील ने उपवास, छट्ट वळी अट्टम,  
 दस, अट्टाइ, पंदर, मास छ मास विशेष;  
 इत्यादिक तप बहु, सहुमाहि शिरदार,  
 जे भविषण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥  
 तप सांनिव्य करशे, श्रीविमलेश्वर यक्ष;  
 सहु संधना संकट, चूरे थह प्रत्यक्ष;  
 पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,  
 बुद्ध दर्शन विजय कहे, पहींवे सकळ जगीश ॥ ४ ॥

## २. आदिनाथ स्वामीकी स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया,  
 मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया;  
 जगत् स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,  
 केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ॥ १ ॥  
 सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,  
 दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी;  
 श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,  
 नमिये नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥  
 समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा,  
 करे गणप पइट्टा, इंद्र चंद्रादि दीठा;  
 द्वादशांगी वरिद्धा, गुंथतां टाळे रिद्धा,  
 भविजन होय हिद्धा, देखी पुन्ये गरिद्धा ॥ ३ ॥

सुर समकितवता, जेह ऋद्धे महंता,  
 जेह सज्जन संता, टालिये मुज चिंता;  
 जिनवर सेवता, विघ्न वारे दूरंता,  
 जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिता ॥ ४ ॥

### ३ श्री शान्तिनाथ जिन स्तुति

बंदो जिन शान्ति, जास सोवन्न कांति,  
 टाळे भव भ्राति, मोह मिथ्यात्व शाति;  
 द्रव्य भाव अरि पाति, तास करता निकांति,  
 धरता मन खाति, शोक संताप वाति ॥ १ ॥  
 दोय जिनवर नीला, दोय धोळा सुशीला,  
 दोय रक्त रंगीला, काढता कर्म कीला;  
 न करे कोइ हीला, दोय श्याम सलीला,  
 सोळे स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २ ॥  
 जिनवरनी वाणी, मोह-बल्ली-कृपाणी,  
 सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी;  
 अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी,  
 प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निसानी ॥ ३ ॥  
 वागीश्वरी, देवी, हर्ष हियडे धरेवी,  
 जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी,  
 जे नित्य समरेवी, दुःख तेहना हरेवी,  
 पद्म विजय कहेवी, भव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥

## ४. श्री नेमिनाथ जिननी स्तुति

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी;  
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी,  
पशुभा उगारी, हुआ चारित्र धारी,  
केवल सिरी सारी, पामीआ घाती वारी ॥ १ ॥

व्रण ज्ञान संयुता, मातनी कुखे हुंता;  
जनमे पुरुहुता, आवी सेवा करंता;  
अनुक्रमे व्रत धरंता, पंच समिति धरंता;  
महीयल विचरंता, केवलश्री वरंता ॥ २ ॥

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,  
त्रिगडु सोहावे, देवछंदो बनावे;  
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे,  
तिहा जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ॥ ३ ॥

शासन सुरी सारी, अंबिका नाम धारी,  
जे समकिती नरनारी, पाप संताप वारी;  
प्रभु सेवाकारी, जाप जपीये सवारी,  
संघ दुरित निवारी पद्मने जेह प्यारी ॥ ४ ॥

## ५. श्री पार्श्वनाथ भगवाननी स्तुति

भीलडीपुर मंडन, सोहीए पार्श्व जिणंद,  
तेने तमे पूजो, नरनारीना वृद्ध;

धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;  
सहु सधनां सकट चूरती, नयविमळनां वाछित पूरती ॥४॥

### ७ श्री पर्युषण पर्वनी स्तुति

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पर्युषण पामीजी,  
कल्प घरे पधरावो शामी, नारी कहे शिर नामीजी;  
कुंवर मयवर खंख चडावी, ढोल निशान वजडावोजी,  
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥  
प्रथम बखाणे धर्म सारथी पद, बीजे सुपनां चारजी,  
बीजे सुपन पाठक वळी चोथे, वीर जन्म अधिकारजी;  
पाचमे दीक्षा छट्टे शिवपद, सातमे जिन जेवीसजी,  
आठमे थीरावळी सभळावी, पीउडा पुरो जगीशज ॥ २ ॥  
छट्ट अठ्ठम अट्टाइ कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,  
वरसी पडिकपणुं मुनिवंदन, सध सयल खामीजेजी  
आठ दिवस लगे अमर पळावी, दान सुपाजे दीजेजी,  
भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥  
तीरथमा विमळाचल गिरिमा, मेरु महीधर जेमजी  
मुनिवर माही जिनवर मोटा, पर्व पर्युषण तेमजी;  
अवसर पामी स्वामी वच्छल, बहु पक्वान वडाइजी,  
खीमाविजयजिनदेवीसिद्धाइ, दिनदिन अधिक वधाइजी ॥४॥

### ८ श्री पर्युषण पर्वनी स्तुति

मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार,  
पर्युषण करो, महिमा अगम अपार,

निज मुखथी दाखी, साखी सुरनर वृंद,  
 ए पर्व पर्वमा, जेम तारामां चंद ॥ १ ॥  
 नागकेतुनी परे, कल्प साधना कीजे,  
 व्रत नियम आखडी, गुरु मुख अधिकी लीजे,  
 दोय भेदे पूजा, दान पच प्रकार,  
 कर पडिकमणां धर. शीयल अखंडित धार ॥ २ ॥  
 जे त्रिकरण शुद्धे, आराधे नव वार,  
 भव सात आठ नव, शेष तास संसार,  
 सहु सूत्र शिरोमणी, फल्पसूत्र सुखकार,  
 ते श्रवण सुणीने, सफळ करो अवतार ॥ ४ ॥  
 सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणा कीजे,  
 करी साहमी वत्सल, कुगति द्वार पट दीजे,  
 अट्टाड महोत्सव, जिदानंद चित्त लायी,  
 एम करता संघने, शासन देवी सहायी ॥ ४ ॥

## स्तवन संग्रह

### १ श्री कृष्णभदेव स्वामीनुं स्तवन

जगजीवन जगवाल्हो, मरुदेवीनो नंद लालरे;  
 मुख ठीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लालरे. जग० १  
 आखडी अंबुज पाखडी, अष्टमी शशि सम भाल लालरे;  
 वदन ते शारद चदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे. जग० २

लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहस उदार लालरे  
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे. जग० ३  
इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लही घडीयुं अंग लालरे,  
भाग्य किहा थकी आवीयुं, अचरिज एव उत्तम लालरे. जग० ४  
गुण सबळा अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे,  
वाचक यशत्रिजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लालरे. जग० ५

## २ श्री नेमिनाथ जिन स्तवन

आनंदका डंका दुनियामे, बजवा दिया नेमि वालेने,  
ब्रह्मचर्य पराक्रम यादवमे, बतला दिया नेमि वालेने;  
प्रभु आयुधशालामे जा फरके, पचायन शंखको पूर दिया,  
सुनतेही गिरधर आन खडे, बजवा दिया नेमि वालेने आ० १  
श्री नेमिके बलको देखनको, श्रीकृष्णने लंबा हाथ किया,  
गोपीयनके सन्मुख गिरधरको, शर्मा दिया नेमि वालेने. आ. २  
फिर जान चढी आडंबरसे, तोरण से रथ को फेर दिया;  
पशुअनके कारण राजुलको, छटका दिया नेमि वालेने आ. ३  
दीक्षाका अग्रसर जान प्रभु, निज मातपितादि को समझाया;  
एक वर्ष लगे दान काचनका, दिलवा दिया नेमि वालेने. आ. ४  
एक सहस्र पुरुष सग सजम ले, सर्वज्ञ पदको प्राप्त किया;  
कर्मोंका लश्कर जीत लीया, शिवपदका नेमि वालेने आ० ५  
पृथ्वीतलको पावन करके, प्रभु शाश्वत सुखको प्राप्त किया;  
परतिरिया परधन नहीं लेना, फर्मा दिया नेमि वालेने. आ० ६

### ૩ શ્રી પાર્શ્વનાથ જિન સ્તવન

અંતરજામી સુણ અલવેસર, મહિમા ત્રિજગ તુમારો,  
 સામઝીને આવ્યો હું તીરે, જનમ મરણ દુઃખ વારો;  
 સેવક અરજ કરે છે રાજ, અમને ગિવ સુર આપો,  
 આપો આપોને જિનરાજ, અમને મોક્ષ સુખ આપો. ૧

સહુકોના મનવાહિત પૂરો, ચિંતા સહુની ચૂરો,  
 ઇહવું વિરુદ્ધ છે રાજ તમારું, કેમ રાખો છો દૂરે. સેવક ૨

સેવકને લલલતો દેખી, મનમા મહેર ન ધરશો,  
 કરુણા સાગર કેમ કહેવાશો, જો ઉપકાર ન કરાશો. સેવક ૩

લટપટનું હવે કામ નહિ છે, પ્રત્યક્ષ દરિશન દીજે,  
 ધુંઆઢે ધીજી નહિ સાહિવ, પેટ પડ્યા પતીજે સેવક ૪

શ્રી શંખેશ્વર મહન સાહિવ દિનતહી અવધારો,  
 કહે જિન હર્ષ મયા કરી મુજને. ભવસાયરથી તારો સેવક ૫

### ૪ શ્રી મહાવીર સ્વામીનું સ્તવન

ગિરુઆરે ગુણ તુમ તળા, શ્રી વર્દમાન જિનરાયારે,  
 સુણતા શ્રવણે અમી જ્ઞરે, મહારી નિર્મલ થાઈ કાચારે. ગિરુ ૧

તુમ ગુણ ગણ ગંગાજલે, હું જીલીને નિર્મલ થાઉરે,  
 અવર ન ધંધો આદરુ, નિશદિન તોરા ગુણ ગાઉરે ગિરુ ૨

જીલ્યા જે ગંગાજલે, તે છીલ્લર જલ નવિ પેસે રે;  
 જે માલતી ફૂલે મોહીયા, તે વાવલ જડ નવિ વેસેરે ગિરુ ૩



એમ અમે તુમ ગુણ ગોઠશું, રંગે રાચ્યાને વઢી માચ્યારે,  
તે કેમ પર સુર આદરે ! જે પરનારી વશ રાચ્યારે. ગિરુ૦ ૪  
તું ગતિ તું મતિ આશરો, તું આલંબન મુજ પ્યારોરે,  
વાચક યશ કહે માહરે, તું જીવ જીવન આધારોરે ગિરુ૦ ૫

## ૫ શ્રી સીમંધર સ્વામીનું સ્તવન

સુળો ચંદાજી, સીમંધર પરમાત્મ પાસે જાજો,  
મુજ વિનતહી પ્રેમ થરીને, એની પેરે તુમે સંમળાવજો,  
જે ત્રણ ભુવનના નાયક છે, જસ ચોસઠ ઈંદ્ર પાયક છે,  
નાળ દરિસણ જેહને ધ્યાયક છે સુળો૦ ૧  
જેની કંચનવરણી કાયા છે, જસ ધોરી લંછન પાયા છે,  
પુંડરીગિણી નગરીનો ગયા છે. સુળ૦ ૨  
વાર પરપદામાહી વિરાજે છે, જરા ચોત્રીસ અતિશય છાજે છે,  
ગુણ પાત્રીસ વાળીયે ગાજે છે. સુળો૦ ૩  
ભવિજનને જે પહિવોહે છે, તુમ અધિક શીતલગુણ સોહે છે,  
રૂપ દેહી ભવિજન મોહે છે. સુળો૦ ૪  
તુમ સેવા કરવા રસિયો છું, પળ ભરતમાં દૂરે વસીયો છું;  
મહા મોહરાય કર ફસિયો છું સુળો૦ ૫  
પળ સાહિવ ચિત્તમા ધરીયો છે, તુમ આળા યદગ કર ગ્રહીયો છે  
તો કાઢક મુજથી ડરીયો છે. સુળો૦ ૬  
જિન ઉત્તમ પુંઠ હવે પૂરો, કહે પદ્મવિજય થાડું શરો,  
નો વાધે મુજ મન અતિ નૂરો સુળો૦ ૭

## ६ श्री सीमंधर स्वामीनुं स्तवन

पुक्खलवई विजये जयोरे, नयरी पुंडरीगिणी सार,  
 श्री सीमंधर साहेवा रे, राय श्रेयास कुमार,  
 जिणंदराय धरजो धर्म स्नेह. १  
 मोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत,  
 शशी दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत. जिणंद० २  
 ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जळधार,  
 कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आभार. जिणंद० ३  
 राय ने रंक सरिखा गजे रे, उद्योते शशी शूर,  
 गंगाजळ के विहुं तण। रे, ताप करे सवि दर जिणंद० ४  
 सरिखा सहुने तारवा रे, तेम तुमे छो महाराज,  
 मुजशुं अंतर केम करो रे ? बाह्य ग्रहानी लाज जिणंद० ५  
 मुख देखी टीळुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण,  
 मुजरो माने सवि तणो रे, साहिव तेह सुजाण. जिणंद० ६  
 वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणीकंत,  
 वाचकयश एम विनवे रे, भय भंजन भगवंत. जिणंद० ७

## ७ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन

सिद्धाचळगिरि भेटया रे, धन्य भाग्य हमारा,  
 ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता न आवे पारा,  
 रायण ऋषभ समोसया स्वामी, पूरव नवाणुं वारा रे धन्य० १  
 मूळ नायक श्री आदि जिनेश्वर, चउमुख प्रतिमा चार,  
 अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूळ आधारा रे धन्य० २

भाव भक्तिशुं प्रणु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा;  
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यच वारारे धन्य ३  
दूर देशातरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा,  
पतित उद्धारण विरुद तमारुं, ए तीरग जग सारारे. धन्य० ४  
संवत अठार त्यासी मास आपाढे, वदि आठम भोमवार;  
प्रभुजीकेचरणे प्रतापके संघमें, खिमारतनप्रभुप्यारारे धन्य० ५

## ८ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन

ओ भवि प्राणीरे सेवो, सिद्धचक्र ध्यान समो नहि मेवो;  
जे सिद्धचक्रने आराधे, तेनी किरती जगमा वाधे. ओ० १  
पहेले पदे रे अतिहंत, वीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत,  
त्रीजे पदे रेस्सरोश्वर, चोथे उाज्झाय ने पांचमे मुनीश ओ. २  
छद्दटे दरिशन कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे;  
आठमे चारित्र पाळो, नवमे तपथी मुक्ते जावो ओ० ३  
ओळी आंचेलनी कीजे, नवकारवाळी वीश गणीजे;  
त्रणे टंकना रे देव, पळेण पडिकमणां आवेल ओ० ४  
गुरु मुख किरियारे कीजे, देवगुरु भक्ति चित्तमा धरीजे,  
एम रुहे रामनो शिष्य, ओळी उजवजो जगीश ओ० ४

## ९ श्रीदिवाळी पर्वनु स्तवन

मारे दिवाळीरे थइ आज, प्रभु मुख जोवाने,  
सर्पा सर्पा रे सेवकना राज, भवदुःख खोवाने;

महावीर स्वामी मुगते पहोंच्या, गौतम केवळज्ञान रे;  
 धन्य अमावास्या धन्य दिवाळी, महावीर प्रभुनिरवाण, जिन० १  
 चारित्र पाळी निरमळुरे, टाळ्या विषय कषाय रे;  
 एवा मुनिने वंदीए जे. ऊतारे भवपार जिन० २  
 बाकुळा बहोर्या वीरजिने, तारी चंदनवाळुरे;  
 केवळ लई प्रभु मुगते पहोंच्या, पास्या भवनो पार, जिन० ३  
 एवा मुनिने वंदीए जे, पंच ज्ञानने धरता रे,  
 समवसरण देड देगना प्रभु, तार्या नर ने नार, जिन० ४  
 चौवीगमा जिनेश्वरु ने मुक्ति तणा दातार रे;  
 करजोडी कवि एम भणे प्रभु, दुनिया फेरो टाळ. जिन० ५

## १० श्रीपर्युषण पर्वनुं स्तवन

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे,  
 तमे पुन्य करो पुन्यवंत भविक मन भाव्या रे;  
 वीर जिनेसर अति अलवेत्तर, वाला मारा परमेश्वर एम बोले रे.  
 पर्वमाहे पजुसण म्होटा, अजर न आवे तस तोळेरे पजु० १  
 चौपदमा जेम केसरी मोटो, वाला० खगमा गरुड तै कहीए रे,  
 नदीमाहे जेम गंगा मोटी, नगमा मेरु लहोए रे पजु० २  
 भूपतिमां भरतेसर माख्यो, वाला० देवमाहे सुर इन्द्र रे;  
 तीरथमा जेवु जो दाख्यो, ग्रहगणमा जेम चंद्ररे. पजु० ३  
 दवारा दिवाळी ने वळी होळी, वाला० अखात्रीज दीवासोरे;  
 बळेव प्रमुख बहुलाछेबीजा, पणनहिमुक्तिनोवासोरे. पजु० ४

ते मांटे तमे अमर पळावो, वाला० अट्टाइ महोत्सव कीजेरेः  
 अट्टम तप अधिकाए करीने, नरभव लाहो लीजेरे पजु० ५  
 ढोल ददामा भेरी नफेरी, वाला० कल्पसूत्रने जगावोरे०ः  
 झांझरना झमकार करीने, गोरीनी ठोळी मळी आवोरे. पजु० ६  
 सोनारूपाने फूलडे वधावो, वाला० कल्पसूत्रने पूजो रे :  
 नळ वखाण विधिण साभलता, पाप मेवासी ध्रजेरे पजु० ७  
 एम अट्टाइ महोत्सव करता, वाला. बहु जीव जग उद्धरियारे,  
 विबुद्ध विमळवर मेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धिसिद्धि वरीयारे...

## सज्जाय संग्रह

### १. बाहुवलीनी सज्जाय.

राज तणारे अति लोभीया, भरत बाहुवली झुझे रे,  
 मुठी उपाडीरे मारवा, बाहुवली प्रतिबूझे रेः  
 वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढे केवळ न होय रे. १  
 ऋषभ जिनेश्वरे मोकली, बाहुवलीनी पासे रे,  
 वीरा मोरा गज थकी उतरो, ब्राह्मी सुंदरी इम भाषे रे. वीरा. २  
 लोच करी चारित्र लीओ, वळी आयो अभिमानो रेः  
 लघु बंधव वांदुं नहीं, काउस्सग्न रखा शुभ ध्यानो रे. वीरा० ३  
 वरस दिवस काउस्सग्न रखा, वेलडीये वींटाणा रेः  
 पसीये माळा घालिया, ताप शीते सूकाणा रे वीरा० ४

साधवी वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मोझारो रे:  
 हय गय रथ सह परिहर्या, वळी आव्यो अहंकारो रे वीरा० ५  
 वैरागे चित्त वाळीयो रे, मूकी निज अभिमान रे;  
 पग उपाड्यो रे वादवा, उपन्युं केवल ज्ञान रे वीरा० ७  
 पहोता केवळी परखदा, बाहुवळी ऋषिराया रे;  
 अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वन्दे पाया रे. वीरा० ७

## २ प्रसन्नचद्रमुनिनी सञ्ज्ञाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय,  
 राज छोडी रळीआमणुं रे, जाणी अधिर संसार,  
 वैरागे मन वाळीयुं रे, लीयो संजम भार. प्रसन्न० १  
 शमशाने काउस्सग्न रही रे, पग उपर पग चढाय,  
 बाहु वे उंचा करी रे, खरज सामी दृष्टि लगाय. प्रसन्न०  
 दुर्मुख दत्त वचन सुणी रे, कोप चढ्यो तत्काल:  
 मनशुं संग्राम माडीयो रे, जीव पड्यो जंजाळ. प्रसन्न० २  
 श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय:  
 भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न० ४  
 क्षण एक आतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थ सिद्ध विमान,  
 वाजी देवनी दुन्दुभी रे, मुनि पाभ्या केवळज्ञान. प्रसन्न० ५  
 मननी जीते जीतुं रे, मननी हारे हार,  
 मन लइ जावे मोक्षमा रे, मन हीय नरक मोझार. प्रसन्न० ६

प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य;  
रूपविजय कहे धन्य धन्य, जोया शास्त्र प्रत्यक्ष. प्रसन्न० ७.

### ३ विनयनी सज्जाय

पत्रयणदेवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार,  
जंबूने पूछये कह्योजी, श्री सोहम गणधार,  
भविकजन विनय वही सुखकार. १  
पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्ताराध्ययन मझार,  
सधळा गुणमा मूलगोजी, जे जिनशासन सार. भवि० २  
नाण विनयथी पामीएजी, नाणे दरिसण शुद्ध,  
चारित्र दरिसणथी हुएजी, चारित्रथी पूर्ण सिद्ध. भवि० ३  
गुरुनी आज्ञा सदा धरेजी, जाणे गुरुनो भाव,  
विनयवंत गुणरागीओजी, ते मुनि सरल स्वभाव, भवि० ४  
कणनुं कुंडं परिहरोजी विष्टाशुं मन राग,  
गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग. भवि० ५  
कोह्या काननी कुतरीजी, ठाम न पामीरे जेम,  
शीले हीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम भवि० ६  
चंढणी पेरे उजल्लीजी किरती तेह लहंत,  
विषय कपाय जीती करोजी, जे नर शील वहंत, भवि० ७  
विजयदेव गुरु पाटवीजी, श्री विजयसिंह सुरींद,  
गिण्य उदय वाचक मणेजी, वियय सयल सुखकंद भवि० ८

साधवी वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मोझारो रे;  
 हय गय रथ सहु परिहर्या, वळी आव्यो अहंकारो रे वीरा० ५  
 वैरागे चित्त वाळीयो रे, मूकी निज अभिमान रे;  
 पग उपाड्यो रे वादवा, उपन्युं केवल ज्ञान रे वीरा० ७  
 प्यहोता केवळी परखदा, बाहुवळी ऋषिराया रे;  
 अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वन्दे पाया रे. वीरा० ७

## २ प्रसन्नचद्रमुनिनी सज्ज्ञाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय,  
 राज छोडी रळीआमणुं रे, जाणी अधिर संसार,  
 वैरागे मन वाळीयुं रे, लीयो संजम भार. प्रसन्न० १  
 गमशाने काउस्सग रही रे, पग उपर पग चढाय,  
 बाहु बे उंचा करी रे, सूरज सामी दृष्टि लगाय, प्रसन्न०  
 दुर्मुख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो तत्काल;  
 मनशुं संग्राम माडीयो रे, जीव पड्यो जंजाळ. प्रसन्न० २  
 श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय;  
 भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न० ४  
 क्षण एक आतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थ सिद्ध विमान,  
 बाजी देवनी दुन्दुभी रे, मुनि पाभ्या केवळज्ञान. प्रसन्न० ५  
 मननी जीते जीतुं रे, मननी हारे हार,  
 मन लइ जावे मोक्षमा रे, मन हीय नरक मोझार. प्रसन्न० ६



प्रसन्नचंद ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य;  
रूपविजय कहे धन्य धन्य, जोया शास्त्र प्रत्यक्ष. प्रसन्न० ७.

### ३ विनयनी सज्ज्ञाय

पवयणदेवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार,  
जंवूने पूछये कह्योजी, श्री सोहम गणधार,  
भविकजन विनय वहो सुखकार. १

पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्ताराध्ययन मझार,  
सधळा गुणमा मूलगोजी, जे जिनशासन सार. भवि० २

नाण विनयथी पामीएजी, नाणे दरिसण शुद्ध,  
चारित्र दरिसणथी हुएजी, चारित्रथी पूर्ण सिद्ध. भवि० ३

गुरुनी आज्ञा सदा धरेजी, जाणे गुरुनो भाव,  
विनयवंत गुणरागीओजी, ते मुनि सरल स्वभाव, भवि० ४

कणनुं कुंडूं परिहरीजी विष्टाशुं मन राग,  
गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग. भवि० ५

कोह्या काननी कुतरीजी, ठाम न पामीरे जेम,  
शीळे हीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम भवि० ६

चंद्रतणी पेरे उजळीजी किरती तेह लहंत,  
विषय कपाय जीती करोजी, जे नर शील वहंत, भवि० ७

विजयदेव गुरु पाटवीजी, श्री विजयसिंह सुरींद,  
शिष्य उदय वाचक मणेजी, विषय सयल सुखकंद भवि० ८

## ४ मन भमरानी सज्जाय

भूल्यो मन भमरा तुं क्या भम्यो, भम्यो दिवस ने रात,  
 मायानो बाध्यो प्राणीओ, भमे परिमल जात. भूल्यो० १  
 कुंभ काचोरे काया कारमी, तेनो करोरे जतन्न,  
 विणसतां वार लागे नहीं, निर्मल राखोरे मन्न. भूल्यो० २  
 केना छोरु ने केना काछरु, केना माय ने बाप,  
 अन्त समय जाशे एकलो, साथे पुण्य ने पाप. भूल्यो० ३  
 आशा तो डुगर जेवडी, मरवुं पगलारे हेठ,  
 धन संची संची काइ करो, देहनी बेठ. भूल्यो० ४  
 धन्धो करी धन जोडीयो, लाखो उपर क्रोड,  
 मरतानी वेळा मानवी, लीधो कंदोरो छोड, भूल्यो० ५  
 मुख कहे धन माहरो, धोके धान न खाय,  
 वस्त्र विना जइ पोढवुं, लखपति लाकडा माय, भूल्यो० ६  
 उवट मारग चालता, जावुं पेलेरे पार,  
 आगळ हाट न वाणीयो, शंबल लेजोरे सार. भूल्यो० ७  
 परदेशी परदेशमे, कुणशुं करोरे स्नेह,  
 आया कागळ उठचल्यो, न गणे आधी ने मेह. भूल्यो० ८  
 केइ चाल्या ने चालशे, केइ चालणहार,  
 केइ वेठारे बुढा बापडा, जाये नरक मझार. भूल्यो० ९  
 जिण घर नोवत वागती, थाता छत्रीस राग,  
 खंडेर थइ खात्मी पड्या, बेठण लाठ्ठा छे काग. भूल्यो० १०

भमरो आव्योरे कमळमां, लेवा कमळनुं नूर,  
कमलनी बांछाए मांहे रवो, जिम आथमते खर. भूल्यो० ११  
सद्गुरु कहे वस्तु वगोरियेरे, जे कोइ आवे रे साय;  
आपणो व्हाभ उगारीये, लेखुं साहिव हाथ. भूल्यो० १२

## छंद-संग्रह

### १. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन छंद

(राग प्रभातो)

पास शंखेश्वरा मार कर सेवका, देव का एवढो वार लागे;  
कोडीकर जोडी दरवारआगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मानमागे. १  
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोडअसुराननेआप छोडो;  
मुज महिराण मंजुसमा पेसोने, खलकना नाथजीबंध खोलो. २  
जगतमा देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंधे,  
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जगकाल मोंधे ३  
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रिकमे तुज संभार्यो,  
प्रगटपातालथीपलकमांते प्रभु, भक्तजन तेहनोभय निवार्यो. ४  
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाल छे कोण दूजो,  
उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजनोएहपूजो ५

### २. श्री गौतमस्वामी का छंद

बीर जिनेश्वर केरो गिण्य, गौतम नाम जपो निशदिशः  
जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर बिलसे नवे निधान. १

गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवांछित हेला संपजे,  
 गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग. २  
 जे वैरी विहवा वंकडा, तस नामे नावे हुंकडा;  
 भूत प्रेत नवि छंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ३  
 गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,  
 गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजचजकार. ४  
 शाल, दाल सुरहा घृत गोळ, मनवांछित कापड तंबोळ,  
 घरे सुधरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत. ५  
 गौतम उद्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण  
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण. ६  
 घर मयगळ घोडानी जोड, वारु पहींचे वंछित कोड,  
 महियल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय. ७  
 गौतम प्रणम्या पातक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे,  
 गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान. ८  
 पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,  
 कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड. ९



# ॥ श्री विधिसहित पाक्षिक प्रतिक्रमण ॥

( सामायिक लेनेकी विधि )

पुस्तक नवकारवाली प्रमुखकी स्थापना करने के लीये दाहिना हाथ सामने करके नवकार पंचिदिय नीचे मुताबिक कहना ।

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,  
नमो उवज्जयाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो, मंगळाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगल ।

पंचिदिय संवरणो, तह नवविह बंधेवर गुत्तिधरो; चउ-  
विह कसाय मुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं संजुत्तो. ॥१॥ पच्च  
महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो; पंच समिओ  
तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ. ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,  
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्क-  
मामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए,  
विराहणाए, ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, वीयक्कमणे,  
हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग दग, मट्ठी मक्कडा ताणासं-  
सक्कमणे. ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ. ॥५॥ एगिदिया,  
वेइंदिया, तेइंदिया चउरिदिया, पंचिदिया. ॥६॥ अभिहया,  
वत्तिहया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियात्रिया,  
किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवि-  
याओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥७॥

१. आचार्यजी हो तो नवकार पंचिदिय न कहना

गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवाछित हेला संपजे,  
 गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग २  
 जे बैरी विह्वा वंकडा, तस नामे नावे हुंकडा;  
 भूत प्रेत नवि छंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ३  
 गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाघे आय,  
 गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजचक्रकार. ४  
 शाल, दाल सुरहा धृत गोळ, मनवांछित कापड तंबोळ,  
 घरे सुधरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत. ५  
 गौतम उद्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण  
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण. ६  
 घर मयगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वछित कोड,  
 सहियल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय. ७  
 गौतम प्रणम्या पातक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे,  
 गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाघे वान. ८  
 पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,  
 कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड. ९



# ॥ श्री विधिसहित पाक्षिक प्रतिक्रमण ॥

( सामायिक लेनेकी विधि )

पुस्तक नवकारवाली प्रमुखकी स्थापना करने के लीये दाहिना हाथ सामने करके नवकार पंचिदिय नीचे मुताबिक कहना ।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,  
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं, एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो, मंगळाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ।

'पंचिदिय संवरणो, तह नवविह वंभचेर गुत्तिधरो; चउ-  
विह कसाय मुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं संजुत्तो. ॥१॥ पच्च  
महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्था; पंच समिओ  
तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ. ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए,  
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्क-  
मामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमित्तं ॥१॥ इरियावहिआए,  
विराहणाए, ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, वीयक्कमणे,  
हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग दग, मट्ठी मक्कडा ताणासं-  
सक्कमणे. ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ. ॥५॥ एगिदिया,  
वेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया,  
वत्तिहया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,  
किलामिया, उदविया, ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवि-  
याओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥७॥

१. आचार्यजी हो तो नवकार पंचिदिय न कहना

तस्म उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-  
करणेण, विसल्ली करणेणं पावाणं, कम्माणं, निग्वायणट्ठाए  
ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेळ संचालेहि,  
सुहुमेहि दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि,  
अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव  
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव  
कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वेसिरामि ॥५॥

( एक लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग  
करना. न आता हो तो चार नवकार गिनना. फिर नीचे  
मुताबिक कहना. )

लोगस्स उज्जोअगरे, वम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते  
कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वंदे,  
सभवमभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पहं सुपासं, जिण च  
चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीयल सिज्जस  
वासुपुज्जं च, निमज्जमणंतं च जिणं, धम्मं सतिं च वदामि  
॥३॥ कुंथु अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च:  
वंदामि रिठ्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एव मए  
अभिथिआ, विहुय-रय मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि  
जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति य वदिय



महिया, जेए, लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं,  
समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मन्धयरा, आडच्चेसु  
अहियं पयासयरा, सागर वर गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम  
दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआह  
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति  
पडिलेहुं ? “इच्छं”

( ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी० फिर )

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक  
संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणि-  
ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह  
भगवन् ! सामायिक ठाउं ? “इच्छ” ?

( ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड के नीचे मुताबिक एक  
नवकार गिनना )

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्व  
पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसं, पढमं हवइ मंगलं ॥  
फिर-

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक  
उच्चरावोजी ।

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे  
बैठे करेमि भते उच्चरना

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भते उच्चरता, वह नीचे मुताविक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाय, निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? ‘इच्छं’

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर नीचे मुताविक तीन नव-कार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिक लेनेकी विधि संपूर्ण.

‘इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पच्चवखाण  
मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वादणा देना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो,  
कायं काय संफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलं  
ताणं वट्ठसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भं ॥४॥  
जवणि ज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं  
वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं  
देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए  
मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए  
मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए  
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ  
तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो,  
कायं, काय-संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलं-

यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन  
नहि करना और वादणा नहीं लेना यदि पानो पिया हो तो  
सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना यदि भोजन किया हो तो मुह-  
पत्ति पडिलेहन कर दो वादणा भी लेना

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर करेमि भते उच्चरना, वह नीचे मुताविक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाय, निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर नीचे मुताविक तीन नव-कार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उव्वज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पचनमुकारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ।

सासायिक छेनेकी विधि संपूर्ण.

‘इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पच्चवखाण  
मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वादणा देना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो,  
कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-  
ताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भं ॥४॥  
जवणि ज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं  
वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं  
देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए  
मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए  
मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए  
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ  
तरस्स खमासमणो पडिक्कमामि निदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो,  
कायं, काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-

यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन  
नहि करना ओर वादणा नहीं लेना यदि पानो पिया हो तो  
सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना यदि भोजन किया हो तो मुह-  
पत्ति पडिलेहन कर दो वादणा भी लेना

ताणं बहुसुभेण भे दिवसो वडक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥  
 जवणिज्जं च भे, ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वड-  
 क्कमं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसा-  
 यणाए तिच्चीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए  
 वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए  
 लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइ-  
 क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमा-  
 समणो पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं  
 वोसिरामि ॥७॥

(फिर पच्चक्खाण करना)

### चउविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विह पि आहार, असणं,  
 पाणं, खाइम साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,  
 महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ × ॥

### तिविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं खाइमं-  
 साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,  
 सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

### दुविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं,

× खुद पच्चक्खाण करे तो वोसिरामि वहे

अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमा-  
हिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

### ‘पाणहारका पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सह-  
सागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

### देसावगासिकका पच्चक्खाण ।

देसावगासिअं, उवभोग परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा-  
भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं  
वोसिरइ ॥

(ऐसा कहकर बाया घुटना ऊँचा करके चैत्यवन्दन करना )

### चैत्यवन्दन

सकलार्हतप्रतिष्ठानं,—मधिष्ठानं शिवश्रियः ।

भूर्भुवःस्वस्त्रयीशानं,—मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

नामाकृतिद्रव्यभावैः,—पुनतस्त्रिजगज्जनं ।

क्षेत्रे काले च सर्वस्मि,—न्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥

आदिम पृथिवीनाथ,—मादिमं निष्परिश्रहं ।

आदिम तीर्थनाथ च,—ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥

१ यदि एकासन, विआसन व आयबिल निवी तथा  
तिविहार उपवास किया हो तो पाणहारका पच्चक्खाण करना

अर्हन्तमजित विश्व, - कमलाकरभास्करम् ।  
 अम्लान-केवलादर्श, - संक्रान्त जगतं स्तुवे ॥४॥  
 विश्वभव्यजनाराम, - कूलयातुल्या जयन्ति ताः ।  
 देशनाममये वाचः, - श्रीसम्भवजगत्पतेः ॥५॥  
 अनेकान्तमताम्भोधि, - समुल्लासनचन्द्रमाः ।  
 दद्यादमन्दमानन्दं, - भगवानभिनन्दनः ॥ ६ ॥  
 द्युसत्किरीटशाणाग्रो, - तेजितादघ्निनखावलिः ।  
 भगवान् सुमतिस्वामी, - तनोत्वभिमतानि वः ॥७॥  
 पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पुष्पन्तु वः श्रियम् ।  
 अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥८॥  
 श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताद्भ्रमे ।  
 नमश्चतुर्वर्णसङ्घ, - गगनाभोगभास्वते ॥९॥  
 चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र, - मरीचिनिचयोज्ज्वला ।  
 मूर्तिर्मूर्तसितध्यान, - निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥१०॥  
 करामलकवद्विश्व, कलयन् केवलश्रिया ।  
 अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, - सुविधिर्वोधयेऽस्तु वः ॥११॥  
 सत्त्वाना परमानन्द, - कन्दोद्भेदनवाम्बुदः ।  
 स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, - शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥  
 भवरोगार्तजन्तूना-मगदंकारदर्शनः ।  
 निःश्रेयसश्रीरमणः-श्रेयासः श्रेयसेऽस्तु वः ॥१३॥  
 विश्वोपकारकीभूत, - तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।  
 सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥१४॥



विमलस्वामिनो वाचः; कृतकक्षोदसोदराः ।  
 जयन्ति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥१५॥  
 स्वम्भूरमणस्पर्धि, - करुणारसवारिणा ।  
 अनन्तजिदनत्ता वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥  
 कल्पद्रुमसधर्माण, - मिष्टप्राप्तो शरीरिणाम् ।  
 चतुर्धा धर्म-देष्टारं, - धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ।  
 मृगलक्ष्मा तमःशान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥  
 श्रीकुन्धुनाथो भगवान्, - सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।  
 सुरासुरनृनाथाना, - मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥  
 अरनाथस्तु भगवां, - श्वतुर्थारनभोरविः ।  
 चतुर्थपुरुषार्थश्री, - विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, - मयूरनवरारिदम् ।  
 कर्मद्रुन्मूलने हस्ति, - मल्लं मल्लीमभिष्टुमः ॥ २१ ॥  
 जगन्महामोहनिद्रा, - प्रत्यूषसमयोपमम् ।  
 मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥  
 लुठन्तो नमता मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।  
 वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखाशवः ॥ २३ ॥  
 यदुवशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।  
 अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥  
 कमठे धरणेद्रे च, स्पोचितं कर्म कुर्वति ।  
 प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥२५॥

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।  
 महानन्दसरोराज,—मरालायाहते नमः ॥२६॥  
 कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।  
 ईषद्वाष्पाद्र्योर्भद्र, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥  
 जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।  
 विमलस्त्रासविरहित,—स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीर, बुधाः संश्रिताः ।  
 वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, विराय नित्यं नमः ॥  
 वीरात्तोर्यमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।  
 वीरेश्रीधृतिर्कीर्तिकान्तिनिचयः, श्रीवीर! भद्रं दिश ॥२९॥  
 अवनितलगताना, कृत्रिमाकृत्रिमाना,  
 वरभवनगतानां, दिव्यवैमानिकानाम् ।  
 इह मनुजकृताना, देवराजार्चिताना,  
 जिनवरभवनाना, भावतोऽहं नमामि ॥३०॥  
 सर्वेषां वेदसामाद्य,—मादिमं परमेष्ठिनाम् ।  
 देवाधिदेव सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदम्भहे ॥३१॥  
 देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा-पापप्रदीपानलो,  
 देवः सिद्धिदध्रुविशालहृदया—लङ्कारहारोपमः ॥  
 देवोऽष्टादशदीपसिन्धुरघटा—निर्भेदपञ्चाननो ।  
 भव्यानाविदयातुवाञ्छितफल, श्रीवितरागोजिनः ॥३२॥  
 ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतगैलाभिधः ।  
 श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥

वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-  
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥३३॥

जंविं चि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाई  
जिण विवाई, ताई सव्वाई वदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-  
हाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगधहत्थीणं ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपईवाणं  
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं,  
मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं,  
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-  
चाउरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं,  
विअट्ठलउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥  
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूर्णं  
सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ मणंतमवखय मग्गावाहमपुणरा-  
वित्ति, सिद्धिगइनामधेयं । ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं  
जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति  
णागए काले ॥ संपड अं वट्ठमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

( चरवला हो तो खडे होवर या घुटना नीचे करके. )

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।  
 महानन्दसरोराज,—मरालायार्हते नमः ॥२६॥  
 कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।  
 ईषद्वाष्पार्द्रयोर्भद्र. श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥  
 जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।  
 विमलस्त्रासविरहित,—स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं. बुधाः संश्रिताः ।  
 वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो. विराय नित्यं नमः ॥  
 वीरात्तोर्यमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोर तपो ।  
 वीरेऽश्रीधृतिर्कीर्तिकान्तिनिचयः, श्रीवीर'भद्रंदिश ॥२९॥  
 अवन्तितलगताना कृत्रिमाकृत्रिमाना.  
 वरभवनगताना, दिव्यवैमानिकानाम् ।  
 इह मनुजकृताना. देवराजार्चिताना.  
 जिनवरभवन्नाना, नावतोऽहं नमामि ॥३०॥  
 सर्वेषां वेद्यसामाद्य,—मादिम परमेष्ठिनाम् ।  
 देवाधिदेव सर्वज्ञ, श्रीवीर प्रणिदध्महे ॥३१॥  
 देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा-पापप्रद्वीपानलो .  
 देवः सिद्धिवध्रविशालहृदया—लङ्कारहारोपमः ॥  
 देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटा—निर्भेदपञ्चाननो ।  
 भव्यानाविदधातुवाछितफल, श्रीवितरागोजिनः ॥३२॥  
 ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतगैलाभिधः ।  
 श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥

वैभारः कनकाचलोऽर्जुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-  
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥३३॥

जंभिं चि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइ  
जिण विवाइं, ताइं सव्वाइं वदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-  
हाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगघहत्थीणं ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपड्वाणं  
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं,  
मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं,  
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-  
चाउरंतच्चक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयघरनाण-दंसणधराणं,  
विअट्ठल्लउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥  
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं  
सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ मणंतमवस्सय मग्गावाहमपुणरा-  
वित्ति, सिद्धिगइनामधेयं । ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं  
जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति  
णागए काले ॥ संपड अं वट्ठमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

( चरवला हो तो खडे होकर या घुटना नीचे करके. )

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए  
 पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिला-  
 भवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए  
 अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
 जंभाइएणं, उइडुएणं वार्यानिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
 ॥१॥ सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि,  
 सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो  
 अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाम अरिहंताणं  
 भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं  
 सोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

( एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽईतसिद्धा-  
 चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे  
 सुताविक है )

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या त्रिभोः शैशवे ।

रूपालोकनविस्मयाहतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥

उन्मृष्ट नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।

वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
 प्रीत्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ उसभमजिअं च वदे, संभ-  
 वमभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-

प्पह वदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं  
च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ कुंथुं  
अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्ययं नमिजिणं च । वदामि रिद्ध-  
नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च । एवं मए अभिथुआ, विहुयरच-  
मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे  
पसीयंतु ॥ कित्तिं वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
सिद्धा । आरुग्ग वोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ चंदेसु  
निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा,  
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तिआए पूअण-  
वत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिलाभवत्ति-  
आए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए  
अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं  
जंभाइएणं, उइडुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए,  
सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न  
पारेमि ताव कार्यं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके पारके फिर स्तुति कहनी  
वह नीचे मुताबिक है )

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ।

कुम्भैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्धिभिः काञ्चनैः ॥१॥

येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।

सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

पुक्खरवरदीवइहे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवय-  
विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं-  
सणस्स सुरगणनरिदमहियस्स । सीमाधरस्स वदे, पप्फोडिअ  
मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स,  
कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरि  
दगगच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥  
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव नाग  
सुवन्न किन्नरगण स्सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ  
जगमिणं तेलुकमच्चासुरं । धम्मो वइढउ सासओ विजयओ  
धम्मुत्तरं वइढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भावओ करेमि काउस्सग्गं  
वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए  
वोढिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए येहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वइढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं  
जभाइएणं उइडुएणं वायनिसग्गेणं ममलीए पित्तमुच्छाए  
सुहुमेहिं, अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ



हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुकारेणं  
न पारेमि ताव कायं ठाणेणं सोणेणं झाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नीचे लीखी स्तुति कइना )

अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचितं द्वादशांगं विनालं ।

चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥

मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं ।

भवत्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाण ॥ लोअग्ग-  
मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण  
वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देवदेव महिअं, सिरसा  
वंदे महावीरं ॥ १ ॥ इक्कोवि नमुकारो, जिणवरसद्वस्स  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेड नरं व नारि वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्खट्ठिं, अरिद्वेनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि  
काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥

हंसासाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ।

कुम्भैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्धिभिः काञ्चनैः ॥१॥

येषा मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।

सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषा नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवय-  
विडेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥ १ ॥ तमत्तिमिरपडलविद्ध-  
सणस्म सुरगणनरिदमहियस्स । सीमाधरस्स वदे, पप्फोडिअ  
मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स,  
कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरि-  
दगगच्चिअस्स, धम्मरस सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥  
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नदी सया संजमे, देव नाग  
सुवन्न किन्नरगण स्सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ  
जगमिणं तेलुकमच्चासुरं । धम्मो उइढउ सासओ विजयओ  
धम्मुत्तर उइढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवभो करेमि काउस्सग्ग  
वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए  
वोढिलाभवत्तिआए निरुयसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए  
वारणाए अणुप्पेहाए वइढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएण  
जमाइएणं उइडुएणं वायनिसग्गेणं ममलीए पित्तमुच्छाए  
सुहुमेहि, अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहि अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं  
न पारेमि ताव कायं ठाणेणं सोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ॥

(एक नयकारका काउस्सग्ग करके नीचे लीखी स्तुति कदना )

अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचितं द्वादशांगं त्रिगालं ।

चित्रं वद्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्धिः ॥

मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयमावप्रदीपं ।

भवत्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाण ॥ लोअग्ग-  
मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण  
वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देवदेव महिअं, सिरसा  
वंदे महावीरं ॥ १ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरसहस्स  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥  
उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्कच्चट्ठि, अरिद्धनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-  
दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सग्गमहिट्ठिसमाहिगराणं करेमि  
काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उइडुएणं वायनिसग्गेणं, अमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥

सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेल संचालेहि; सुहुमेहि दिट्ठि  
संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि, आगारेहि, अभग्गो अविराद्धिओ;  
हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं,  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं,  
ज्ञाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्द्धत-  
सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य कहके स्तुति कहनी, वह  
नीचे मुजव)

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं ।  
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥

आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।  
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

नमुत्थणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरि-  
ससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपड्ढवाणं, लोग-  
पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाण  
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेस-  
याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्खवट्ठीणं  
॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरणाण दंसणधराणं, वियट्ठउमाणं  
॥ ७ ॥ जिणाण जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाण,

मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवम-  
यलमरूअ मणंतमक्खय मन्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनाम-  
धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ  
अईआ सिद्धा, जे अ भवस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा,  
सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । भगवानहं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिय पडिक्कमणे ठाउं ?

(फिर दाहिना हाथ चरबले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छं, सव्वस्स वि देवसिय दुच्चितिय दुब्भासिअ दुच्चि-  
ट्ठिअ मिच्छामि दुक्कड ।

करेमि भंते ! सामाईयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न  
करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरौ कओ  
काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-  
णिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो  
असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाडए  
तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुण-  
व्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगयम्मस्स जं  
खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोढीकरणेणं  
विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि  
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाडएणं, उइडुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्ततुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहु-  
मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥३॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भग-  
वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं सोणेणं  
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर पंचाचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि  
न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना काउस्सग्ग मे  
गिनने की आठ गाथा नीचे भुजव है,)

नाणंमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवमि तहय वीरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा सणिओ ॥ १ ॥ काले  
 विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ  
 तदुभए ॥ अट्टविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कं-  
 सिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अपूहदिट्ठी अ ॥ उवव्ह थिरीकरणे,  
 वच्छल-पभावणे अट्ट ॥ ३ ॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं  
 ममिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्टविहो होइ  
 नायव्वो ॥ ४ ॥ वारसविहंमि वि तवे ॥ सव्वितर वाहिरे  
 कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो  
 ॥ ५ ॥ अणसण मुणोअरिया ॥ वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ;  
 कायकिलेसो संलीणया य, वज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्छित्तं  
 विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; ब्राणं उस्सग्गोवि अ ॥  
 अविभतरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बल विरिओ,  
 परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो  
 वीरिआयारो ॥ ८ ॥

( काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे सुजव है )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथयरेजिणे; अरिहते कित्त-  
 इस्सं, अउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसम मज्झिअं च वंदे, संभव-  
 मभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
 वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च;  
 विमल-मणंतं च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
 अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरौ कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगयम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्ततुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥३॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर पंचाचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना काउस्सग्ग में गिनने की आठ गाथा नीचे योजव है,)



नाणंमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवमि तहय वीरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा क्षणिओ ॥ १ ॥ काले  
 विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ  
 तदुभए ॥ अट्ठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कं-  
 सिअ ॥ निव्वित्तिगिच्छा अमूहदिट्ठी अ ॥ उववृह विरीकरणे,  
 वच्छल-पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं  
 समिड्हिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्ठविहो होइ  
 नायव्वो ॥ ४ ॥ वारसविहंमि वि तवे ॥ सव्विभतर वाहिरे  
 कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो  
 ॥ ५ ॥ अणसण मुणोअरिया ॥ विचीसंखेवणं रसच्चाओ;  
 कायकिलेसो संलीणया य, वज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्छित्तं  
 विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; द्वाणं उस्सग्गोवि अ ॥  
 अर्हिभतरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ वल विरिओ,  
 परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो  
 वीरिआयारो ॥ ८ ॥

( काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजव है )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथयरेजिणे; अरिहते कित्त-  
 इस्सं, अउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मज्झिअं च वंदे, संभव-  
 मभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
 वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुप्पुज्जं च;  
 विमल-भणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
 अरं च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

रिट्ठनेमिं. पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ,  
विहुय रय-मला पहीण-जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा,  
तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्थिय-वंदिय-महिया, जे ए  
लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं  
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा-  
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर दो बार  
वादणा नीचे मुजब देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि,  
अ-हो का-यं का-य, संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्प-  
किलंताणं, वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥ ३ ॥ जत्ता भे  
॥ ४ ॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो,  
देवसिअ वइक्कमं ॥ ६ ॥ आवस्सिआए; पडिक्कमामि, खमास-  
मणाणं देवसिआए आसायणाए; तित्थीसन्नयराए, जंकिंचि  
मिच्छाए, मणदुक्कडाए; , वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए,  
कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमि-  
च्छोअयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे  
अइआरो कओ, तस्स खमासमणो । पडिक्कमामि, निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए

अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं सम-  
णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो  
वडक्कंतो जत्ता भे जावणिज्जं च भे सामेमि खमासमणो  
देवसिअ वडक्कम पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए  
आसायणाए तिच्चीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए  
वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए  
सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माडक्कमणाए  
आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्क-  
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

( चरवला हो तो खडे होकर हाथ जोडकर नीचे मुजब बोले )

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

“इच्छं” आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ,  
काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो, अक्कपो, अकर-  
णिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो  
असावगपाउग्गो; नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए, सामाइए,  
तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं  
गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावग-  
धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात  
लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक  
वनस्पतिकाय ॥ चउदलाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ वे

लाख वेइद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय ॥ चार  
लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय ॥  
चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोरासी लाख जीवायोनिमाहि,  
म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां  
प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी  
मिच्छामि दुक्कडं

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान,  
चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह ॥ छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे  
माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह,  
तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति-अरति, सोलमे  
पर परिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य,  
ए अठार पापस्थानक माहि, म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं  
होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि  
हुमन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वरसवि देवसिअ दुच्चित्तिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिद्धिअ  
इच्छाकारेण संदिसहभगवन् ? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

( वाद मे दाहिना घुटना ऊचा करके नीचे मुजब बोलना )

नमो अरिहताणं ॥१॥ नमो सिद्धाण ॥२॥ नमो आयरि-  
याण ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसि ॥८॥ पढमं हवड मंगल ॥९॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव  
नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए,  
काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि,  
निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ  
काइओ वाइओ माणसिओ उस्समुत्तो उम्मग्गो अरूपो  
अरुरणिज्जो, दुज्झाओ, दुक्खिचित्तिओ, अणायारो, अणिच्छि-  
अव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते सुए,  
सामाइए. तिण्ह गुत्तीणं ॥ चउण्हं कमायाणं ॥ पचण्हमणुव्व  
याणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं, सिक्खवायाणं, वारस विहस्स  
सावगधम्मस्स, जंखंडिअं, जंघिराद्विअं, तस्समिच्छामि दुक्कडं.

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्माणरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि  
पडिक्कभिउं, साग्ग धम्माआरस ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
नाणे तह दसणे चरित्ते अ; सुहुमो त वायरो व, तं निदे तं  
च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ  
आरभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं  
वद्ध मिदिएहि, चउहिं कसाएहि; अप्पसत्थेहि; रागेण व दोसेण  
व, तं निदे तं च गरिहामि । ४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे  
चंकमणे अणाभोगे; अभियोगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं  
सव्वं ॥५॥ संका कंख विग्गिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।  
उम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्वं ॥६॥ छक्काय समा-

रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तद्वा, य परद्वा, उभ-  
यद्वा चेव तं निदे ॥७॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं  
च तिण्ह मइयारे; सिक्ख्वाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं.  
॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, धूलग-पाणाइवाय-विरइओ; आय-  
रिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए,  
अइभारे भत्तपाणवुच्छेए; पढम-वयस्सइआरे, पडिक्कमे  
देसिअं सव्वं ॥१०॥ वीए अणुव्वयंमि, परिधूलग अलीयवयण  
विरइओ । आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥  
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ; बीय वयस्स-  
इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, धूलग  
यरदव्व-हरण विरइओ; आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं  
॥१३॥ तेनाहडप्पओगे. तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ; कूडतुल  
कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयंमि,  
निच्चं परदारगमण-विरइओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय  
प्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविग्गह तिच्च-  
अणुरागे । चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥  
इत्तो अणुव्वए, पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि; परिमाण  
परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्त-  
वत्थु, रूप सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्प-  
यंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे,  
दिसासु उद्धं अहे अ तिरिअं च । बुद्धि सइअंतरद्धा, पढममि  
गुणव्वए निदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ.प्पफे अ फले अ

गंधमल्ले अ । उत्रभोग परिभोगे, वीयंमि गुणव्यए निदे ॥ २० ॥  
 सचित्ते पडिवद्धे, अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहि-  
 भक्खणया, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ डंगाली-वण नाडी,  
 भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत, लक्स रस  
 केस-विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लल्लणं च  
 दवदाणं । सर दह-तलाय-सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा  
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे ।  
 दिन्ने दवाविए वा, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ २४ ॥ न्हाणु व  
 ट्ठण वन्नग, विलेवणे सह-रुव रस-गधे । वत्थासण आभरणे,  
 पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुप्प, मोहरि  
 अहिगरग भोग अइरित्ते । दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि  
 गुणव्यए निदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा  
 सइविहूणे । समाइअ वितहरूप, पहमे सिक्खावए निदे ॥ २७ ॥  
 आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमि,  
 वीए सिक्खावए निदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह  
 चेव भोयणाभोए । पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निदे  
 ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिण्णो, पिहिणे ववएस मच्छरे  
 चेव । कालाइकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निदे ॥ ३० ॥  
 सुहिण्णसु अ दुहिण्णसु अ, जा मे अस्संजणसु अणुकंपा ।  
 रागेण व दोसेण व, त निदे त च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु  
 सविभागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु । संते फासुअ-  
 दाणे, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए,

जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा  
मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइ-  
अस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स  
॥३४॥ वंदण वयसिक्खा गारवेसु, सन्ना कसायदंडेसु। गुत्तीसु  
अ समिडसु अ, जो अइआरो अ तं निदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी  
जीवो, जइवि हु पावं समायरे किचि । अप्पोसि होइ वंधो,  
जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमण, सपरि-  
आवं सउत्तरगुणं च । सिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुमिक्खिओ  
विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूल विसारया । विज्जा  
हणंति मंतेहि, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एव अट्ठविहंक्कम्मं,  
राग-दोस-समज्जिअं । आलोअंतो अ निदंतो, खिप्प हणइ  
सुसावओ ॥३९॥ कयणवोवि मणुस्सो, आलोइअ निदिअ  
गुरुसगासे । होइ अट्ठरेण लहुओ, ओहरिअ-मरुव्व भारवहो  
॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि वहुओ होइ ।  
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा  
वहुविहा, नय संमरिआ पडिक्कमण काले । मूलगुण-उत्तर  
गुणे, तं निदे तं च गरिहाणि ॥४२॥ तस्स वम्मस्स केवलि-  
पन्नत्तस्स, अव्युट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए,  
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति  
चेइआई, उइडे अ अहे अ तिरिअ लोएअ । सव्वाइ ताइं वंदे,  
इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावत केवि साहु, भरहेरवय महा-



विदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं.  
 ॥४५॥ चिर सचिय-पावपणासणीड, मवसय सत्तस्स मन्णीए  
 चउव्वीस-जिण-निणिग्गय-रुहाड, वोळंतु मे दिअहा ॥४६॥  
 मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साह मुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी  
 देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे,  
 किच्चानमकरणे पडिक्कमणं । असद्वहणे अ तद्वा, विवरीअ पर-  
 वणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा समंतु मे ।  
 मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणड ॥४९॥ एवमहं-  
 आलोइअ, निदिअ गरहिअ दुअंछिअं सम्मं । तिविहेण पडि-  
 ककंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि । देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण  
 संदिसह भगवन् पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुंजी ? इच्छं

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी)

(फिर दो वादणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥१॥ अणुजाणह-मे मिअगहं ॥ २ ॥ निसीहि, अहो,  
 का-यं-का-य संफासं खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलं-  
 ताण बहुसुभेण, मे पक्खो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥ ज-  
 वणिज्ज च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, पक्खिअं वइक्कयं  
 आवस्सिआए ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए,

आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए  
 वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए  
 सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोदयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए  
 आसायणाएः जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो,  
 पडिक्कमामि, तिदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥ १ ॥ अणुजाणहः मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,  
 का यं, का-य संफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं  
 बहुसुभेण, भे, पक्खो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज-त्ता मे ? ॥४॥ ज  
 वणिज्जं च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं  
 पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्ती-  
 सन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए  
 कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए नव्वकालि-  
 आए सव्वमिच्छोदयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए  
 जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि तिदामि  
 गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । ७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! सम्बुद्धा खामणेणं  
 अब्भुट्ठिओमि अर्द्धिभतर पक्खिअ खामेउं । “इच्छ” खामेमि  
 पक्खिअं एकपक्खस्स पन्नरसद्विसाणं, पन्नरसराईआण,  
 जंकिचि अपत्तिअं. परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए वेया-  
 -क्खे, आलावे, सलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए,

उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिणीणं सुहुमं वा वायरं  
वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउं ?  
“इच्छं” आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ  
वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो  
हुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणायारो अणिच्छिउयव्वो असावगपा  
उग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं  
- उण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं  
सिक्खवयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं-  
चिराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि अतिचार  
आलोउ ? “इच्छ” ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना,  
वह नीचे मुताबिक है.)

## पाक्षिक अतिचार.

नाणंमि दसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियंमि ।  
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार,  
दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांच  
आचारोंमे जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमे सूक्ष्म या वादर  
जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर  
मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ‘काले विणए बहुमाणे,

आसायणाए, तिच्चीसन्नयराए, जंकिचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए  
 वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए  
 सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए  
 आसायणाए; जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो,  
 पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,  
 का यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं  
 बहुसुभेण, भे, पक्खो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज-त्ता भे ? ॥४॥ ज  
 वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं  
 पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तिच्ची-  
 सन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए  
 कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-  
 आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए  
 जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि  
 गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । ७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! सम्बुद्धा खामणेणं  
 अब्भुट्ठिओमि अब्भिभतर पक्खिअं खामेउं ! “इच्छ” खामेमि  
 पक्खिअं एकपक्खस्स पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराईआणं,  
 जंकिचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए वेया-  
 कच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए,

उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं  
वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउं ?  
“इच्छं” आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ  
वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकण्णो अकरणिज्जो  
दुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपा  
उग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिहं गुत्तीणं  
- उण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिहं गुणव्वयाणं चउण्हं  
सिक्खव्वयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं  
चिराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि अतिचार  
आलोउ ? “इच्छ” ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना  
वह नीचे मुताबिक है.)

## पाक्षिक अतिचार.

नाणंमि दसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियंमि ।  
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार,  
दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांच  
आचारोमे जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमे सूक्ष्म या वादर-  
जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर  
मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ‘काळे विणए बहुमाणे,

उवहाणे तह अनिन्हवणे । वज्जण अत्थ तदुभए, अट्ठक्खिहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान नियमित वक्तृमे पढा नहीं, अकाल वक्तृमे पढा । विनयरहित, बहुमानरहित. योगोपधा नरहित पढा । ज्ञान जिससे पढा उससे अतिरिक्तको गुरु माना, या कहा । देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण सज्झाय करते पढते, गुणते, अशुद्ध अक्षर कहा. लगमात्र न्यूनाधिक कहा, अथवा सूत्र अर्थ दोनों असत्य कहे, पढकर भूला, असज्झायके समयमे थिविरावलि प्रतिक्रमण उपदेशमाला आदि सिद्धांत पढा । अपवित्र स्थान मे पढा, बिना साफ किये घृणित भूमिपर रखा । ज्ञानके उपकरण तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदि के पैर लगा, धूक लगा अथवा धूंकसे अक्षर मिटाया । ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, अथवा पास मे लिये हुए आहार निहार किया । ज्ञान द्रव्य भक्षण करनेवाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सार संमाल न की, उलटा नुकसान किया । ज्ञानवंतके उपर द्वेष किया, डर्पा की तथा अवज्ञा आशातना की । किसीको पढने गुनने मे विघ्न डाला । अपने जानपने का मान किया, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान, इन पाचों ज्ञानों मे श्रद्धा न की, गुंगे तोतलो की हासी की, इत्यादि ज्ञानाचार सवन्धी जे कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या

पडिलेहण न हुई हो, गुरु के वचन का मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्षदिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर भिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार—“पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहि गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥” इर्यासमिति, भाषा समिति, एषणा-समिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकास-मिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. यह अष्ट प्रवचनमाता सामायिक पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं. चारित्रा-चार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर भिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्म संबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पांच अतिचार—“संका कंख विगिच्छा” शंका—श्रीअरिहत प्रभु के बल. अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गाभीर्यादिकगुण, शाश्वती प्रतिमा, चरित्रवान के चारित्र में तथा जिनेश्वर देव के वचन में संदेह किया, आकाक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गणेश, गूगा, दिक्पाल, पादर देवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, भैरव भवानी, मसानी, आदिक तथा देश,

नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देखकर शरीर में रोगातक कष्टादिके आने पर इसलोक, परलोक के लिये पूजा मानता की. बौद्ध, साख्यादिक संन्यासी, भगत, लिंगिये, योगी, फकीर, पीर, इत्यादि अन्यदर्शनियों के मंत्र तंत्र चमत्कार को देखकर, बिना परमार्थ जाने मोहित हुआ, कुशास्त्र पढा, सुना, श्राद्ध, संवत्सरी, दौली, राखड़ीपूज, राखी, अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, झीरुणपष्टी, सीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनंतचौदश, शिवरात्री, कालीचौदश, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, याग, भोगादि किये, कराये, करते को भला माना. पीपल में पानी डाला, डलवाया. कुवा, तलाव, नदी, द्रव, बावडी, समुद्र, कुण्ड उपर पुण्य निमित्त स्नान और दान किया, कराया, अनुमोदन किया, शनिश्चर, माघ-मास, नवरात्रिका स्नान किया नवरात्रिव्रत किया, अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये, कराये, । वित्तिगिच्छा धर्मसंबंधी फलका सन्देह किया, जिन चीतराग अरिहत भगवान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्ष मार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जान कर पूजा नहीं इसलोक परलोक संबंधी भोगवाछा के लिये पूजा की. रोगआतक कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला. मानता मानी, महात्मा महासती के आहार,



पडिलेहण न हुई हो, गुरु के वचन को मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्षदिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर भिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार—“पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहि गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥” इर्यासमिति, भाषा समिति, एषणा-समिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकास-मिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, यह अष्ट प्रवचनमाता सामायिल्ल पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं. चारित्रा-चार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर भिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्म संबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल वारह व्रत, सम्यक्त्व के पांच अतिचार—“संका कंख विगिच्छा”

शंका—श्रीअरिहंत प्रभु के बल. अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गाभीर्यादिकगुण, शाश्वती प्रतिमा, चरित्रवान के चारित्र में तथा जिनेश्वर देव के वचन में संदेह किया, आकाक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गणेश, गूगा, दिक्पाल, पादर देवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, चाली, माता, भैरव भवानी, मसानी, आदिक तथा देश,

पानी, मलिन वस्त्र आदिकी निंदा की, कुचारित्री को देखकर चारित्रवान पर अभाव हुआ. मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देख कर प्रशंसा की, दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, मिथ्यात्व को धर्म कहा । इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या कादर जानते, अजानते लगा हो वो सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत के पांच अतिचार—‘वह वध छविच्छेए’ द्विपद, चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बाधा, अधिक बोझ डाला, निर्लीछन कर्म नासिका विंधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना घास, पानी के समय सारवार न की लेणदेण में किसी के बदले किसी को भूखा रखा. पास में खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया । सड़े हुए धान को बिना शोधे काम में लिया, अनाज बिना शोधे पिसवाया, धूप में सुकाया । पानी यतना से न छाना, इंधन, लकड़ी, उपले, गोहे आदि बिना देखे बांटे. उस में सर्प, विच्छु, कानखजरा, किडी, मकौडी आदि जीवका नाश हुआ । किसी जीवको अच्छी जगह पर न रखा । चिलह, काग, कबूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया. घोंसले तोड़े । चलते फिरते या अन्य कुछ काम,

करते निर्दयपना किया, भली प्रकार जीवरक्षा न-की । विना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया, कपड़े धोये. यतनापूर्वक कामकाज न किया । चारपाइ, खटौला, पीढा पीढी आदि धूप में रखे, डंडे आदि से झड़काये. जीव संसक्त जमीन को लींपी, दलते-कूटते, लिपते, या अन्य कुछ कामकाज करते यतना न की. अष्टमी-चौदश आदि तिथी का नियम तोड़ा, धूनी करवाई । इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

दूसरे स्थूल सृष्टावाद विरमणव्रतके पांच अतिचार, 'सहसा रहस्स दारे' सहसात्कारे विना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल, कलंक दिया । स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट की, अथवा अन्य किसीका मंत्रभेद मर्म प्रगट किया । किसी को दुःखी करने के लिये खोटी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी साक्षी दी, अमानत में खयानत की, किसीकी धरोह वस्तु पीछी न दी, कन्या, गौ, भूमि संबंधी लेन देन में लडते-झगडते वादविवाद में मोटा झूठ बोला. हाथ पैर आदि की गाली दी. इत्यादि स्थूल सृष्टावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पानी, मलिन वस्त्र आदिकी निंदा की, कुचारित्री को देखकर चारित्रवान पर अभाव हुआ, मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देख कर प्रशंसा की, दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, मिथ्यात्व को धर्म कहा । इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या कादर जानते, अजानते लगा हो वो सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत के पांच अतिचार—‘वह बध छविच्छेष्’ द्विपद, चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ डाला, निर्लीछन कर्म नासिका बिंधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना, घास, पानी के समय सारवार न की लेणदेण में किसी के बदले किसी को भूखा रखा. पास में खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया । सड़े हुए धान को बिना शोधे काम में लिया, अनाज बिना शोधे पिसवाया, धूप में सुकाया । पानी यतना से न छाना, इंधन, लकड़ी, उपले, गोहे आदि बिना देखे बाळे. उस में सर्प, बिच्छु, कानखजूरा, किडी, मकौडी आदि जीवका नाश हुआ । किसी जीवको अच्छी जगह पर न रखा । चिलह, काग, कबूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया. घोंसले तोड़े । चलते फिरते या अन्य कुछ काम,

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार, “तेनाहडप्पओगे” घर, बाहिर, खेत, खला में बिना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा बिना आज्ञा अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी, राज्य विरुद्ध कर्म किया, अच्छी बुरी, सजीव, निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल संभेल किया जकात की चोरी की, लेते देते तराजू की दंडी चढ़ाई. अथवा देते हुए वमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिश्वत खाई, विश्वासघात किया, ठगी की, हिसाब किताब में किसी को धोखा दिया। माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के साथ ठगी कर किसी को दिया, अथवा पुंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इनकार किया। किसी को हिसाब किताब में ठगा. पड़ी हुई चीज उठाई-इत्यादि स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत के पांच अतिचार, ‘अप्परिग्गहियाइत्तर’ परस्त्रीगमन किया, अविवाहिता, कुमारी, विधवा, वेश्यादिक से गमन किया, अनंगक्रीड़ा की, काम आदि की विशेष जाग्रति की। अभिलाषा से सरागवचन कहा। अष्टमी, चौदश आदि पर्व-

तिथि का नियम तोड़ा, स्त्री के अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की, कुविकल्प चितवन किया, पराये नाते जोड़े; गुहड़े गुड्डीयों का विवाह किया, वा कराया; अतिक्रम; व्यतिक्रम अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नातर हुआ, कुस्वप्न आया, स्त्री, नट, विट, भाड, वेश्यादि रु से हास्य किया, स्वस्त्री में संतोष न किया, इत्यादि स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, बचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पाचमे स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पांच अतिचार “धण धन्न खित्त वत्थु” धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना चांदी, वर्तन आदि द्विपद दास, दासी नौकर चतुष्पद—गौ बेल घोड़ादि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया; लेकर बहाया, अथवा अधिक देखकर, मूर्खावश माता, पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया, परिग्रह का प्रमाण किया नहीं, करके झुलाया, याद न किया० इत्यादि स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर, जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, बचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

छठे दिक्परिमाण व्रत के पांच अतिचार, “गमणस्स उ परिमाणे” ऊर्ध्वदिशी, अधोदिशी, तिर्यग्दिशी,

जाने आने के नियमित प्रमाण उपरांत भूल से गया, नियम तोड़ा, प्रमाण उपरांत सासारिक कार्य के लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहाँ भेजी, नौका जहाजादि द्वारा व्यापार किया, वर्षाकाल में एक गाम से दूसरे गाम में गया. एक दिशा प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा के प्रमाण को अधिक किया। इत्यादि छठे दिक्परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सातमे भोगोपभोग चरिमाण व्रत के भोजन आश्री पाच और कर्मआश्री पंद्रह अतिचार, “सचित्ते पडिवडे” सचित्त खानपान की वस्तु नियम से अधिक अंगीकार की, सचित्त से मिली हुई खार, तुच्छ औषधि का भक्षण किया। अपक्व आहार, दुपक्व आहार किया, कोमल इमली, बुंट, भुट्टे, फलिया आदि वस्तु खाइ

सचित्त १ दब्ब २ विगई ३ वाणह ४ तंवोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ । वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० वंभ ११ दिसी १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥१॥

यह चौदह नियम लिये नहीं, लेकर भुलाये, वड्ड, पीपल, पिलंखण, कठुवर, गूलर, यह पाच फल, मदिगा, पास, गद्द, मक्खन यह चार महाविगई, वरफ, ओले,

कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहुबीजफल, आचार, बोलबडे, द्विदल, वैगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनन्त-काय, यह बावीस अभक्ष्य, सूरन, जिमिकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरक, गुवारपाठा, थोर, मिलोर, लसन, गाजर, गटा, प्याज, गोगर्तु, कोमलफल, फूल, पान, थेगी, हरामोत्था, अमृतबेल, मूली, पदवहेडा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालु, आदि अनंतकायका भक्षण क्रिया. सूर्योदय से पहले भोजन किया.

तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान-इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोटिकम्मे. यह पांच कर्म । दत्त-वाणिज्ज, लक्खाणिज्ज, रसनाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विस-वाणिज्ज, यह पांचवाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्म, निल्लंछनकम्म, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असर्प्पोसणया यह पांच सामान्य, एवं पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य कुल पंद्रह कर्मादान, महा आरम्भ किये, कराये, करते को अच्छा समझा; रंगने का व कोळसा आदिक का काम क्रिया, इट निभाडा पकाये, फूले, चणा, पक्खान कर वेच्चे-वासी मक्खन तपाया, फागुन मास उपरांत तिल रखा । श्वान, चिन्ली आदि पोषे, पाले, महासान्ध पापकारी कठोर काम किया । इत्यादि सातमे भोगोपभोग व्रतसंबंधीजो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥



आठमे अनर्थदण्ड विरमण व्रत के पांच अतिचार, “कंदप्पे कुक्कुडण्” कंदर्प-कामाधीन होकर नट, विट, वेश्यादिक से हास्य, खेल, क्रीडा, कुतुहल किया, पुरुष के हावभाव रूप शृङ्गार संबंधी वार्ता की, विषयरसपोषक कथा की, स्त्रीकथा, देशकथा, राजकथा, भक्तकथा, यह चार विकथा की. पराई भाजगड की, किसीकी चुगलचोरी की, आर्चध्यान, रौद्रध्यान ध्याया खाडा, कटार, काश, कुहाडी, रथ, उखल, मुसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तु दाक्षिण्यता वश से किसी को मागी दी पापोपदेश किया अष्टमी, चतुर्दशी के दिन दलने पिसने का नियम तोडा मूर्खता से असंबद्ध वाक्य बोला, प्रमादाचरण सेवन किया, घी, तैल, दूध, दही, गुड, छास, आदिका भाजन खुला रखा, उस में जीवादिकका नाश हुआ. चासी माखन रखा, और तपाया, न्हाते, धोते, दातण करते जीव अकुलित मोरी में पानी डाला झुले में झूला, जुआ खेला, नाटक आदि देखा, ढोर ढंगर खरीद-चाये, कर्कश वचन कहा, किचकिची ली. ताडना तर्जना की, मत्सरता धारण की, श्राप दिया, भैंना, मेढा, मुरगा, कुत्ते, आदिक लडवाये, या इनकी लडाई देखी, क्रुद्धिमान की क्रुद्धि देख इर्षा की. मिट्टी, नमक, धान, विनोले विना कारण मसले, हरी वनस्पति खुंदी. शस्त्रादिक वनवाये, राग मोह वश से एक का भला चाहा, एक का बुरा चाहा.

मृत्यु की बाछा की, मैना, तोते, कबुतर, बटेर, चकोरादि पक्षियों की पींजरे में डाग्न इत्यादि आठमे अनर्थदंड विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

नवमे सामायिक व्रत के पाच अतिचार, “तिविहे दुप्पणिहाणे” सामायिक में संकल्प, विकल्प किया; चित्त स्थिर न रखा, सावद्य वचन बोला, प्रमार्जन किये बिना शरीर हल्काया, इधर उधर किया शक्तिके होते हुए सामायिक न किया. सामायिक में खुले मुँह बोला, नींद ली, बिकथा की, घर संबंधी विचार किया, दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा, सचित्त वस्तु का संघट्टा हुआ. स्त्री, तिर्यच आदि का निरंतर परपर संघट्टा हुआ, मुहपत्ति संघट्टी, सामायिक अधुरा पारा, बिना पारे उठा। इत्यादि नवमे सामायिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

दशवे देशावगासिक व्रत के पाच अतिचार, ‘आणवणे पेसवणे आणवणप्पओगे, पेसणप्पओगे, सद्वाणुवाई, रुवाणुवाई, बद्दियापुग्गळपक्खेवे नियमित भूमि में बाहिर से वस्तुएं मगवाई अपने पास से अन्यत्र भिजवाई, खुंखारादि शब्द

कर के, रूप दिखा के वा कंकरादि फेककर, अपना होना मालूम किया । इत्यादि दशमे देवशागासिक व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

ग्यारहवें पौषधोपवास व्रत के पांच अतिचार, “संधारुच्चार विहि” अप्पडिलेहिअ दूप्पडिलेहिअ सिज्जासंधारए अप्पडिलेहिअ, दूप्पडिलेहिअ उच्चारपासवण भूमि, पौषध लेकर सोने की जगह पर विना पुजे प्रमार्जे सोया । स्थडिलादि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं । लघुनीति करने या परठने समय “अणुजाणह जस्सुग्गह” न कहा परठे बाद तीन बार बोसिरे बोसिरे न कहा, जिनमंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए निसीहि और बाहिर निकलते आवस्सही तीन बार न कही. वस्त्रादि उपधि की पडिलेहणा न की । पृथ्वी-काय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनत्पत्तिकाय, त्रसकाय का संघट्टा हुआ । संधारा पोरिसी पहनी भुलाई विना संधारे जमीन पर सोया पोरिसी में निदली । पारणादि की चिता की. समय पर देववंदन न किया. पौषध देरी से लिया और जल्दी से पारा. पर्वतिथि को पौषध न लिया । इत्यादि ग्यारहवे पौषधव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

वारहवे अतिथिसंविभाग व्रत के पांच अतिचार, 'सच्चित्ते निविखवणे' सचित्त वस्तु के संघट्टेवाला अकल्पनीय आहारपाणी साधु, साध्वी को दिया, देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही, देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही, न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही, न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही, गोचरी के वक्त इधर उधर हो गया, गोचरी का समय टाला. बेवक्त साधुमहाराज की प्रार्थना की, आये हुए गुणवान की भक्ति न की, शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया, अन्य किसी धर्मक्षेत्र (पाठशाला, लाइब्रेरी, गुरुकुल, पांज-रापोल आदि) को पडता देख मदद न की; दीन दुःखी की अनुकंपा न की, इत्यादि वारहवे अतिथि संविभाग व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

संलपणा के पांच अतिचार, "इहलोए परलोए" इह-लोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे । धर्म के प्रभाव से इहलोक सर्वंधी राजऋद्धि भोगादि की वांछा की । परलोक में देवदेवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की. सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की । दुःख आने-

पर मरने की वांछा की । कामभोग की वांछा की । इत्यादि संलेपणा व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो; वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तपाचार के वारह भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर, “अण-सण मृणोयरिया” अनशन-शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवासादि तप न किया । ऊनोदरी दो चार ग्रास कम न खाये । वृत्तिसंक्षेप-द्रव्य खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया, रस-विगय त्याग न किया । कायक्लेश-लोचादि कष्ट सहन न किया, संलीनता-अंगोपाग संकोच न किया. पच्चक्खण तोड़ा, भोजन करते समय एकासणा आविल प्रमुख में चौकी पटडा, अखलादि हिळता ठीक न किया. पच्चक्खण पारना भूलाया, बैठते नक्कार न पढा, उठते पच्चक्खण न किया. निवि, आविल, उपवासादि तप में भूँसे कच्चा पानी पिया. वमन हुआ. इत्यादि बाह्य तप संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

अभ्यंतर तप “पायच्छित्तं विणओ” शुद्धातःकरण-पूर्वक गुरु महाराज से आलोचना न ली, गुरु की दी हुई आलोचना संपूर्ण न की. देव, गुरु, संघ, साध्वी का विनय न

क्रिया. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वेयावच्च न की. वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया. धर्मव्यान, शुक्लव्यान व्याया नहीं. आर्त्तध्यान, रौद्रव्यान व्याया, दुःखक्षय, कर्म-क्षय निमित्त दस, बीस, लोगस्स का काउस्सग्ग न किया. इत्यादि अभ्यंतर तप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

वीर्याचार के तीन अतिचार, पढते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य मे मन, वचन, काया का बल-वीर्य-पराक्रम फोरा नहीं, विधिपूर्वक पंचाग खमासमण न दिया. द्वादशावर्त्त वंदन का विधि भली प्रकार न किया. अन्यचित्त निरादर से बैठा. देववंदन, प्रतिक्रमण में जल्दी की। इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

नाणाई अट्ठपइवय, सम्मसंलेहण पण पन्नर कम्मेषु ।  
वारस तप विरिअतिगं, चउव्वीसं सयं अइयारा ॥१॥

“पडिसिद्धाण करणे” प्रतिषेध अभक्ष, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभ, परिग्रहादि किया, देवपूजा, षट्कर्म,

सामायिकादि छ आवश्यक, विनयादिक अरिहंत की भक्ति-  
 प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं. जीवजीवादिक सूक्ष्म  
 विचार की सद्वहणा न की. अपनी कुमति से उत्सूत्रप्ररूपणा  
 की तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन,  
 परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्या-  
 ख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद,  
 मिथ्यात्यगल्य यह अद्वारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे.  
 दिन कृत्य, प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया, और भी  
 जो कुछ वीतराग की आज्ञा से मैंने विरुद्ध किया, कराया,  
 करते को भठा जाना, इन चार प्रकार के अतिचार मे जो  
 कोई अतिचार, पक्ष दिग्गस मे सूक्ष्म बादर जानते, अजानते  
 लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

एवंकारे श्रावकधर्ममे सम्यक्त्वमूल चारह व्रत संबंधी  
 एक सो चौबीस अतिचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिग्गस  
 में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन,  
 वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

---

## ( पाक्षिक अतिचार )

नाणम्मि ढंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तहय वीरीयम्मि, आयरणं अयारो, इअ एसो पंचहा भणियो. (१) ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार + पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म चादर, जाणता भजाणता हुआ होय, ते सविहुं मन, वचन, कायाये करी मिच्छामि दुक्कडं (१)

तत्र 'ज्ञानाचारे' आठ अतिचार, काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहअनिन्हवणे; वंजण अत्थ तदुभए, अट्टविहो नाणमायारो (१) ज्ञानकालवेलाये भण्यो गुण्यो नहीं, अकाले भण्यो, विनय-हीन बहुमान हीन; योग-उपधान-हीन, अनेरा कने भणी अनेरो गुरु कह्यो । देव-गुरु वांदणे, पडिक्रमणे, सज्झाय करता, भणतां, गणता, कूडो अक्षर काने मात्राये अधिको ओछो भण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो । तदुभय कूडां कहां, भणीने विसार्या, साधुतणे धर्मे काजो अणउद्धर्ये, दाडो अणपडिलेहे, वसति अणशोधे,

+अहि चउमासी पडिक्रमणामा- 'चउमासी दिवसमाही' अने सक्कळरी पडिक्रमणामा 'सक्कळरी दिवसमाही' बोलवु ए प्रमाणे दरेक ठेकाणे जाणवुं



अणपवेसे, असज्जाय अणोज्झाय माहे श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धात भण्यो गण्यो, श्रावकतणे धर्मे, स्वविरावलि, पडि-  
क्रमणा उपदेशमाला प्रमुख सिद्धात भण्यो गण्यो, काळवेळा काजो अणउद्धर्ये पढ्यो, ज्ञानो-पगरण-पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थुकं लाग्युं, थुंके करी अक्षर माज्यो, ओशीसे धर्यो, कने छता आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षता उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराचे विणाइयो, विणसतां उवेख्यो; छती शक्तिए सार-संमाळ न कीधी, ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष मत्सर चिंतव्यो । अवज्ञा आशातना कीधी । कोई प्रत्ये भणता गणता अन्तराय कीधो । आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो । मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्वृत्ता कीधी । कोई तोतडो वोवडो देखी हस्यो, वितकर्यो अन्यथा प्ररूपणा कीधी । ज्ञानाचार विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणता, अजाणता हुओ होय, ते सविहुं मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१) ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार, निस्संक्रिय निक्कखिय, निव्वि-  
तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ, उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ट (१) । देव-गुरू-धर्म तणे विषे निःशंकपणु न कीधु, तथा एकात निश्चय न कीधो. धर्मसंवधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहां । साधु साध्वीना मल-मलीन गात्र

देखी दुगंछा निपजावी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर  
अभाव हुआ। मिश्रयात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं  
कीधुं। तथा संधमाहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी। अस्थि-  
रीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी। अवहुमान  
कीधुं। तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य,  
भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणाश्यां, विणसतां उवेक्या,  
छती शक्ति ए सार संभाल न कीधी। तथा साधर्मिक साथे  
कलह कर्मबंध कीधो। अधोती, अष्टपड-मुखकोश पाखे  
देवपूजा कीधी। विवप्रत्ये वासकुंपी, धूपधानुं, कळगतणो  
ठक्को लाग्यो, विम्ब हाथ थकी पाड्युं। उसास निःसास  
लाग्यो। देहरे उपाश्रये मलश्लेष्मादिक लोहूं। देहरा  
माहे हास्य, खेल, केळि, कुतुहल आहार निहार कीधा।  
पान, सोपारी, निवेदीया खाधां। ठवणायरिय हाथ थकी  
पाड्या; पडिलेहवा विसार्या, जिनभवने चोरागी आजातना,  
गुरु गुरुणी प्रत्ये तेजीश आशातना कीधी होय। गुरुवचन  
'तहत्ति' करी पडिवज्युं नहीं, दर्शनाचार विपईयो अनेरो  
जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणतां  
अजाणता हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी  
तरस मिच्छामि दुक्कड (२)

चारित्र्याचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो,  
पचहिं समिइहि तीहिं गुत्तीहि; एस चरित्तायारो, अहुविहो,  
होइ नागव्वो। (१) ईर्यासमिति ते अणजोये हिंइया। भाषा-

समिति ते सावद्य वचन बोल्या । एषणा समिति ते-तृण  
डगल, अन्न, पाणी, असूक्ष्मत्तु लीधुं. आदानभडंमत्तनिरुखेवणा-  
समिति ते-आसन, शयन, उपकरण, मातरुं प्रमुख अणपुंजी  
जीवाकुल भूमिकाए मूवयुं-लीधु, पारिष्ठापनिकासमिति ते-मल,  
मूत्र, श्लेष्मादिक अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाए परठव्युं, मनो-  
गुप्ति मनमा आर्त्त-राद्रध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति सावद्य वचन  
बोल्या । कायगुप्ति-शरीर अणपडिलेहु हलाव्युं, अणपुंजे  
वेठा । ए अष्ट प्रवचन माता ते (साधुतणे धर्मे सदैव अने)  
श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रूडी पेरे पाळया  
नहीं, खंडणा विराधना हुई । चारित्राचार विपइयो  
अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर  
जाणता अजाणता हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए  
करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (३).

विशेषतः-श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्पत्त्व मूल वार व्रत,  
सम्यक्त्वतणा पाच अतिचार ॥ संका कंख विगिच्छा० ॥  
शंका-श्रीअरिहंततणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्या-  
दिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियाना चाग्नि, श्री जिन-  
वचन तणो संदेह कीधो, आकाक्षा-ब्रह्मा. विष्णु, महेश्वर,  
क्षेत्रपाल, गोगो, आमयाल, पादरदेयता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा ।  
विनायक, हनुमत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश,  
नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जुजुआ, देव देहराना प्रभाव देखी  
रोग आतंक कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्ये पूज्या, मान्या,

सिद्ध विनायक जीराउलाने मान्युं-इच्छुं । बौद्ध-साख्या-  
 दिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगिया, जोगी, दर-  
 वेश अनेरा दर्शनीया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ  
 जाण्था विना भूलाव्या, मोह्या । कुशास्त्र शीख्या । साभळ्या.  
 श्राद्ध, संवत्सरी, होली, वळेव, माहिपूनम, अजा-पडवो,  
 प्रेतबीज, गौरीबीज, विनायक-चोथ, नाग-पचमी, झीलणा  
 छट्टी, सील-सातमी, ध्रुव आठमी, नौली-नवमी, अहवा  
 दशमी, व्रत-अग्यारशी, वत्स-वारशी, धन-तेरशी, अनंत-  
 चउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधा ।  
 नवोदक, याग भोग उतारणां कीधा, कराव्यां, अनुमोद्या.  
 पीपळे पाणी वाल्या, घलाव्या, घर बाहिर क्षेत्रे, खळे,  
 कुवे, तळावे, नदीए, द्रहे, बावीए, समुद्रे, कुडे, पुन्य-हेतु  
 स्नान कीधा. कराव्या, अनुमोद्या, दान दीधा । ग्रहण  
 शनिश्चर, महा मासे नवरात्री न्हाया । अजाणना थाप्यां.  
 अनेराइ व्रतव्रतोला कीधा कराव्या. 'वित्तिगिच्छा' धर्म संव-  
 धीया फलतणे विषे संदेह कीधो । जिन अरिहंत धर्यना आगर,  
 विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार इस्या. गुण भणी न मान्या,  
 न पूज्या । महासती, महात्मानो इहलोक परलोक संवंधीया भो-  
 गवाहित पूजा कीधी । रोग, आतंक कष्ट आव्ये खीण वचन  
 भोग मान्या, महात्मानां भात, पाणी, मल, शोभातणी निंदा  
 कीधी । कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुभाव हुओ ।  
 मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी; प्रीति

माडी; दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो कीधो ॥ श्रीसम्यक्-  
त्वव्रत-विपद्ओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि,  
सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन  
वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१).

पहेले स्थूल प्राणातिपात-विरमणव्रते पांच अतिचार ॥  
वहबंय-छविच्छेष्ट० (१) द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे  
गाढो घाव घाल्यो । गाढे बंधने बाध्यो । अधिक भार  
घाल्यो । निर्लाछन कर्म कीधा । चारा पाणी तणी बेळाये  
सार-पंभाळ न कीधी । लेहणे देहणे किणही प्रत्ये  
लंघाव्यो । तेणे भूख्ये आपणे जम्या, कन्हे रही मराव्यो ।  
बंदीखाने घळाव्यो । सळ्यां धान्य तावडे नाख्या, दळाव्या  
मरडाव्या, शोधी न वाव्या । इंधण, छाणा अणशोध्या  
वाळ्या, ते माहि साप, विछी, खजुरा; सरवला, माकड,  
जुआ, गिगोडा, साहता मुआ, दुहव्या, रुडे स्थानके  
न मूक्या. कीडी, मंकोडी ना इंडा विछोह्या, लिख फोडी,  
उदेही, कीडी मंकोडी, धीमेल, कातरा, चुडेल, पतंगीया,  
देडकां, अळसीया, इयळ, कुंता, डास, मसा, वगतरा,  
माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्टा । माळा हलावता, चलावता  
पंखी चकला, कागतणां इंडा फोड्या, अनेरा एकेद्रियादिक  
जीव विणास्या, चाप्या, दुहव्या, कांई हलावता, चला-  
वता. पाणी छाटता अनेरा काड कामकाज करता  
निर्व्वसपणुं कीयुं । जीवरक्षा रूही न कीधी ! संखारो

सुकव्यो । रुडुं गरुणुं न कीधुं, अणगल पाणी वापर्युं, रुडी जयणा न कीधी, अणगल पाणीए झीलया । लुगडा घोया । खाटला तावडे नाख्या, झाटक्या । जीवाकुल भूमि लीपी । वाशी गार राखी । दळणे, खाडणे लीपणे रुडी जयणा न कीधी । आठव चउदशना नियम भाग्या, धुणी करापी ॥ पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण-व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता. अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१).

बीजे स्थूल-मृषावाद-विरमणव्रते पांच अतिचार । सहसा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारे कुणहि प्रत्ये अजुगहुं आल-अभ्याख्यान दीधुं । स्वदारा-मंत्रभेद कीधी । अनेरा कुणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो । कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो, कूडी साख भरी, थापण-मोसो कीधी । कन्या, गौ, ढोर, भूमिसंबंधी लेहणे देहणे व्यवभाये वाद वढवाड करतां मोटकुं जूट्हुं वोल्या । हाथ-पग-तणी गाल दीधी । कडकडा मोइया, मर्म वचन वोल्या ॥ बीजे स्थूल-मृषा-वाद-विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष-दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणता, अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (२).

बीजे स्थूल-अदत्तादान-विरमणव्रते पांच अतिचार ॥

तेनाहडप्पओगे० (३) घर, बाहिर, क्षेत्र, खळे पराई वस्तु  
अणमोकली लीधी, वावरी, चोराइ वस्तु वहोरी । चोर धाड  
प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं । तेहनी वस्तु लीधी ।  
विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो । नवा पुराणा, सरस, विरस,  
सजीव, निर्जोव वस्तुना भेल-संभेल कीधा । कूडे काटले,  
तोले, माने, मापे, वहोर्या, दाणचोरी कीधी । कुणहीने  
लेखे वरास्यो । साटे लाच लीधी, कूडो करहो काढ्यो  
विश्वासघात कीधो, परवंचना कीधी । पासंग कूडा कोधा ।  
दाडी चढावी । लहके त्रहके कूडा काटला, मान मापा कीधा ।  
माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहीने दीधुं । जुदी  
गाठ कीधी । थापण ओळवी । कुणहीने लेखे पलेखे भूल-  
व्युं । पडो वस्तु ओळवी लीधी ॥ त्रीजे स्थूल-अदत्तादान-  
विरमणव्रत विपइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवस-  
माहि, सूक्ष्म वादर जाणता, अजाणता हुओ होय ते सविहु  
मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (३).

चोथे स्वदारा-संतोष, परस्त्री-गमन, विरमण-व्रते  
पाच अतिचार । अपरिगगहिया-ईत्तर० (४) । अपरिगृ-  
हीतागमन, ईत्तरपरिगृहीतागमन कीधु । वियवा, वेळ्या,  
परस्त्री, कुलागना, स्वदारा, जोइतणे विषे दृष्टि-विपर्यास  
कीयो । सराग वचन बोल्या । आठम चउदश, अनेरी पर्व-  
तिथिना नियम लई भाग्या; घरघरणा कीया, कराव्या, वर-  
वहु वखाण्या । कुविकल्प चितव्यो । अनंगक्रीडा कीवी ।

स्त्रीना अंगोपाग निरख्या । पराया विवाह जोइया । हिंगला हिंगली परणाव्या, कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार सुहणे समातरे हुआ. कुस्वप्न लाध्या । नट, विट, स्त्रीशुं हासु कीधुं ॥ चोये, स्व-दारा-संतोष, परस्त्रीगमनविरमण व्रत विपद्ओ अनेरो जे अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता, अजाणता हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुकडं (४).

पाचमे-परिग्रह-परिमाण-व्रते पाच अतिचार ॥ धन-धन्न-खित्तप्रत्यु० ॥ धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रुप्य, सुवर्ण, कुप्य; द्विपद, चतुष्पद ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरात वृद्धि देखी, मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो, माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो । परिग्रह परिमाण लीधुं नहि, लइने पढियुं नहि, पढबु विसायुं, अलीधुं, मेदु, नियम विसार्या ॥ पाचमे परिग्रह परिमाण व्रत विपद्ओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुकड । (५).

छट्ठे दिग् परिमाण व्रते पाच अतिचार ॥ गमणस्त उ परिमाणे० ऊर्ध्व-दिशि, अधोदिशि, तिर्यग्-दिशि जावा आवरा तणा नियम लई भाग्या । अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भूमि गया । पाठवणी आधी पाछी मोकली । वहाण-



व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले गामतरु कीधुं । भूमिका एक गमा संक्षेपी. वीजी गमा वधारी ॥ छठे दिग् परिमाणव्रत विषडओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुआ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (६).

सातमे भोगोपभोग-परिपाणव्रते भोजन आश्रयी पाच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिवद्धे० सचित्त नियम लीधे अविक सचित्त लीधुं ॥ अपक्वाहार, दुष्पक्वाहार, तुच्छोषधितणुं भक्षण कीधुं । ओळा, उवी. पोकपापडी खाधा ।

सचित्त-दव्व-विगई, -वाणह तंबोल-वत्थ-कुसुमेसुः वाहण-सयण-विलेवण, वंभ-दिसि-न्हाण मत्तेसु (१). ए चौद नियम दिनगत, रात्रिगत लीया नही, लडने भाग्या । वावीश अभक्ष्य, वत्रीश अनंतकाय माहि आदु. मूळा, गाजर, पिड, पिडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आवली, गळो न. बरडा खाधा । वागी कठोळ, पोली रोटली, वण दिवसनुं ओदन लीधु मधु-महुडा, माखण, माटी, वेगण. पीलु. पीचुं. पंपोटा. विद. हिम, कर्हा, घोलवडा, अजाण्या फल, टिवरुं गुंदा, स्फोर, वोळ-अयाणुं, आम्वलवोर, काचु मीठुं, तिल, खसखस, कोठिवडा, खाधा । रात्रिभोजन कीधा । लगभग वेळाए वालु कीधुं । दिवस विण ऊगे शीगव्या । तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान; इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडि-मम्मे. भाडि कम्मे, फोडी-कम्मे.

ए पांच कर्म ॥ दंत-वाणिज्य, लक्ख-वाणिज्य, रस-वाणिज्य, केस-वाणिज्य, विष-वाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंन-पिउग कम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहत्तलायसोस-णया, असई पोसणया, ए पांच सामान्य । ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान बहुसावध महा-रंभ, रागण, लीहाला, कराव्या । इंट निर्माडा पचाव्या । धा-णी, चणा, पक्खान्न करी वेच्या । वाशी माखण तवाव्या । तिल बहोर्या, फागण मास उपरात राख्या, दलीदो कीधो । अंगीठा कराव्या, श्वान, वीलाडा, सुडा, सालही पोण्या । अनेरा जे कोई बहु सावध खर-कर्मादिक समाचर्या । वाशी गार राखी, लींपणे, गुंपणे, महारंन कीधो । अणशो-व्या चुला संद्रुक्या । घी, तेल, गोळ छाशतणा भाजन उधाडा मूक्या । ते माहि माखी, कुंति, उंदर, गीरोली पडी । कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधो । सातमे भोगोदभोग-परिमाणव्रत विपइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमांहि, सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७).

आठमे अनर्थ-दंड विरमण-व्रते पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प लगे विट-चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधो । पुरुष, स्त्रीना हावभाव, रूपश्रृङ्गार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधो, पराइ तात कीधो, तथा

व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले गामतरु कीधुं । भूमिका एक गमा संक्षेपी. वीजी गमा वधारी ॥ छट्टे दिग् परिमाणव्रत विपडओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणतां, अजाणता हुओ होय ते सग्निहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (६).

सातमे भोगोपभोग-परिमाणव्रते भोजन आश्रयी पाच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिवद्धे० सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्वाहर, दुष्पक्वाहार, तुच्छौषधितणुं भक्षण कीधुं । ओळा, उवी, पोकपापडी खाधा ।

सचित्त-दन्व-विगई, -वाणह तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु; वाहण-सयण-विलेवण, वंभ-दिसि-न्हाण भत्तेसु (१). ए चौद नियम दिनगत, रात्रिगत लीया नही, लडने भाग्या । बावीश अभक्ष्य, बत्तीश अनंतकाय माहि आदु. मूळा, गाजर, पिड, पिडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आवली, गळो वावरडा खाधा । वागी कठोळ, पोली रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधु मधु-महुडा, माखण, माटी, वेणण. पीलु. पीचुं. पंपोटा. विप. हिम, कग्हा, घोलवडा, अजाण्या फल. टिंवरुं गुंदा, म्होर. ब्रोळ-अयाणुं, आम्बलवोर, काचु मीठुं, तिल, ससखस, कोठिवडा, खाधा । रात्रिभोजन कीधा । लगभग वेळाए वालु कीधुं । दिवस विण ऊगे शीराव्या । तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान; इगालकम्मे, वणकम्मे, साडि-मम्मे. भाडि कम्मे, फोडी-कम्मे,

ए पांच कर्म ॥ दंत-वाणिज्य, लकख-वाणिज्य, रस-वाणिज्य, केस-वाणिज्य, विष-वाणिज्य, ए पाच वाणिज्य ॥ वंन-पिङ्ग कम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवगिदावणया, सरदहनलायसोस-णया, असई पोसणया, ए पाच सामान्य । ए पाच कर्म, पाच वाणिज्य, पाच सामान्य, एवं पन्नर कर्माशन बहुसावद्य महा-रंभ, रागण, लोहाला, कराव्या । इंट निमाडा पचाव्या । धा-णी, चणा, पम्बान्न करी वेच्या । वागी माखण तमाव्या । तिल बहोर्या, फागण मास उपरात राख्या, दलीदो कीधो । अंगीठा कराव्या, श्वान, बीलाडा, सुडा, सालही पोष्या । अनेरा जे कोई बहु सावद्य खर-कर्मादिक समाचर्या । वागी गार राखी, लीपणे, गुंपणे, महारंन कीधो । अगशो-व्या चुला संद्रुक्या । घी, तेल, गोळ छाशतणां भाजन उघाडा मूक्यां । ते माहि माखी, कुंति, उंदर, गीरोली पडी । कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधो । सातमे भोगोदभोग-परिमाणव्रत विपद्दो अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुआ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७).

आठमे अनर्थ-दंड विरमण-व्रते पाच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुडए० कंदर्प लगे विट चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधो । पुरुष, स्त्रीना हावभाव, रूपश्रृङ्गार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधो, पराई तात कीधी, तथा पैशुन्यपणु कीधुं, आर्त्तैरौद्रव्यान व्याया । खाडा, कटार,

लीधे संधारातणी भूमि न पुंजी, बाहिरळां लहुडा वडा स्थं-  
 डिले दिवसे गोठ्या नहिं, पडिलेह्या नहिं, मातरुं अणपुंज्युं  
 हलाव्युं, अणपुंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवता 'अणुजाणह  
 जस्सुग्गहो' न कह्यो । परठव्या पुंठे वार त्रण 'वोसिरे वोसिरे'  
 न कह्यो, पौपधशालामाहि पेसता 'निसीहि' निसरता  
 'आवस्सहि' वार त्रण भणी नहि । पुढवी, अप्, तेऊ, वाऊ,  
 वनस्पति त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव हुआ, संधारा  
 -पोरिसि तणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमाहि  
 ऊंठ्या, अविधे सथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिता  
 कीधी, काळवेळाए देव न वाद्या, पडिक्कमणुं न कीधु,  
 पोसह<sup>१</sup> असुरो लीधो, सवेरो पार्यो । पर्वतीथे पोसह लीधो  
 नहि ॥ अग्यारमे पौपधोपवासव्रत विषइओ अनेरो जे कोई  
 अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता  
 हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स  
 मिच्छामि दुक्कड ( ११ ).

वारमे अतिथि-संविभाग-व्रते पाच अतिचार ॥ सचित्ते  
 निक्खिवणे ० ॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छता म्हात्मा  
 महासती प्रत्ये असुज्जतुं दान दीधु, देवानी बुद्धे असुज्जतु  
 फेडी सुज्जतु कीधुं, परायुं फेडी आपणु कीधु, अण  
 देवानी बुद्धे सुज्जतुं फेडी असुज्जतुं कीधु, आपणु फेडी  
 परायुं कीधुं, वहोरवा वेळा टाळी रह्या । असुर करी

१ लघुनीति-पेशाव अने बडीनीति झाडो ए वन्नेनो जग्या

२ मोड । ३. बहेलो ४. साधु-साध्वीने न रखे तेवु-अशुद्ध

महात्मा तेइया । मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवंत आव्ये भक्ति न साचवी । छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र 'सीदाता छती शक्तिए उद्वर्या नहि । 'दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥ वारमे अतिथि-संविभाग व्रत विपइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वार जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि-दुक्कडं. (१२).

संलेपणा तणा पाच अतिचार० इहलोएसं परलोए० ईह-लोगासंसप्पओगे, परल्लोगासंसप्पओगे, जीदिआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे ॥ इहलोके-धर्मना प्रभाव लगे राजक्रुद्धि, सुख, सौभाग्य, पन्वार वाछ्या. परलोके देव, देवेन्द्र, विद्यावर चक्रवर्ती तणी पदवी वांछी, सुख आव्ये जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आव्ये मरण वाछ्युं, कामभोगतणी वाछा कीवी. संलेपणा व्रत विपइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१३).

तपाचार वार भेद, छ वाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मणोअग्निआ० अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथे छती-शक्तिण कीयो नही. ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पाच सात

लीधे संधारातणी भूमि न पुंजी, बाहिरळां लहुडां वडा स्थ-  
 ङिले दिवसे शोध्यां नहिं, पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपुंज्युं  
 हलाव्युं, अणपुंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवता 'अणुजाणह  
 जस्सुग्गहो' न कह्यो । परठव्या पुंठे वार त्रण 'वोसिरे वोसिरे'  
 न कह्यो, पौपधशालामाहि पेसता 'निसीहि' निसरता  
 'आवस्सहि' वार त्रण भणी नहि । पुढवी, अण्, तेऊ, वाऊ,  
 वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव हुआ, संधारा-  
 -पोरिसि तणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमांहि  
 ऊध्या, अविधे सथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिता  
 कीधी, कालवेळाए देव न वाद्या, पडिक्कमणुं न कीधु,  
 पोसह<sup>१</sup> असुरो लीधो, सवेरो पाथर्यो । पर्वतीथे पोसह लीधो  
 नहि ॥ अग्यारमे पौपधोपवासव्रत विषडओ अनेरो जे कोई  
 अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणता  
 हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स  
 तमिच्छामि दुक्कड ( ११ ) ।

वारमे अतिथि-संविभाग-व्रते पाच अतिचार ॥ सचित्ते  
 निक्खिवणे ० ॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छता<sup>२</sup> महात्मा  
 महासती प्रत्ये असुज्जतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धे असुज्जतु  
 फेडी सुज्जतुं कीधुं, परायुं फेडी आपणु कीधु, अण  
 देवानी बुद्धे सुज्जतुं फेडी असुज्जतुं कीधुं, आपणुं फेडी  
 परायुं कीधुं, वहोरवा वेळा टाळी रत्ता । असुर करी

१ लघुनीति-पेशाव अने वडीनीति झाडो ए वन्नेनो जग्या

२ मोडा. ३. वहेलो ४. माधु-माध्वीने न रत्ते तेवुं-अणुद्व

महात्मा तेइया । मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवत आव्ये  
भक्ति न साचवी । छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न  
कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र 'सीदाता छती शक्तिए उद्वर्या  
नहि । 'दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥ वारमे  
अतिथि-संविभाग व्रत विपइयो अनेरो जे कोई अतिचार  
पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वार जाणता अजाणता हुओ होय  
ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि-  
दुक्कडं. (१२).

संलेषणा तणा पाच अतिचार० इहलोएसं परलोए० ईह-  
लोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीदिआसंसप्पओगे,  
मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे ॥ इहलोके-धर्मना  
प्रभाव लगे राजक्रुद्धि, सुम्भ, सौभाग्य, परिवार वाछ्या.  
परलोके देव, देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती तणी पदवी वाछी,  
सुख आव्ये जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आव्ये मरण वाछ्युं,  
कामभोगतणी वाछा कीधी. संलेषणा व्रत विपइयो अनेरो  
जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता  
अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी  
तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१३).

तपाचार वार भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण  
मूणोअरिआ० अणसण मणी उपवास विशेष पर्वतिथे छती-  
शक्तिए कीधी नहीं. ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पांच सात



उणा रह्या नहीं. वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुओनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगयत्याग न कीधो, काय-क्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्या नहीं. संलीनता—अंगोपांग संकोची राख्या नहीं, पच्चक्खाण भाग्घा, पाटलो डगडगतो फेडयो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि पुरिमइढ, एका-सणुं, वेआसणुं, नीवि, आयंविल प्रमुखपच्चक्खाण पारवुं विसायुं, वेसता नवकार न भण्यो. उठता पच्चक्खाण करवु विसायुं. गंठसीयुं भाग्युं, नीवि, आंविल उपवासादिक तप करी काचुं याणी पीधु, वमन हुआ ॥ बाह्य तप विपइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१४)

अभ्यंतर तप ॥ पायच्छिन्नं विणओ० ॥ मनशुद्धे गुरु-कन्हे आलोअण लीधी नहीं, गुरुदत्त-प्रायश्चित्त तप लेखा-शुद्धे ण्हाचाडयो नहि; देव, गुरु, संघ, साहम्मि प्रत्ये विनय साचव्यो नहि, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखलु वेयावच्च न कीधु । वाचना पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा. धर्मकथा, लक्षण पंचविय स्थाव्याय न कीधो, धर्मव्यान शुक्लव्यान न व्याया, आर्तव्यान रौद्रध्यान व्याया । कर्मक्षय-निमित्ते लोगस्स दश-वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विपइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुआ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कड (१५).

उणा रह्या नहीं. वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुओनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगयत्याग न कीधो, काय-क्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्या नहीं. संलीनता-अंगोपाग संकोची राख्या नहीं, पच्चक्खाण भाग्या, पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि पुरिमइद, एका-सणुं, वेआसणुं, नीवि, आयंविल प्रमुखपच्चक्खाण पारवुं विसायुं, वेसता नवकार न भण्यो. उठता पच्चक्खाण करवु विसायुं. गंठसीयुं भाग्युं, नीवि, आविल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधु, वमन हुओ ॥ बाह्य तप विपइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१४)

अभ्यंतर तप ॥ पायच्छिन्नं विणओ० ॥ मनशुद्धे गुरु-कन्हे आलोअण लीयी नहिं, गुरुदत्त-प्रायश्चित्त तप लेखा-शुद्धे प्फोचाड्यो नहिं; देव, गुरु, मंघ, साहम्मि प्रत्ये दिनय साचव्यो नहिं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्सी प्रमुखलु वेयावच्च न कीयु । वाचना पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा. धर्मकथा, लक्षण पंचविअ स्याव्याय न कीधो, धर्मव्यान गुकल-यान न व्याया, आर्तव्यान रौद्रव्यान व्याया । कर्मक्षय-निमित्ते लोगस्स दण-वीगनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विपइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१५).

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूढिअ वळविरिओ ०  
॥ पढवे, गुणवे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक,  
योसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन वचन  
काया तणुं छतुं 'वळ छतुं' वीर्य गोपव्युं । रुडा पंचाग खमा-  
समण न दीधा । वादणातणा आवर्त विधि साचव्या नहीं ।  
'अन्यचित्त निरादरपणे बेठा । उतावळुं देववदन, पडिकमणुं  
कीधुं ॥ वीर्याचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष  
दिवस माहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते  
सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कंडं  
(१६).

नाणाईअट्ट पईवय, सम्मसंलेहण पण पन्नरकम्मेसु  
॥ वारस तप विरिअतिगं चउव्गीससयं अइयारा ॥१॥ पडि-  
सिद्धाणं करणे ० ॥ प्रतिषेध अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज-  
भक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधा । जीवाजीवादिक सूक्ष्म  
विचार सदह्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररुपणा  
कीधी । तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन,

१ इन्द्रियो अने शरीरनी शक्ति । २ आत्मानी शक्ति ।  
३ शून्य चित्ते

+ ज्ञानादिना पटले ज्ञानाचार, दर्शनाचार अने चारित्राचारना  
आठ आठ, ते (२४) प्रत्येक व्रतना एटले श्रावकना बार व्रतना  
दरेकना पाच पाच ते, (६०) सम्यक्त्व अने संलेषणाना पाच  
पाच ते (१०) कर्मादानना (१५) तपाचारना (१२) अने वीर्या-  
चारना (३) एम सर्व मळी १२२ अतिचार ।

पारग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्या-  
ख्यान, पैशुन्य, रति-अरति, पर-परिवाद, माया मृषावाद,  
मिथ्यात्वशल्य ए अट्टार पापस्थानक कीधा, कराव्याः,  
अनुमोधा होय, दिनकृत्य-प्रतिक्रमण, विनय, वेयावच्च न  
कीधा । अनेरुं जे काई वीतरागनी आज्ञा-विरुद्ध कीधुं,  
कराव्युं, अनुमोधुं होय, ए 'चिहुं' प्रकारमाहे अनेरो जे  
कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, वादर जाणता अजाणता  
हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स  
मिच्छामि दुक्कडं (१७).

श्रावकना — पक्खी — (चोमासी-संवच्छरी)

अतिचार समाप्त ।

एवंकारे श्रावकतणे धर्म श्रीसम्यक्त्व मूल वार व्रत एकसो  
चोवीस अतिचार माहि अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस-  
माहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु;  
मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि, पक्खिअ दुच्चित्तिअ, दुव्वासिअ, दुच्चिट्ठिअ,  
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।  
इच्छकारि भगवन् ! पसाय करी पक्खीतप प्रसाद करशोजी

चउत्त्येण एक उपवास, दो आविल, तीन नीवि, चार  
एकामणा, आठ वेआसणा, दो हजार सज्झाय, यथाशक्ति

१ प्रतिपिद्ध वस्तुनु करवु । करवा योग्य अनुष्ठाननु न करवु

३ वीतरागना वचननी अश्रद्धा करवी अने ४ विपरीत प्ररूपणा  
करवी ए चार प्रकार.

तप करके पहुँचानाजी ( तप किया हो तो “ पहुँचिओ ”  
कहे और करने का हो तो “ तहत्ति ” कहे और न करने का  
हो तो यथाशक्ति कहना या मात्र मौने रहना ) ॥

( फिर नीचे मुताबिक दो वादणा देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-  
हिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि,  
अहो का-यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्प  
किलंताणं, बहुसुभेण भे पक्खो वडक्कंतो ! ॥ ३ ॥ जत्ता भे  
॥ ४ ॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो,  
पक्खिअं वडक्कमं ॥ ६ ॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासम-  
णाणं पक्खिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जक्किचि  
मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए,  
कौढाए, माणाए, मायाए, लोभाए. सव्वकालिआए सव्वमि  
च्छोशयाराए, सव्वधम्ममाइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे  
अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥ १ ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि अहो  
कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं  
बहुसुभेण भे पक्खो वडक्कंतो ॥ ३ ॥ जत्ता भे ॥ ४ ॥  
जवणिज्जं च भे ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो पक्खिअं वडक्कमं  
॥ ६ ॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए  
तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए  
सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए  
आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्क-  
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! पत्तेअ खामणेणं अब्भु-  
ट्ठिओहं अब्भितर पक्खिअ खामेउं ? “ इच्छं ” खामेमि  
पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराह्वाणं,  
जंकिचि अपत्तिअ, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे,  
आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि-  
भासाए, जंकिचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा वायर वा  
तुव्वमे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावाणज्जाए निसीहिआए

( इसके बाद साधु—साध्वी—भ्रावक-श्रावका चतुर्विध सघ  
के साथ खमत खामणा करना )

( फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देता )

॥ १ ॥ अणुजाणह—मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अहो, कायं,  
का-य संफासं खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताण बहु-  
सुभेण, मे पक्खो वडक्कतो ॥ ३ ॥ जत्ता मे ? ॥ ४ ॥ ज-  
वणिज्ज च मे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमाममणो, पक्खिअ वडक्कमं  
॥ ६ ॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए,  
आसायणाए, तिच्चीसन्नयराए, जंकिचि मिच्छाए, मणदुक्क-  
डाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-  
धम्माइकमणाए, आसायणाए; जो मे अइआरो कओ, तस्स  
खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं  
वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए ॥१॥ अणुजाणह—मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अ-  
हो, का-यं, का य संपासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्प-  
किलंताणं बहुसुभेण, मे पक्खो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज—त्ता  
मे ! ॥४॥ जविणिज्ज च मे ! ॥५॥ खामेमि खमासमणो !  
पक्खिअं वइक्कं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए  
आसायणाए तिच्चीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए  
वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए  
सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइकमणाए  
आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडि-  
क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह  
अगवन् ! पक्खिअं पडिक्कं !, “इच्छं” सम्म पडिक्कमामि ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव  
नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं. मणेणं, वायाए,  
काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि,  
निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिक्कमिउ, जो मे पवि ओ अइआरो कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उमग्गो, अकप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छि-  
अव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए,  
सामाडए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्ह कसायाणं ॥ पंचण्ह-मणु-  
व्वयाणं, तिण्ह गुणव्वयाण, चउण्ह, सिक्खावयाणं, वारसवि-  
हस्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि  
दुक्कं

इच्छामि खमसमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खी सूत्र पढुं ? “इच्छं”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नभुक्कारो,  
सव्व पावप्पणासणो, मगलाणं च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं ॥

( यह नवकार तीन दफे गिनना, फिर साधु हो तो वह  
पक्खिसूत्र कहे और न होवे तो श्रावक वदित्तासूत्र कहे वह नीचे  
मुताबिक है । )

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिएअ सव्व साहू अ; इच्छामि  
पडिक्कमिउं सावग धम्माडआरस्स ॥१॥ जो मे वयाडआरो,  
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ वायरो वा, तं निदे तं  
च गग्गिमि ॥२॥ दुविहे परिग्गहमि, सावज्जे बहुविहे अ  
आरभे; कारावणे अ करणे, पटिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥३॥ जं



वद्ध मिदिण्हिं, चउहिं कसाएहिं अप्पमत्थेहिं; रागेण व दोसेण  
 व, त निदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निगमणे, ठाणे  
 चंक्रमणे अणाभोगे; अभिओगे अनिओगे, पडिक्कमे पक्खिअं  
 सव्व ॥५॥ संका कंख विगिज्झा, पसंस नह संथवो कुळि-  
 गीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥  
 छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा  
 य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निदे ॥७॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं,  
 गुण-व्वयाणं च तिण्ह मइयारे; सिक्खिण च चउण्ह, पडि-  
 क्कमे पक्खिअं सव्व ॥८॥ पढमे अणुव्वयं मि, थूलग-पाणा-  
 इवाय-विरइओ; आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं  
 ॥९॥ वह वध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढम-  
 वयस्स-इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ वीए अणु-  
 व्वयंमि, परि थूलग अलीयवयण विरइओ । आयरिय मप्प-  
 सत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे,  
 मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । वीअ वयस्स-इआरे; पडिक्कमे  
 पक्खिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्व-  
 हरण विरइओ । आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं  
 ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिक्खे विरुद्ध गमणे अ ।  
 कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥१४॥ चउत्थे  
 अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ आयरिअ मप्प-  
 सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिगगहिआ इत्तर, अणं-  
 गविवाह तिच्च-अणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे

पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुच्चए पचमंमि, आयरियम-  
 प्सत्थंमि । परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१७॥  
 धण धन्न खित्तश्त्थु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ।  
 दुपए चउप्पयमि य, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गम-  
 णस्स उ परिमाणे, दिसासु उच्चं अहे अ तिरिअं च । बुद्धिह  
 सइअंतरद्धा, पढममि गुणव्वए निदे ॥ १९ ॥ मज्जंनि अ  
 मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोग परि-  
 भोगे, वीयंमि गुणव्वए निदे ॥२०॥ सचित्ते पडिवद्धे,  
 अप्पोलि दुप्पोलिअ च आहारे । तुच्छोसहि-भक्खणया,  
 पडिक्कमे पक्खिअ सव्वं ॥२१॥ इगाली-वण- साडी,  
 भाडी फोडी सुवज्जए कम्म ! वाणिज्जं चेन दंत व्वख-रस  
 केस-विसविसय ॥२२॥ एव खु जंतपिल्लण, कम्म निल्लंछणं  
 च दवदाणं । सर-दह-तलाच-सोसं, असई-पोसं च वज्जिजा  
 ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण कट्ठे मत-जल-भेसज्जे ।  
 दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥२४॥ न्हाणु-  
 व्वट्ठण-वन्नग, विल्लेवणे सद्ध-रुद्र-रम गंधे । वत्थासण तामरणे,  
 पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥२५॥ कंदपे कुक्कुडए, मोहरि  
 अहिगरण भोग अडग्गित्ते । दंडमि अणट्ठाए, तडअंमि  
 गुणव्वए निदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, आणव्वट्ठाणे तहा  
 सइविहणे । सामाडअ चित्ठकए, पढमे सिक्खावए निदे ॥२७॥  
 आणवणे पेसवणे, सट्ठे रुवे अपुग्गलव्वखेवे । देसावगासिअंमि,  
 वीए सिक्खावए निदे ॥२८॥ सयारुच्चारविहि, पमाय तह

चेव भोयणाभोए । पोसहविहि विवरीए, तडए सिक्खावए निंदे  
 ॥ २९ ॥ सचिच्चे निक्खिखणे, पिहिणे ववएस मच्छरे  
 चेव; कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥  
 सुहिणसु अ दुहिणसु अ. जा मे अस्संजणसु अणुकंपा ।  
 रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहसु  
 संविआभागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु । संते फासुअ-  
 दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए,  
 जीविअ-मरणे अ आससपओगे । पंचविहो अइयारो, मा  
 मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ कारण काइअस्स, पडिक्कमे वाइ-  
 अस्स वाचाए । मणसा । माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स  
 ॥ ३४ ॥ वंदण वयसिक्खा-गारवेसु, सन्ना-कसायदंडेसु । गुत्तीसु  
 अ समिइसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी  
 जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि । अप्पोसि होइ वंधो,  
 जेण न निद्धंथसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-  
 आवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ  
 विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्टगयं, संतमूल विसारया ॥ विज्जा  
 हणंति मंतेहि, तो त हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवअट्ठविहं कम्मं,  
 राग-दोस-समज्जिअं । आलोअंतो अ निदंतो, खिप्पं णणइ  
 सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सा, आलोइअ निदिअ  
 गुरुसगासे । होइ अइरेण लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ।

दुबखाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा  
 बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण काले । मूलगुण उत्तर  
 गुणे, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए,  
 तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेडआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे,  
 इह संतो तत्थ संता इं ॥ ४४ ॥ जावत केवि साहू, भरहेरक्ख महा-  
 विदेह अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं.  
 ॥ ४५ ॥ चिर संचिय-पावपणासणीइ, भवसय-सहस्स महणीए ।  
 चउवीस-जिण-विणिग्गय--कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥  
 मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी  
 देया, इति समाहि च वोहि च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे,  
 किञ्चाणमकरणे पडिक्कमणं; असइहणे अ तहा, विवरीय परू  
 वणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।  
 मित्ती मे सव्वभूए सु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं—  
 आओइअ, निदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडि-  
 क्तो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

( फिर सुअदेवयाकी नीचे मुताबिक स्तुति कहनी )

सुअदेवया भगवई. नाणावरणीयकम्मसंवायं ॥ तेसिं  
 खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥

( फिर नीचे बैठ दाहिना घूटना खड़ा कर नीचे मुताबिक कदना )

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरि-  
याणं ॥३॥ नमो उरज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं  
॥५॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥ राव्वणावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढम हवड मंगलं ॥ ९ ॥

करेमि भंते ! सानाइयं, पावज्जं जोगं पचवक्खामि, जाय  
नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुत्तिहं, तिव्विहेणं, मणेणं, वायाए  
काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भते पडिक्कमामि  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पदिसिअो अइआरो कओ  
काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अक-  
रणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचित्तिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो  
असावगपाउग्गो च नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाडए  
तिहं गुत्तीणं चउहं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिहं गुण-  
व्वयाणं चउहं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स  
जं खंडिअं ज विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।  
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे  
चयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ वायरोवा,  
तं निदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे  
वहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं

सव्वं ॥ ३ ॥ जं वद्धमिदिहं, चउहि कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।  
 रागेण व दोसेण व, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आग-  
 मणे निग्गमणे, ठाणे चंक्रमणे अणाभोगे; अभिओगे अ-  
 नियोगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कस्स विगि-  
 च्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्स इआरे, पडि-  
 क्कमे पक्खिअं सव्व ॥ ६ ॥ छदकाय समारंभे, पयणे अ-  
 पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं  
 निदे ॥ ७ ॥ पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुणव्वयाण च तिण्हमइ-  
 आरे । सिक्खणाण च चउहं, पडिक्कमे पक्खिअंत सव्वं ॥ ८ ॥  
 पढमे अणुव्वयंमि धूलगपाणाइवायविरइओ । आयरियमप्प-  
 सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥ वहवंधच्छविच्छेए,  
 अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्स इआरे, पडिक्कमे  
 पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥ वीए अणुव्वयमि, परिधूलग अलीय-  
 वयणविरइओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण  
 ॥ ११ ॥ सहसा रहस्य दारे, मोसुवएस अ कूडलेहे अ ।  
 वीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्वं ॥ १२ ॥ तडए  
 अणुव्वयंमि, धूलगपरदव्वहरण विरइओ । आयरियमप्प-  
 सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥ तेनाहप्पओगे, ताप-  
 डिरुवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूडभाणे, पडिक्कमे पक्खिअं  
 सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयमि, निच्चपरदारगमणविरइओ ।  
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थे पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥ अपरिग्ग-

द्विआ इतर, अणंगविवाह तिव्व अणुरागे । चउत्तवयस्स  
 इयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए  
 पंचम्मस्सि, आयरियमप्पसत्थंमि । परिमाण परिच्छेए, इत्थ  
 पमायप्पसंगेण ॥१७॥ वण धन्न सित्तवत्थु, रूप सुग्गणे  
 अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्पयंमिय, पडिक्कमे पक्खिअं  
 सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उइह अठे अ  
 तिरिअ च । बुद्धदि सड अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निदे ॥१९॥  
 मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गघमल्ले अ । उवमोग  
 परिभोगे, वीअंमि गुणव्वए निदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिक्कमे  
 अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे  
 पक्खिअं सव्वं ॥२१॥ इंगाली वण-साडी, माडी फोडीसु  
 वज्जए कम्म । वाणिज्जं चेव दंत लक्खरसकेसविसविसयं  
 ॥२२॥ एवं सु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।  
 सरद्धतलायसोसं, असईषोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि  
 सुसल जतग, तण के मंत मूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा  
 पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणुव्वट्ठण वन्नग्ग, विळेवणे  
 सहस्वरसंगंथे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं  
 ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुडए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।  
 दंडंमि अणट्ठाए, तइअमि गुणव्वए निदे ॥२६॥ तिव्विहे  
 दुपणिहाणे, अणवट्ठणे तहा सडविट्ठणे । सामाइय धिमह-  
 कए, पढमे सिक्खावए निदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे,

सदे रुवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअमि, बीए सिक्खा-  
वए निदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह च्चेव भोयणा  
भोए । पोसहविहि विइरीए, तइए सिक्खावए निदे ॥२९॥  
सचित्ते निक्खिखवणे, पिहिणे एवएस मच्छरे च्चेव । काला-  
इकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निदे ॥३०॥ सुहिएसु अ  
दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण च दोसेण व,  
तं निदे तं चं गरिहामि ॥ ३१ ॥ सासुस संविभागो, न  
कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे; तं निदे तं  
च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ  
आसंसणअओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मर-  
णंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।  
मणत्ता माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदण  
वयसिक्खागारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समि-  
इसु अ, जो अइयारो अ त निदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो,  
जइवि हु पावं समायरे किंचि । अण्पोसि होई वंभो, जेण न  
निद्धसं कुणई ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सण्परिआव  
सउत्तरगुणं च । खिप्प उवसामेइ, वाहिन्व सुसिक्खिओ  
विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।  
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एव  
अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आओअंतो अ निदंतो,  
खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो,



आलोइअ निंदिय गुरुसगासे । होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-  
भरुव ॥ ४० ॥ आवस्सण एण, सावओ  
जडवि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण  
कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ  
पडिक्कमणकाले । मूलगुण, तं निंदे तं च गरि-  
हामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि  
आराइणाए । विरओमि विराइणाए, तिविहेण पडिक्कतो,  
वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उडढे अ  
अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे. इह संतो तत्थ  
संताइं ॥ ४४ ॥ जावत केऽवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे  
अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं  
॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्स मह-  
णीए । चउवीस जिणविणिग्यरूहाइ, वोळंतु मे दिअह ।  
॥ ४६ ॥ मम मगलमरिहंता; सिद्धा साहू सुअ च धम्मो अ ।  
सम्मद्विही देवा. दिंतु समहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाण  
काणे किच्चानमकरणे पडिक्कमणं । असदहणे अ तहा, विव-  
रीय परुवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा  
खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥  
एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंळिअं सम्मं । तिविहेण-  
पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

सहे रुवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअमि, बीए सिक्खा-  
 वए निंदे ॥२८॥ संथारूच्चारविही, पमाय तह च्चेव भोयणा  
 भोए । पोसहविहि विदरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥  
 सचित्ते निक्खिखवणे, पिहिणे पवएस मच्छरे च्चेव । काला-  
 इकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ  
 दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु भणुकं पा । रागेण च दोसेण व,  
 तं निंदे तं चं गरिहामि ॥ ३१ ॥ सासूस संविभागो, न  
 कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे; तं निंदे तं  
 च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ  
 आसंसपअओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मर-  
 णंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।  
 मणमा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदण  
 वयसिक्खागारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समि-  
 इसु अ, जो अइयारो अ त निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो,  
 जइवि हु पावं समायरे किंचि । अप्पोसि होई वंओ, जेण न  
 निद्धधसं कुणई ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआव  
 सउत्तरगुणं च । खिप्प उवसामेइ, वाहिंव सुसिक्खिओ  
 विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमलविसारया ।  
 विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं  
 अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आओअंतो अ निदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्स-

(फिर बाहर लोगस का चंदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो अडतालीस नवकार गिनना, पीछे नीचे सुताविक प्रगट लोगस कहना )

लोगस उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहं ते कित्तइस्सं, अउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ माजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-  
प्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंधुं अरं च मल्लि, वंदे गुणिसुव्वयं नमि—जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वड्डमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा; अउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्थिय-वदिय-महिया, जे ए लोगस उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोहिल्लभं, समाहि वर दुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा रिद्धिं सम दिसंतु ॥ ७ ॥

( फिर मुदपत्ति पडिलेहण करना )

( फिर दो बादणा नीचे सुताविक देना )

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो काय काय संपासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंतारणं बहुसुमेण मे पक्खो वइक्कंतो, जप्ता मे, जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कं आवस्सिआए पडिकमामि खमासमणाण

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चखामि, जाव  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं  
न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते षडिकमामि, निदामि  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइआरो,  
कओ काइओ वाडओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो  
अकरणिज्जो दुज्झात्तो दुव्विचित्तिओ अणायारोअणिच्छि  
अव्वो आसावगपाउग्गे नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए  
तिण्हं गुत्तीणं चउण्ह कसायाण पंचण्हमणुव्वयाण तिण्हं गुण-  
व्वयाण चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं  
खंडिअं ज विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं,  
विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणद्वाए, ठामि  
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥ १ ॥ सुहुमेहि, अंगसंचालेहि, खेलसंचाहिं, सुहुमेहिर  
दिट्ठिसंचालेहि ॥ २ ॥ एवमाइएहिंआगारेहिं, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(फिर बाहर लोगस्स का चंदेसुनिम्मलयरा तफ काउस्सग्ग करना, न भाता हो तो अडतात्थिस्स नवकार गिनना, पोछे नीचे मुताविक प्रगट लोगस्स कहना )

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, यउनीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ माजअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-  
प्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे गुणिसुव्वयं नमि—जिणं च वंदामि रिद्वेनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अमिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा; चउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्थिय-वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोदिल्लभं, समाहि वर सुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा रिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

( फिर मुहपत्ति गडिलेहण करना )

( फिर दो बादणा नीचे मुताविक देना )

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो काय काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुमेण मे पक्खो वइक्कंतो, जप्ता मे, जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं

पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए पण  
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए माया  
लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्क-  
मणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो  
पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इच्छामिखमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अणुजाणइ मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं  
खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो  
वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं  
वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए  
तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए  
कायदुक्कडाए कोहासमाणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए  
सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे  
अअइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समाप्त खामणेणं अब्भट्ठि-  
ओमि अब्भितर पक्खिअं खामेउ ! “इच्छं” खामेमि पक्खिअ,  
एकपक्खस्स पन्नरसद्विवसाणं, पन्नसरार्त्थाणं, जंकिचि अप-  
त्तिअ, परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे,  
संलावे, उच्चासणे. समामणे, अंतरमासाए, उवरिभासाए,  
जंकिचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे  
जाणह अहं जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पग्गु  
खामणा खामु ! “इच्छं”

( ऐस कहके प्रत्येक खामणा के पहले एक खमासमण  
देकर दाहिना हाथ चरवला या आसन पर रख सिर झुकाकर  
साधु न होवे तो नीचे मुताबिक चार खामणा देना )

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मगलं॥  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मगलं.  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि.

- नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आय-

रियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसि ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥ तस्स  
मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,  
सव्व पावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं पक्खिअं सम्मत्तं  
देवसिअं भणामि (पडिकमामि) कहेवु.

( फिर दो वादणा देना )

इच्छामि खमासमणो : वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,  
का यं का-य संफास, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं  
वहुसुमेण, मे दिवसो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज-त्ता भे ॥४॥ ज-  
वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं  
आवस्सियाएपडिकमामिखमासमणाणं देवसियाएआसायणाए  
तित्तीसन्नयराए जंकिंधि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए  
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-



आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइकमणाए आसायणाए  
जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं, कायसंफासं, खम-  
णिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइ-  
इक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देवसिअं  
वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए  
तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए  
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-  
आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइकमणाए आसायणाए  
जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अर्द्धिभतर  
देवसिअं खामेउं ! “इच्छं” खामेमि देवसिअं, जंकिंचि अप-  
त्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे,  
संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए,  
जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे  
जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

( फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-

હિઆણ ॥૧॥ અણુજાણહ ॥ મે નિઝગ્ગહં ॥૨॥ નિસીદિ,  
અહો કા યં, કા-ય સંફાસં, સ્ખમણિજ્જો મે કિલામો, અપ્પ-  
કિલતાણં, વહુસુમેણ મે દિવસો વઢ્ઠકંતો ! ॥૩॥ જત્તા મે  
॥૪॥ જ-વ-ણિજ્જં ચ મે ? ॥૫॥ સ્વામેમિ સ્ખમાસમણો,  
દેવસિઅ વઢ્ઠકમં ॥૬॥ આવહિસિઆણ પઢિવ્વકમામિ સ્ખમાસ-  
મણાણં દેવસિઆણ આસાયણાણ; તિત્તીસન્નયરાણ, જંકિંચિ  
મિચ્છાણ, મણદુક્કડાણ, વયદુક્કડાણ, કાયદુક્કડાણ, કોહાણ,  
માણાણ, માયાણ, લોભાણ, સવ્વકાલિઆણ, સવ્વમિચ્છોવયા-  
રાણ, સવ્વધમ્માઢ્ઠકમણાણ, આસાયણાણ, જો મે અહ્યારો  
કઓ, તસ્સ સ્ખમાસમણો ! પઢિવ્વકમામિ, નિદામિ, ગરિહામિ,  
અપ્પાણં વોસિરામિ ॥૭॥

ઇચ્છામિ સ્ખમાસમણો ! વંદિતં જાવણિજ્જાણ નિસી-  
દિઆણ ॥ ૧ ॥ અણુજાણહ ॥ મે મિઝગ્ગહં ॥ ૨ ॥ નિસીદિ  
અ-હો કા-ય, કા-ય સંફાસં, સ્ખમણિજ્જો મે કિલામો અપ્પ  
કિલંતાણં, વહુસુમેણ મે દિવસો વઢ્ઠકંતો ! ॥૩॥ જત્તા મે  
॥ ૪ ॥ જ-વ-ણિજ્જં ચ મે ? ॥ ૫ ॥ સ્વામેમિ સ્ખમાસમણો,  
દેવસિઅ વઢ્ઠકમ ॥ ૬ ॥ પઢિવ્વકમામિ, સ્ખમાસમણાણં  
દેવસિઆણ આસાયણાણ; તિત્તીસન્નયરાણ, જંકિંચિ મિચ્છાણ,  
મણદુક્કડાણ, વયદુક્કડાણ, કાયદુક્કડાણ, કોહાણ, માણાણ,  
માયાણ, લોભાણ, સવ્વકાલિઆણ, સવ્વમિચ્છોવયારાણ,  
સવ્વધમ્માઢ્ઠકમણાણ, આસાયણાણ, જો મે અહ્યારો કઓ, તસ્સ

समासमणो । पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं  
वोसिरामि ॥७॥

( बाद मे दोनों हाथ जोड मन्तक को लगाकर नीचेदा  
सूत्र बोलता )

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ । जे  
मे केई कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स  
समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं समा-  
वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरा-  
सिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो । सव्वं खमावइत्ता,  
खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेण वायाए काएणं न  
करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि.

इच्छामि ठामि काउस्सगं, जो मे देवसिओ अइआरो  
कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उमग्गो, अक्कप्पो,  
अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छि-  
अव्वो, असावपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए,  
सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्ह कसायाणं ॥ पंचण्हमणुव्व-  
याणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स  
सावगधम्मस्स, जं खंडिअ, जं विराहिअं तस्समिच्छामि दुक्कडं

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिः सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरि-हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि । ४॥ ताव कायं ठाणेणं मौणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(दो लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयर' तक या आठ नवकारका काउस्सग्ग करके लोगस्स कहना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च. विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमि. पास तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अग्गिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु. ॥५॥ कित्तिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वग्गुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-

लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गंभीरा, सिद्धा-  
सिद्धिं मम दिसंतु ।७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गे, वंदणवत्ति-  
आए, पृअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोही  
लाभवत्तिआए, निखसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धार  
णाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहु-  
मेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो  
अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भग  
वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
ज्ञाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्स 'चदेसुनिम्मल्यरा' तक या चार नवकार का  
काउस्सग्ग करके पुक्खरवरदीवड्ढे सूत्र नीचे मुताविक कहना.)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जवूदीवे अ; भरहेरवय-  
विदेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥ १ ॥ तमत्तिमिरपडलविद्धं-  
सणस्म सुरणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-  
मोहजालस्स ॥ २ ॥ जा जरा मरण सोग पणासणस्स,  
कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंद-

गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥  
 सिद्धे भो पयओ, णमो जिणमए नदी सया संजमे, देव नाग  
 सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइ  
 द्विओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विज-  
 यओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्म भगवओ करेमि  
 काउस्सग्गं, वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए  
 सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए  
 सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए  
 ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएण  
 जभाइएण उइडुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए  
 सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि  
 दिट्ठिसंचालेहि, एवपाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ  
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-  
 क्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेण  
 अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक लोगस्स 'चदेसुनिम्मल्यरा' तक या चार  
 नवकार का काउस्सग्ग करके सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र नीचे  
 सुताञ्चिक कहना )

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाण, ॥ लोअग्ग-  
 सुवगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण  
 वि देवो, जं देवा पंजली नमसंति; त देवदेव महिअं सिरसा

वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इकोवि नमुकारो, जिणवर वसहस्म  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं नारि वा ॥ ३ ॥  
उज्जित सेल्ल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्कवट्ठिं, अरिहत्तेमिं नमंस्सामि ॥ ४ ॥ चत्तारि-अट्ठ-दश  
दोय, वंदिया जिणवरा चउणीसं: परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

भुवनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं  
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए  
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि  
संचालेहि, एवमाएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुउज मे  
काउस्सग्गो जाव अरिहताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि  
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे  
मुजब है)

ज्ञानादिगुणयुताना, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् ।  
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥  
स्वित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं  
जंभाइएणं उड्डुएणं वासनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए

गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥  
 सिद्धे यो पयओ, णमो जिणमए नदी सया संजमे, देव नाग  
 सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पड  
 द्विओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विज-  
 यओ धम्मत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्म भगवओ करेमि  
 काउस्सग्गं, वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए  
 सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निस्सवसग्गवत्तिआए  
 सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए  
 ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं  
 जभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भम्मलीए पित्तमुच्छाए  
 सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि  
 दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ  
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-  
 क्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेणं ज्ञाणेण  
 अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक लोगस्स 'चदेसुनिम्मल्यरा' तक या चार  
 नवकार का काउस्सग्ग करके मिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र नीचे  
 मुताबिक कहना )

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाण, ॥ लोअग्ग-  
 सुवगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण  
 वि देवो, जं देवा पंजली नमसंति; त देवदेव मद्दिअ मग्गिमा



वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इकोवि नमुकारो, जिणवर वसहस्य  
वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं नारि वा ॥ ३ ॥  
उज्जित मेळ सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं  
धम्मचक्कट्ठिं, अरिहनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि-अट्ठ-दग  
दोय, वंदिया जिणवरा चउणीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा  
सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊप्पसिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं  
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए  
सुहुभेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुभेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुभेहिं दिट्ठि  
संचालेहि, एवमाएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे  
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि  
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक नक्कार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् सिद्धाचा-  
र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे  
सुजब है)

ज्ञानादिगुणयुताना, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् ।  
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥  
खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊप्पसिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं  
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए

सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेणं न  
पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक नक्कार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धा-  
चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुता-  
विक है । )

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।

सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्न सुखदायिनी ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं,  
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

( छट्ठे आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहन करना । )

( फिर नीचे मुताविक दो वादणा देना । )

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अणुजाणह—मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं  
खमणिज्जो मे किलामो, अप्पक्किलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो  
वइक्कंतो, जत्ता मे, जणणिज्जं च मे, खामेमि खमासमणो  
देवसिअं वडक्कमं आगस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं  
देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए  
मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोटाए माणाए  
मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोअयाराए सव्वध-

म्माइक्क माणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमा-  
समणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । १ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संपासं खम-  
णिज्जो मे फिलामो अप्पकिलताण बहुसुभेण मे दिवसो वइ-  
क्कंतो, जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देवसिअं-  
वइक्कमं पडिक्कमामि । समणाणं देवसिआए आसायणाए-  
तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-  
डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वका-  
लिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसा-  
यणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग,  
पच्चक्खाण किया है जी । ( फिर )

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽहंत्सिद्धा-  
चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

नमोऽस्तु वर्द्धमानाया, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावा-  
प्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविन्द-  
राज्या, ज्यायः क्रमक्रमलावलि दधत्या । सदृशैरिति संगत  
प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कपायता  
पार्दितजंतुनिर्वृति, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्रतः । स शुक्र-  
मासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्ट मयि प्रिस्तरौ गिराम् । ३ ।

( यदि स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हो तो यहा पर स सार दावा की त्रण गाथा कहे वह नीचे मुजब है )

संसारदाशानलदाहनीरं, समोहधूहीहरणे समीर, माया-  
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरीसारधीरं ॥ १ ॥ नत्वा-  
वनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि;  
संरुरिताभिनतलो रुसमीहितानि, कामंनमामि जिनराजपदानि  
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहि-  
साविरललहरी संगमागाहदेहं । चूलावेल गुरुगममणिसकुलं  
दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधि सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरि-  
ससीहाणं, पुरिसरपुंडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीणं ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोग-  
पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाण,  
सरणदयाण. बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, धम्मदेसआणं,  
धम्मनायगाणं, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवडीणं ॥ ६ ॥  
अप्पडिहय वरणाण दंसणधराणं, वियट्ठलउमाणं ॥ ७ ॥  
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं;  
मुत्ताण मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवम-  
यलमहअ मणतमक्खय मव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनाम-  
अयेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ मि-या, जे अ भविस्संति णागए काले, संपड  
अ वट्टमाणा, सव्ने तिविहेण वंदामि ॥१०॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! स्तवनं भणुं ? इच्छं ।

( ऐमा कहकर अजितशक्तिका स्तवन बोल्ना )

नमोऽहं तत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

अजिअं जिअसव्वभवं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।  
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥  
॥ गाढा ॥ ववगयमंगुलभावे, तेऽहं विउलतयनिम्मलसहावे ।  
निरुवममहप्पभावे. थोसामि सुदिट्ठसव्वभावे ॥ २ ॥ गाढा ॥  
सव्वदुक्खपसंतीणं, सव्वावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं,  
नमो अजिअसंतीणं ॥ ३ ॥ सिद्धो गो ॥ अजिअजिण सुह-  
प्पवत्तणं, तम पुरिसुत्तमनामकित्तणं । तह य धिइमइप्प-  
वत्तणं, तव य जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥  
किरिआविहिंसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं ॥ अजिअं निचिअं  
च गुणेहि महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो  
वि अ संतिवरं, सययं मम निव्वुड्ढकारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥  
॥ आलिंगणया ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गाह  
सुक्खकारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं  
पज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरहिअमुवरय-  
जामरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं । अजियमहम-  
विअ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजम-

हिअं सयममुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्त-  
 मनित्तमसत्तथरं. अज्जवमद्दक्खंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं, संति-  
 कर पणमामि दमुत्तमतिथयरं, संतिमुणी मम संतिसमा-  
 हिवरं दिसु ॥८॥ सोवाणय ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च  
 वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्नसंथियं थिरसरिच्छवच्छं मयग-  
 ललीलायमाणवरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिह । हत्थि  
 हत्थवाहुं धतकणगरुअगनिरुवहयपिजरं पवरलक्खणोवचिय-  
 सोमचारुव सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनि-  
 नायमहुरयरसुहगिर ॥९॥ वेइढओ ॥ अज्जिअं जिआरिगणं,  
 जिअसव्वभयं भवोहरिउ । पणमामि अहं पयओ, पावं  
 पसमेउ मे भयवं ॥१०॥ रासालुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थि-  
 णाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्ठिभोए महप्पभावो, जो  
 वावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवइ वत्तीसारायवरसह-  
 स्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवसहानिहिचउसट्ठिसहस्स  
 पवरज्जुवईण सु दरवइ, चुलसी इयगयरहसयसहस्ससामो छन्न-  
 वइगामकोडीसामी आस जो भारहंमि भयव ॥ ११ ॥  
 ॥ वेइढओ ॥ तं संतिं संतिकर, संतिणं सव्वभया ।  
 संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासा-  
 नंदियं ॥ इक्खाम विदेहनरीसर नरवसहा छुणिवसहा, नवसा-  
 रयससिसकलाणण विगयतमा विहुअरया । अज्जिउत्तम ते-  
 अगुणेहिं महामुणि अमिअवला विउक्कूला, पणमामि ते

भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥  
 देवदाणविंदचदसुरवदहद्वतुद्वजिद्वपरम-लद्वरूवधंतरूपपद्वसेय-  
 सुद्वनिद्वधवल-इंतपंतिसंतिसत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर ।  
 दित्तत्तेअ धंदधेअ सव्वलोअभाविअप्पभावणेअ पइस मे  
 समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ । विमलससिकलाइरेअसोमं,  
 प्रितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवडगणाइरेअरूवं, धरणि-  
 धरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया । सत्ते अ सया  
 अजिअं सारीरे अ वळे अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस  
 थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिगिअ ॥ सोम-  
 गुणेहिं पावइ न तं नवरसयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नव-  
 सरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सार-  
 गुणेहिं पावई न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ ख्विज्जिअयं ॥  
 तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअ चुअकलि-  
 कल्लसं । संतिसुद्वपवत्तय तिगरणपयओ संतिसह महामुणिं  
 सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणयसिररइअंजलि-  
 रिसिगणसंथुअं थिमिअं, विवुहाहिवधणवइ नरवईथुअमहिअ-  
 च्चिअं बहुसो । अइरूगयसरयदिवायरसमहियसप्पभं तवसा,  
 गयणंगणवियरणसमुइयचारणवदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसल-  
 यमाला ॥ असुरगरूपपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देव-  
 कोडिसयसंथुअं, सैमणसवपरिवदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं  
 अणहं, अरयं अरूयं । अजिअं, अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥

विज्जुगिलसिअं ॥ आगया दरविमाण दिव्वकणगरहत्तरयपह-  
 करसण्हि हुल्लिअं । ससंभमोअरण खुभिल्लुलिअचलकुंडलंगय-  
 तिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥ वेइढओ ॥ जं सुरसंधा सासुर-  
 संधा, वेरविउत्ताभत्ति सुजुत्ता, आयारभूसिअ संभमपिडिअ, सु-  
 द्दुसुविम्हिअ सव्वबलोघ । उत्तमकंचणरयणपरुवियभासुर-भू  
 सणभासुरिअ गा गायसमोणयभत्तिवसागय, पंजिलिपेसियसी-  
 सपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं,  
 तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरसुरा,  
 पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-  
 सुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरि-  
 दवदिअं संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबर-  
 तरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं पीणसो-  
 णिथणसालिणिआहिं । सकलकमलदललोअणि आहिं ॥ २६ ॥  
 दीवयं ॥ पीणनिरन्तरथणभरविणभियगायलयाहिं, मणिक्क-  
 चणपसिठिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं । वरखिंखिणीनेऊरस-  
 तिलयवल्लयविभूसणियाहिं, रइकरचउरमणोहरसुन्दरदंसणिआहिं  
 ॥ २७ ॥ वित्तक्खरा ॥ देवसुन्दरोहिं षायवंदिआहिं वंदिआ  
 य जस्म ते सुविक्रमा कमा, अप्पणो । निडालएहिं मंडणोड्ड-  
 णप्पगारएहिं केहिं केहिं विअवगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्ल-  
 एहिं संगयंगयाहिं भत्तिवन्निविट्ठवंटणागयाहिं हुंति ते वंदिआ  
 पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचद, अजिअं



जिअमोहं । धुयसव्वक्किलेसं, पयओ पणयामि ॥ २९ ॥  
 नंदिअयं । गुअवंदिअयरसा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववह्महि  
 पयओ पणमिअस्ता । जस्स जगुत्तमसासण अस्ता भत्तिअ-  
 सागयपिडिअयाहिं । देववरच्छरसा बहुआहिं, सुरवररइगुण  
 पंडिअआहि ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वससदतंतीतालमेलिए,  
 तिउक्खराभिरामसदमीसएकएअ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगी-  
 अपायजालघंटिआहिं वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसदमीसए  
 कए अ । देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहि नच्चिउण  
 अंगहारएहि वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमाकमा, तयं तिलोयस-  
 व्वसत्तसंतिकारयंपसंतसव्वपावदोसमेसहंनमामि संत्तिमुत्तमं जिणं  
 ॥३१॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमडिआ, झयवरम-  
 गरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा । दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ,  
 सत्थिअवसहसीहरहचक्करं किया ॥३२॥ ललिअयं । सहा-  
 वलद्धा, समप्पइद्धा, अदोसदुद्धा गुणेहिं जिद्धा । पसायसिद्धा  
 तवेण पुद्धा, सिरीहिं इद्धा रिसीहिं जुद्धा ॥ ३३ ॥ वाणवा-  
 सिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।  
 संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥३४॥  
 अपरात्तिका ॥ एवं तववलविउलं, थुअं मए अजिअसंति-  
 जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गडं गयं सासयं विउलं  
 ॥३५॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण  
 अवितायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ प्पसायं

॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेणम-  
भिनंदिं । परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं  
॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स  
भणिअव्वो; सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
जां पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं ।  
न हु हुति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्नावि नासति ॥ ३९ ॥ जइ  
इच्छह परमपर्यं, अहवा किंति सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कु-  
द्धरणे, जिणव्रयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ इति ॥

वरकनकशंखविद्रुम,—मरकतघनसन्निभं विगतमोहं । सप्त-  
तिशतं जिनाना, सर्वाभरणपूजित वंदे ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । भगवान्हं । इच्छामि खमासमणो वंदितुं  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्य्हं ।  
इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । उपाध्याय्हं । इच्छामि खमासमणो वंदितुं  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि सर्वसाधुह ।

( फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर शिर झुकाकर )

अइढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमिसु, जावं-  
त केवि साहू, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा,  
अट्टारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छित्त-  
विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, देवसियपायच्छित्त-  
विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं उइइएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहि  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

ऐसा कहकर चार लोगस्स चदेसुनिम्मल्लयरा तक काउस्सग्ग  
करना न आता हो तो सोलह नवकार गिनना. फिर प्रगट लोग-  
स्स कहना वह नीचे मुताबिक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहते कित्त-  
इस्सं, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिं च वंदे, संभव  
मणिणंदणं च सुमहं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च,  
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेणम-  
भिनेदिं । परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं  
॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स  
भणिअव्वो; सोअव्वो सव्वेहि उवसग्गनिवारणो एमो ॥ ३८ ॥  
जां पढइ जो अ निमुणइ. उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं ।  
न हु हुति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्नावि नासति ॥ ३९ ॥ जइ  
इच्छह परमपयं, अहवा किंत्ति सुवित्थडं भुवणे । ता तेळक्कु-  
द्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ इति ॥

वरकनकशंखविद्रुम,—मरकतधनसन्निभं विगतमोहं । सप्त-  
तिशतं जिनाना, सर्वामरपूजित वंदे ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । भगवान्हं । इच्छामि खमासमणो वंदितुं  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।  
इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । उपाव्यायहं । इच्छामि खमासमणो वंदितुं  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि सर्वसाधुह ।

( फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर शिर झुकाकर )

अइढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमिसु, जावं-  
त केवि साहु, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा,  
अट्टारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे  
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छित्त-  
विसोहणत्थं काउस्सग्ग कळं ? इच्छं, देवसियपायच्छित्त-  
विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए  
॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं  
नमुकारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं  
आणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

ऐसा कहकर चार लोगस्त चदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग  
करना न आता हो तो सोलह नवकार गिनना। फिर प्रगट लोग-  
स्स कहना वह नीचे मुताबिक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहते कित्त-  
इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिं च वंदे, सभव  
मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं  
वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च,  
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं भए अभिथुआ,  
 विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा,  
 तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्थिय-वंदिय-महिया, जे ए  
 लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलामं. सद्दाहि वर सुत्तमं  
 दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,  
 सागरवर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं “इच्छं”  
 इच्छामि खमासमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? “इच्छं”  
 नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,  
 नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं, एसो पंच नमुक्कारो,  
 सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढम द्ववड मंगल ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-  
 विसनिन्नास, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिगमंत,  
 कंठे धारेह जो सया मणुओ । तस्स गह रोगमारी-दुट्ठ जरा  
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणायो वि

बहुफलो होइ । नरतिरिणसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख-  
दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपायव-  
ब्भहिण् । पावन्ति अग्निग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥  
इअ संयुओ मङ्गायस ! अत्तिब्भर निब्भरेण हियण्ण । ता  
देव दिज्ज वोहि, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं, माया-  
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारवीरं ॥१॥ भावा-  
वनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि,  
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, काम नमामि जिनराजपदानि  
तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-  
विरललहरीसंगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं,  
सारं वीरागमजलनिधि सादरं साधु सेवे ॥३॥ आमूलालोल-  
धूलीबहुलपरिमलालीढ-लोलालिमाला, झंकारारावसारामलदल-  
कमलागारभूमिनिवासे । छायासंभारसारे वरकमलकरे तारहा-  
राभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरदेहि मे देवि सारं ॥४॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।  
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकरेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खय कम्मक्खय

निमित्तं काउस्सग्गं कुरु ! “इच्छं” दुक्खक्खय कम्मक्खय  
निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थं ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥  
सुहुमेहिं अंगसचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहिं, अभग्गो अविरा-  
हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं  
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं  
अप्पाणं बोसिरामि ॥५॥

( फिर संपूर्ण चार लोगस अथवा सोलह नवकारका काउस्सग्ग  
करना बाद मे नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कह कर  
बड़ी शान्ति नीचे मुताबिक कहना )

## बृहत् शान्ति

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुत सर्वयेतद्, ये यात्राया  
त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः। तेषां शातिर्भवतु भवतामर्हदादि-  
प्रभावा, ~दारोग्य श्री वृत्तिमति करी क्लेशविवर्धनहेतुः ॥१॥

भो भो भव्य लोका इह हि भरतैरावत-विदेह संभवाना,  
समस्त तीर्थकृता जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय,  
सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालनानन्तरसकल सुरासुरेन्द्रैः  
सह समागत्य, सविनयमर्हद्भारकं गृहीत्वा गत्वा कनका-  
द्रिगृहे, विहित-जन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽर्ह



कुतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतः स पन्था इति  
भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्धोष-  
यामि; तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सयानंतरमतिकृत्वा कर्ण  
दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्ता भगवन्तोऽर्हन्त  
सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोक-  
पूज्या-स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥

ॐ कृपम-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ  
सुपाङ्ग-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयास-वासुपूज्य-विमल  
अनन्त धर्म शान्ति-कुन्थु अर-मल्लि-मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व-  
वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग-  
मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री-धृति-मति-कीर्ति-कान्ति बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा  
-विद्या-साधन-प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्तु ते  
जिनेन्द्राः ।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशङ्खला-वज्राकुशी-अप्रति-  
चक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा-  
महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी  
षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य

शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चंद्र-सूर्याङ्गारकबुध-बृहस्पति शुक्र-शनैश्चर-राहु-  
केतुसहिताःसलोकपालाःसोम यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य  
स्कन्द-विनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्राम-नगर क्षेत्रदेवता-  
दयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्ता अक्षीणकोश कोष्ठागारा नरपत-  
यश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र सुहृद्-स्वजन-संवन्धिवन्धु-  
वर्गसहिताःनित्यंचामोदप्रमोदकारिणःअस्मिंश्च भूमण्डलेआय-  
तननिवासि साधु सा-त्री श्रावक-श्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधि  
दुःखदुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मागल्योत्सवाः ।

सदा प्रादुर्भूतानि, पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः  
पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश,-मुकुटाम्ब्यर्चिताप्रये ॥१॥ शान्तिः शान्ति-  
करः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा  
तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगति-  
दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंप, -न्नामग्रहणं जयति  
शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशा  
नाम् । गौष्टिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥  
श्रीश्रमणसचस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु,

श्रीराजाधिपाना शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशाना शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीपारजनस्य शान्तिर्भवतु श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिऋतुं गृहीत्वा, कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाजलिसमेतः स्नात्रचतुष्पिकाया श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमाला कंठे कृत्वा शान्तिमुद्योपयित्वा, शान्तिपानीय मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याण भाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥

शिवमस्तु सर्व जगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिव, असिबोवसमं सिव भवतु स्वाहा ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ सर्वमंगलमागत्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरेजिणे; अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १॥ उसभ मज्झिअं च वदे, संभव

मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे  
 ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च;  
 विमल-मणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं  
 अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नयिजिणं च; वंदामि रिद्धनेमिं,  
 पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुय-रय-  
 मला पहीण जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे  
 पसीयंतु ॥५॥ कित्थिय-वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
 सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर वुत्तमं दिंतु ॥६॥ वंदेसु  
 निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागरवरगंभीरा,  
 सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

### अथ संतिकरं स्तवन

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ।  
 समरामि भत्तपालग -निव्वाणीगरुडकयसेव ॥ १ ॥ ॐ स-  
 नमोविप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं । झ्रौं स्वाहामंतेणं,  
 सव्वासिबदुरिअहरणाणं ॥२॥ ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहि-  
 माइलद्धिपत्ताण । सौं ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताण च देइ सिरि  
 ॥३॥ गणी तिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खरायगणि-  
 पिडगा । गहदिसिपालसुरिदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते  
 ॥४॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया ।  
 वज्जंकुसी चक्केसरो, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥ गोरी  
 तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुद्धा । अचुत्ता माण-

सिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह  
महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुवरु कुसुभो । मायंगविजय-  
अजिआ, वंभो मणुओ सुग्कुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल  
किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो । कूवर वरुणो  
भिउडी, गोमेहो पास मायगा ॥ ८ ॥ देवीओ चक्केसरी,  
अजिआ, दुरिआरि काली महाकाली । अच्चुअ सता जाला  
सुतारयाऽसोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चंडा विजयंकुसि, पन्नइत्ति  
निव्वाणि अच्चुआ धरणी । वइरुद्धुत्त गंधारी, अंवपउमावई  
सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेवि सुरासुरी य  
चउहावि । वतरजोइणीपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥  
एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो । मज्झवि  
करेउ रक्खं, मुणिसुन्दरस्सरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ सत्ति-  
नाहसम्म-दिट्ठिरक्खं सरइ तिकालं जो । सव्वोवद्वद्विओ, स  
लहइ सुहसंपयं परम ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर-जुगवर-  
सिरिसोमसुन्दरगुरूणं । सुपसायलद्धगणहर विज्जासिद्धिभणइ  
सीसो ॥ १४ ॥

॥ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि समाप्त ॥

॥ सामायिक पारने की विधि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिकमामि ?

उच्छं, उच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए विराहणाए, गमणा-  
गमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग  
दग, मट्टी मक्कडा संताणा सक्कमणे, जे मे जीवा विराहिया  
एगिदिया, वेइंदिया, तेइदिया, चउरिदिया, पंन्निदिया,  
अभिहया, वत्तिया लेसिया, संघाडया, संघट्टिया, परियाविया,  
किलामिया, उइविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ  
ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही  
करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए,  
ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं  
जंभाइएणं उइडुएण वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए  
सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेण न  
पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स चदेसुनिम्मल्यरा तकका काउस्सग्ग  
करना न आता हो तो चार नक्कार गिनना फिर लोगस्स  
नीचे सुताविक कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते  
इत्तिइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मज्झिं च वंदे,  
अभंभव मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपास, जिणं च चंद

पहं वंदे ॥२॥ मुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल रिज्जग वासुपुज्जं  
च, विमल मणतं च जिण, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंयुं  
अरं च मल्लि, वदे मुणिसुवायं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं,  
पास तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं एए अभिभुआ, विट्ठय रय मला  
पहीण जर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसी-  
यंतु ॥५॥ कित्थिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
सिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिलामं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥  
चंदेसु निम्मलयरा, आडच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर  
वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

(फिर दाया घुटना ऊचा करके चउक्कसाय नीचे मुताविक कहा)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लरणु दुज्जयमयणवाणमुसुमरणु ।  
सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुणत्तयसामिउ ॥१॥  
जसुतणु कंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ ।  
नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ  
वछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं  
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससी-  
हाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥  
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, ॥ लोगपईवाणं  
लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-  
दयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं, ॥५॥ धम्मदयाणं धम्म-  
देसयाणं, धम्मनायगाणं ॥ धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतच-

क्वट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाण—दंसणधराणं, विअट्टुउ-  
माणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं  
बोहयाणं, मुत्ताणं सोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,  
सिवमयलभरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-  
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥  
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥  
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआई, उइडे अ अहे अ तिरिअ लोए अ,  
सव्वाइं ताइं वंदे, इइ संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं  
पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर-  
विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण—आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंग-  
मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा  
जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि  
वहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं  
॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायव्वभहिए ।  
पावंति अविग्गेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ



महायस, भक्तिभरनिभरेण द्विअएण । ता देव दिज्ज' वोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

( फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर )

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जह जइवि निआ-णवंधण वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समा-हिमरणं च वोहिलाओ अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम-करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

( एसा कइके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना )

इच्छामि । समणो ! वदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? ‘यथाशक्ति’

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं. “तहत्ति”

क्वट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरणाण-दंसणधराणं, विअट्टुउ-  
माणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं  
वोहयाणं, मुत्ताणं सोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,  
सिवमयलसरुअमणंतमक्खयमन्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-  
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥  
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥  
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावति चेइआई, उइढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ,  
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं  
पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर-  
विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरकुल्लिग-  
मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्टजरा  
जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि  
वहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं  
॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायव्वभहिण ।  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संयुओ

महायस, भक्तिव्भरनिव्भरेण द्विअएण । ता देव दिज्ज  
वोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

( फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर )

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।  
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-  
त्रिरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो  
तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआ-  
णवंधण वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे  
भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समा-  
हिमरणं च वोहिलाओ अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम-  
करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं  
सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

( एसा कइके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना )

इच्छामि । समणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक  
पारुं ? ‘यथाशक्ति’

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक  
पारुं. “तहत्ति”

(ऐसा कह के आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे मुताबिक बोलना)

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥ सामाइयंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन वत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

## अथ चउमासिक प्रतिक्रमण विधि

पाक्षिक प्रतिक्रमणकी विधिमें नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

(१) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें वादणामे जिस जिस जगह 'पक्खो वइक्कंतो, पक्खिअं वइक्कमं' और 'पक्खिआए आसायणाए' ऐसा कहते हैं उस जगह 'चउमासी वइक्कंता, 'चउमासिअ वइक्कम' और 'चउमासिआए आसायणाए' ऐसा कहना.

(२) वदित्तासूत्रमें 'पडिक्कमे पक्खिअ सव्वं' की जगह 'पडिक्कमे चउमासिअं सव्वं' ऐसा कहना.

( ३ ) अतिचार में 'पाक्षिक अतिचार पढुं ? प्रश्न दिवस में जो कोई अतिचार लगा हो' उसे जगह 'चउमासिअ अतिचार पढुं ?' और चउमासी दिवस में जो कोई अतिचार लगा हो' ऐसा कहना

( ४ ) पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पत्तेयखामणेणं, संवुद्धा खामणेणं, सम्मत्तखामणेणं' इन प्रत्येक में 'एक-पक्खाणं, पन्नरस दिवसाणं, पन्नरस राइआणं' कि जगह 'चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एक सो बीस राइदिवसाणं' ऐसा कहना और पक्खिअं खामुं ?' कि जगह 'चउमासिअ खामु !' ऐसा कहना.

( ५ ) पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पक्खितप प्रसाद करोजी' चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंविल, तीन निवि, चार एकासना, आठ वेआसना, दो हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पढोचाना' कि जगह 'छट्ठेणं, दो उपवास, चार आयंविल, छह निवि, आठ एकासना' सोलह विआसना, चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पढोचाना ऐसा कहना.

( ६ ) 'पक्खिसूत्र पढुं ?' कि जगह 'चउमासी सूत्र पढु ?' ऐसा कहना.

( ७ ) पाक्षिक-प्रतिक्रमण में बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहां पर बीस लोगस्स का काउस्सग्ग करना.

( ८ ) फिर 'इच्छामि ठामि' वगैरह सूत्रों में जहा जहा

- (ऐसा कह के आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे  
मुताबिक बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो  
उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो,  
सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ  
असुहं कम्म, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥ सामाइयंमि उ  
कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं,  
बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायिक विधिसे लिया,  
विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब  
मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं। दश मनके, दश वचनके,  
बारह कायाके, इन वत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो  
वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

## अथ चउमासिक प्रतिक्रमण विधि

पाक्षिक प्रतिक्रमणकी विधिमें नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

(१) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें वादणामे जिस जिस जगह  
'पक्खो वइक्कंतो, पक्खिअं वइक्कमं' और 'पक्खिआएआसायणाए  
ऐसा कहते हैं उस जगह 'चउमासी वइक्कंता, 'चउमासिअ  
वइक्कम' और 'चउमासिआए आसायणाए' ऐसा कहना.

(२) वदित्तासूत्रमें 'पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं' की जगह  
'पडिक्कमे चउमासिअं सव्वं' ऐसा कहना.

( ३ ) अतिचार में 'पाक्षिक अतिचार पड़ें ? प्रश्न  
दिवस में जो कोई अतिचार लगा हो' उसे जगह 'चउमा-  
सिअ अतिचार पड़ें ?' और चउमासी दिवस में जो कोई  
अतिचार लगा हो' ऐसा कहना.

( ४ ) पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पत्तेयखामणेणं, संबुद्धा  
खामणेणं, सम्मत्तखामणेणं' इन प्रत्येक में 'एक-पक्खाणं,  
पन्नरस दिवसाणं, पन्नरस राइआणं' कि जगह 'चार मासाणं,  
आठ पक्खाणं, एक सो बीस राइदिवसाणं' ऐसा कहना और  
पक्खिअं खामुं ?' कि जगह 'चउमासिअ खामु !' ऐसा कहना.

( ५ ) पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पक्खितप प्रसाद  
करोजी' चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि,  
चार एकासना, आठ वेआसना, दो हजार सज्झाय यथाशक्ति  
तप कर के पहुँचाना' कि जगह 'छट्ठेणं, दो उपवास,  
चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना' सोलह विआ-  
सना, चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहुँचाना  
ऐसा कहना.

( ६ ) 'पक्खिसूत्र पड़ें ?' कि जगह 'चउमासी सूत्र  
पड़ें ?' ऐसा कहना.

( ७ ) पाक्षिक-प्रतिक्रमण में बारह लोगस्स के काउस्सग्ग  
की जगह यहा पर बीस लोगस्स का काउस्सग्ग करना.

( ८ ) फिर 'इच्छामि ठामि' वगैरह सूत्रों में जहा जहा

‘पक्खिअं’ शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

## संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि में नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

१ जिस जगह “पक्खिअं” है उस जगह “संवच्छरिअं” कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण में “पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं” कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिवसाणं” ऐसा पाठ कहना ।

३ “पक्खि तप प्रसाद करोजी” की जगह “संवच्छरी तप प्रसाद करोजी” ऐसा कहके फिर “अट्ठमभत्तेणं तीन उपवास, छह आयंविह, नव तिथि, बारह एकासना, चौवीस वेआसना और छह हजार सज्जाय यथाशक्ति तप कर के पहुँचाना” ऐसा कहना ।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना । लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना ।

५ दूरेक सूत्र में जहा जहा “पक्खिअं” बोलने का हो वहां वहां “संवच्छरिअं” बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.



## अथ नव स्मरणानि ।

### १. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आय-  
रियाणं ॥३॥ नमो उग्रज्ज्ञायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहणं  
॥५॥ एसो पंच नमुकारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
संगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवड मगलं ॥९॥

### २. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कस्मघणमुक्कं ।  
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥  
विसहरफुलिगमंत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।  
तस्स गहरोगमारी—दुद्धजरा जंति उवसामं ॥२॥  
चिद्धउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि चहुफलो होइ ।  
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥  
तुह सस्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायव्वमहिण् ।  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥  
इअ संथुओ महायस !, भत्तिव्वरनिव्वरेण हियण्ण ।  
ता देव ! दिज्ज वोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

‘पक्खिअं’ शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

## संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि मे नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

१ जिस जगह “पक्खिअं” है उस जगह “संवच्छरिअं” कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण मे “पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं” कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिक्खाणं” बैसा पाठ कहना ।

३ “पक्खि तप प्रसाद करोजी” की जगह “संवच्छरी तप प्रसाद करोजी” ऐसा कहके फिर “अट्टमभत्तेणं तीन उपवास, छह आयंबिल, नव निवि, बारह एकासना, चौवीस वेआसना ओर छह हजार सज्जाय यथाशक्ति तप कर के पढोचाना” ऐसा कहना ।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग करना । लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना ।

५ दरेक सूत्र में जहा जहा “पक्खिअं” बोलने का हो वही वहा “संवच्छरिअं” बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.

## अथ नव स्मरणानि ।

### १. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आय-  
रियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहणं  
॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवड मगलं ॥९॥

### २. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।  
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥  
विसहरफुल्लिगमंत, कंठे धारेड जो सया मणुओ ।  
तस्स गहरोगमारी—दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥  
चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।  
नरतिरिण्णु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥  
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायववमहिण्ण ।  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥  
इअ संथुओ महायस !, भत्तिव्वभरनिव्वभरेण हियण्ण ।  
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

‘पक्खिअं’ शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

## संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि मे नीचे मुताबिक फेरफार स ना.

१ जिस जगह “पक्खिअं” है उस जगह “संवच्छरिअं” कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण मे “पत्तेअखामणेणं, संवुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं” कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिव साणं” ऐसा पाठ कहना ।

३ “पक्खि तप प्रसाद करोजी” की जगह “संवच्छरी तप प्रसाद करोजी” ऐसा कहके फिर “अट्ठमभत्तेणं तीन उपवास, छह आर्यंबिल, नव निवि, बारह एकासना, चौवीस वेआसना ओर छह हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहुँचाना” ऐसा कहना ।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना । लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना ।

५ दरेक सूत्र मे जहा जहा “पक्खिअं” बोलने का हो वहां वहा “संवच्छरिअं” बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.

## अथ नव स्मरणानि ।

### १. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आय-  
रियाणं ॥३॥ नमो उग्रज्ज्ञायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहणं  
॥५॥ एसो पंच नमुकारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥  
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मगलं ॥९॥

### २. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।  
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥  
विसहरफुल्लिगमंत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।  
तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥  
चिद्धउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।  
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥  
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवम्भहिण् ।  
पावंति अविग्गेणं, जीवा अयरामं ठाणं ॥४॥  
इअ संथुओ महायस !, भत्तिव्भरनिव्भरेण हियएण ।  
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

### ३. संतिकरं स्तोत्रम्.

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायार ।  
 समरामि भत्तपालग, निव्वाणीगरूडकयसेवं ॥१॥  
 ॐ सनमो विष्णोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।  
 झौ~ स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरियहरणाणं ॥२॥  
 ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ।  
 सैं ह्रीं नमो सव्वो-सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥  
 वाणीतिहुअणसामिणी-सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा॥  
 गहदिसिपालसुरिदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥  
 रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया ।  
 वज्जंकुसी चक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥  
 गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।  
 अच्चुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥  
 जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंवरु कुसुमो ।  
 मायंगविजयअजिआ, वंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥  
 छम्मुह पयाल किन्नर गरूडो गधव्व तह य जक्खिखदो ।  
 कूवर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा ॥८॥  
 देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरिआरी काली महाकाली ।  
 अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसौय सिरिवच्छा ॥९॥  
 चंडा विजयंकुसी, पन्नडत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी ।  
 वइरुट्टुत्त (दत्त) गंधारी, अंव पउमावई सिद्धा ॥१०॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेऽवि सुरा सुरी य चउहावि ।  
 चतरजोइणीपमुहा, कुणतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥  
 एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो ।  
 मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरस्सरिथुअमहिमा ॥१२॥  
 इअ संतिनाहसम्म-द्विटी रक्खं सरइ तिकालं जो ।  
 सव्वोवद्वरहिओ, स लहइ सुहसंपय परमं ॥१३॥  
 तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरुणं ।  
 सुपसायलद्दगणहर-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥१४॥

### ४. तिजयपहुत्त स्तोत्रम्.

तिजयपहुत्तपयासय-अट्टमहापाडिहेरजुत्ताणं ।  
 समयविखत्तठिआणं, सरेमि चक्क जिणिदाणं ॥१॥  
 पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।  
 नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥  
 चीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिदा ।  
 गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥  
 सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।  
 वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभयं हरउ ॥४॥  
 पणपन्ना य दसेव य पन्नद्वी तह य चेव चालीसा ।  
 रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥  
 ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ।  
 आलिहियनामग्गभं, चक्कं किर सव्वओभहं ॥६॥

### ३. संतिकरं स्तोत्रम्.

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीड दायारं ।  
 समरामि भत्तपालग, निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥१॥  
 ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।  
 झौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरियहरणाणं ॥२॥  
 ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाडलद्धिपत्ताणं ।  
 सौ हीं नमो सव्वो-सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥  
 वाणीतिहुअणसामिणी-सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा  
 गहदिसिपालसुरिदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥  
 रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया ।  
 वज्जंकुसी चक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥  
 गोरी तह गंधारी, सहजाला माणवी अ वइरुट्ठा ।  
 अच्चुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥  
 जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंवर कुसुमो ।  
 मायंगविजयअजिआ, वंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥  
 छम्मुह पयाल किन्नर गरुडो गधव्व तह य जक्खिदो ।  
 कूवर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायगा ॥८॥  
 देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरिआगी काली महाकाली ।  
 अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसोय सिरिवच्छा ॥९॥  
 चंडा विजयंकुसी, पन्नडत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी ।  
 वइरुट्ठुत्त (दत्त) गंवारी, अंव पउमावई सिद्धा ॥१०॥



इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेऽवि सुरा सुरी य चउहावि ।  
 चतरजोइणीपमुहा, कुणतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥  
 एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संवस्स संतिजिणचंदो ।  
 मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरस्सरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥  
 इअ संतिनाहराम्म-ट्ठिओ रक्खं सरइ तिकालं जो ।  
 सव्वोवदवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥  
 तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं ।  
 सुपसायलद्धगणहर-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥ १४ ॥

### ४ तिजयपहुत्त स्तोत्रम्.

तिजयपहुत्तपयासय-अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं ।  
 समयविक्षत्तठिआणं, सरेमि चक्क जिणिदाणं ॥ १ ॥  
 पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।  
 नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥  
 वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिदा ।  
 गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥  
 सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।  
 वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥  
 पणपन्ना य दसेव य पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।  
 रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥  
 ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ।  
 आलिहियनामगव्वं, चक्कं किर सव्वओमह ॥ ६ ॥

ॐ रौहिणो पन्नत्ती, वज्जसिखला तहय वज्जअंकुसिआ ।  
 चक्केसरी नरदत्ता, काली महाकाली तह गोरी ॥७॥  
 गंधारी महज्जाला, माणवी वइरुट्ट तहय अचलुत्ता ।  
 माणसी महामाणसिआ, विज्जादेवीओ रवखंतु ॥८॥  
 पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।  
 विविहरयणाव्वन्नो—वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥  
 चउतीस अइसयजुआ, अट्टमहापाडिहेरकयसोहा ।  
 तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥  
 ॐ वरकणयसंखविहुम—मरगयघणसंनिहं विगयमोहं ।  
 सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥११॥ स्वाहा ॥  
 ॐ भवणवइवाणवंतर—जोडसवासी विमाणवासी अ ।  
 जे के वि दुट्टदेवा, ते सव्वे उवसमतु ममं ॥१२॥ स्वाहा ॥  
 चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ।  
 एगंतराइगहभूअ—साडणीमुग्ग पणासेड ॥१३॥  
 इअ सत्तरिसय जंत, सम्म मतं दुवारि पडिलिहिअं ।  
 दुरिआरिविजयवत, निब्भंत निच्चमच्चेह ॥१४॥

### ५. नमिऊण स्तोत्रम्.

नमिऊण पणयसुग्गण—चडाणीकिरणरंजिअं मुणिणो ।  
 चलणजुअलं महामय—पणामणं संथव वुच्छं ॥१॥  
 सडियकरचग्गनहमुह, निवुट्टनासा विवन्नलायन्ना ।  
 कुट्टमहारोगानल—फुलिगनिइइहसव्वगा ॥२॥

ॐ रोहिणो पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ।  
 चक्केसरी नरदत्ता, काली महाकाळी तह गोरी ॥७॥  
 गधारी महज्जाला, माणवी वइरुद्ध तहय अचलुत्ता ।  
 माणसी महामाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥  
 पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।  
 विविहरयणाइवन्नो—वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥  
 चउतीस अइसयजुआ, अट्टमहापाडिहेरकयसोहा ।  
 तित्थयरा गयमोहा, झाएअच्चा पयत्तेण ॥१०॥  
 ॐ वरकणयसंखविहुम—मरगयघणसंनिहं विगयमोहं ।  
 सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥११॥ स्वाहा ॥  
 ॐ भवणवइवाणवंतर—जोडसवासी विमाणवासी अ ।  
 जे के वि दुट्ठदेवा, ते सच्चे उवसमतु ममं ॥१२॥ स्वाहा ॥  
 चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिज्जण खालिअं पीअं ।  
 एगंतराइगहभूअ—साइणीमुग्ग पणासेड ॥१३॥  
 इअ सत्तरिसय जतं, सम्म मतं दुवारि पडिलिहिअं ।  
 दुरिआरिविजयवत, निब्भंत निच्चमच्चेह ॥१४॥

### ५. नमिऊण स्तोत्रम्.

नमिऊण पणयसुरगण—चडाणीकिरणरंजिअं मुणिणो ।  
 चलणजुअलं महाभय—पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥  
 सडियकरचरणनहमुह, निवुडुनासा विवन्नलायन्ना ।  
 कुट्टमतारोगानल—फुलिगनिइइहसव्वगा ॥२॥

ते तुह चलणाराहण-सलिलंजलिसेयवुद्धियच्छाया ।  
 वणदवदइढा गिरिपा-यव व्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥३॥  
 दुव्वायखुभिअ जलनिहि, उव्वडकल्लोळभीसणारावे ।  
 संभंतभयविसंटुल--निज्जामयमुक्कवावारे ॥४॥  
 अविदलिअजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ।  
 पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥  
 खरपवणुद्धयवणदव-जालावलिमिलिअसयलदुमगहणे ।  
 डज्झंतमुद्धमयवहु--भीसणरवभीसणम्मि वणे ॥६॥  
 जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ।  
 जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥  
 विलसंतभोगभीसण-फुरिआरुणनयणतरलजीहालं ।  
 उग्गभुअंग नवजलय--सत्थहं भीसणाचारं ॥८॥  
 मन्नति कीडसरिसं, दूरपरिच्छूहविसमप्पिसवेगा ।  
 तुह नामदखरफुडसि-द्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥९॥  
 अडवीसु भिललतकर-पुलिदसहूलसद्भीमासु ।  
 भयविहुरवुन्नकायर--उल्लूरियपहियसत्थासु ॥१०॥  
 अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ।  
 ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिअइच्छियं ठाणं ॥११॥  
 पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ।  
 नहकुलिसवायविअलिअ-गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥१२॥

पणयससंभमपत्थिव-नहमणिमाणिक्यपडिअपडिमस्स ।  
 तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥  
 समिधवलदतमुसलं, दीहकरुल्लालबुद्धिउच्छाहं ।  
 महुपिगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥  
 भीम महागइदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।  
 जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुगं समल्लीणा ॥१५॥  
 समरंमि तिकखुखुगा-भिग्घायपविद्धउधुयकवंधे ।  
 कुंतविणिभिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥  
 निज्जिअदप्पुद्धररिउ-नरिदनिवहा भडा जसं धवलं ।  
 पावंति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥  
 रोगजलजलणविसहर--चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।  
 पासजिणनामसंकित्तणेण, एसमंति सव्वाइं ॥१८॥  
 एवं महाभयहरं, पासजिणिदस्स संथवमुआरं ।  
 भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥  
 रायभयजक्खरक्खस-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।  
 संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥  
 जो पढड जो असुणइ, ताणं कइणो य माणतुगस्स ।  
 पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चिचयचलणो ॥२१॥  
 उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि आणाउ जो न संचलिओ ।  
 सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥  
 एअस्स मज्झयागे, अट्टारसअक्खरेहिं जो मंतो ।  
 जो जाणइ सो छायाइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासह समरण जो कुण्ड, संतुष्टे हियएण ।  
अद्भुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥४२॥  
इति श्री मयहर स्तोत्रम्

## ६. श्री अजितशान्ति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संति च पसंतसव्वगयपावं ।  
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा  
॥१॥ ववगयमंगुळभावे, ते हं विउलनपनिम्मउसहावे । निरुम  
महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसव्वभावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-  
प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो  
अजिअसंतीणं ॥ निळोगो ॥ ३ ॥ अजिअजिग ! सुहप्पवत्तणं  
तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य  
जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४॥ किरियाविहि-  
संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं  
महामुणिसिद्धिगयं । अजिअरुप य संतिमहामुणिणो वि अ  
संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणय ॥ आलिंगणयं  
॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-  
कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अमयकरे सरणं पवज्जहा  
॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,  
सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवडयं । अजिअमहमवि अ  
सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं  
सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७ ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम

पणयससंभमपत्थिव-नहमणिमाणिक्यपडिअपडिमस्स ।  
 तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥  
 ससिधवलदत्तमुसलं, दीहकरुल्लालबुद्धिउच्छाहं ।  
 महुपिगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥  
 भीम महागइदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।  
 जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुगं समल्लीणा ॥१५॥  
 समरंमि तिक्खखग्गा-भिग्घायपविद्धउ-धुयकवंधे ।  
 कुंतविणिभिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥  
 निज्जिअदप्पुद्धररिउ-नरिदनिवहा भडा जसं धवलं ।  
 पावंति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥  
 रोगजलजलणविसहर--चोरारिमईदगयरणभयाई ।  
 पासजिणनामसंक्कित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥  
 एवं महाभयहरं, पासजिणिदस्स संथवमुआरं ।  
 भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥  
 रायभयजक्खरक्खस-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।  
 संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥  
 जो पढड जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।  
 पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चिचयचलणो ॥२१॥  
 उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ ।  
 सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥  
 एअस्स मज्झयारे, अट्टारसअक्खरेहिं जो मंतो ।  
 जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासह समरण जो कुण्ड, संतुष्टे हियण ।

अद्भुत्तरसयवाहिभय, नासड तस्स दरेण ॥४२॥

इति श्री भयहर स्तोत्रम्

## ६. श्री अजितशान्ति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संति च पसतसव्वगयपावं ।  
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा  
॥१॥ ववगयमंगुळभावे, ते हं विउलननिम्मज्झभावे । निरुम  
महप्पभावे, योसामि सुदिट्ठसव्वभावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-  
प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो  
अजिअसंतीणं ॥ भिज्जोगो ॥ ३ ॥ अजिअजिग ! सुहप्पवत्तणं  
तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य  
जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४॥ किरियाविहि-  
संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं  
महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ  
संतिकरं, सययं मम निव्वुड्ढकारणयं च नमंसणय ॥ आलिगणयं  
॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-  
कारणं । अजिअं संति च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा  
॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,  
सुरअसुरगरुल्लभुयगवइप्पयपणिवडयं । अजिअमहमवि अ  
सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ सुविदिविजमहिंयं  
सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७ ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम



पणयससंभमपत्तिव-नहमणिमाणिक्यपडिअपडिमस्स ।  
 तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥  
 ससिधवलदतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं ।  
 महुपिगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥  
 भीमं महागइदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।  
 जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुगं समल्लीणा ॥१५॥  
 ससरंमि तिकखखग्गा-भिग्घायपविद्धउधुयकवंधे ।  
 कुंतविणिभिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥  
 निज्जिअदप्पुद्धररिउ-नरिदनिवहा भडा जसं धवलं ।  
 पावति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥  
 रोगजलजलणविसहर--चोरारिमईदगयरणभयाड ।  
 पासजिणनामसंक्चित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥  
 एवं महाभयहरं, पासजिणिदस्स संथवमुआरं ।  
 भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥  
 रायभयजक्खरक्खस-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।  
 संज्ञासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥  
 जो पढड जो अनिसुणड, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।  
 पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चियचलणो ॥२१॥  
 उवसगंते कमठा-सुरम्मि जाणाउ जो न संचलिओ ।  
 सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संयुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥  
 एअस्स मज्झयारे, अट्टारसअक्खरेहिं जो मतो ।  
 जो जाणड सो ज्ञायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासह समरण जो कुण्ड, संतुष्टे हियण ।

अद्भुत्तरसयवाहिमय, नासह तस्स दरेण ॥४२॥

इति श्री भयहर स्तोत्रम्

## ६. श्री अजितशान्ति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसतसव्वगयपावं ।  
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा  
॥१॥ वव्वगयमंगुळभावे, ते ह विउलत्तनिम्मत्तभावे । निहम  
महप्पभावे, थोमामि सुद्धिद्वसव्वभावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-  
प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो  
अजिअसंतीणं ॥ त्रिलोको ॥ ३ ॥ अजिअजिण ! सुहप्पत्तणं  
तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य विइमइप्पवत्तणं, तव य  
जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४॥ किरियाविहि-  
संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहि  
महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ  
संतिकरं, सययं मम निव्वुडकारणयं च नमंसणय ॥ आलिगणयं  
॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-  
कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पव्वज्जहा  
॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,  
सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवडयं । अजिअमहमवि अ  
सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं  
सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७ ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम

सत्तधरं, अञ्जवमद्वखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं, संतिकरं पणमामि  
 दमुत्तमतिथयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ । सोवाणयं  
 ॥८॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्न-  
 संथियं, थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्था-  
 णपत्थिय संथवारिह हत्थिहत्थवाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहय-  
 पिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुखं, सुइसुहमणाभिरामपरम-  
 रमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ वेइढओ ॥९॥  
 अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामि  
 अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ रासालुद्धओ ॥१०॥  
 कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्ठिभोए  
 महप्पभावो, जो वावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई-  
 बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररणनवमहा-  
 निहिचउसट्ठीसहस्सपवरजुवर्ण सुन्दरवई, चुलसीहयगयरहस-  
 यसहस्स सामी छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि  
 भयवं ॥ वेइढओ ॥११॥ तं संतिं संतिवरं, संतिणं सव्वभया ।  
 संति थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ रासानदिअय ॥१२॥  
 इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा, नवसारयससि-  
 सक्कलाणण विगयतमा विहुअरया । अजिउत्तम तेअगुणेहिं  
 महासुणि अमिअवला विउलकुला, पणमामि ते भवभयमूरण  
 जगरुणा मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥१३॥ देवदाणविंदचंदसरवंद  
 दट्ठुट्ठजिदुपरम, लट्ठुख धंतरूपपट्टसेयसुद्धनिद्धवल, दंतपंति-  
 संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअवंदधेअ सव्वलोअ-

भाविअप्पभाव-णेअपइस मे समार्हिं ॥ नागयओ ॥ १४ ॥ विमल-  
ससिकलाडरेअसोम, वितिमिरसूरक्काडरेअतेअं । तिसवह  
गणाडरेअरुव, धरणिधरप्पवगाडरेअसारं ॥ कुसुमलया ॥ १५ ॥  
सत्ते अ सया अज्जिअं, सारीरे अ वले अजिअं । तवसंजमे अ  
अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ भुअगपरिरिगिअयं  
॥ १६ ॥ सोमगुणेहिं पावड न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं  
पावड न तं नवसरयसी । रुग्गुणेहिं पावड न तं तिससगणवई,  
सारगुणेहिं पावड न तं धरणिधरवई ॥ खिज्जिअयं ॥ १७ ॥  
तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसो  
संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणि सरणमुवणमे  
॥ ललिय ॥ १८ ॥ विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं  
थिमिअं, विवुहाहिवधणवइनरवडथुअमहिअच्चिअं बहुसो ।  
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरण-  
समुइअचारणवदिअं सिरसा ॥ किसलयमाला ॥ १९ ॥ असुर-  
गरुलपरिवदिअं, किन्नरोरगनमसिअं । देवकोडिसयसंथुअं,  
समणसंघपरिवदिअं ॥ सुमुहं ॥ २० ॥ अभयं अणह, अरयं  
अरुयं । अजिअं, अजिअं, पयओ पणमे ॥ विज्जुविलसिअं ॥ २१ ॥  
आगयावरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसएहि हुलिअं । ससं-  
भमोअरणखुभियल्लियचल. कुडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला  
॥ वेइढओ ॥ २२ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसु-  
जुत्ता, आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुदट्टुसुविमिहअसव्ववलोधा ।

સત્તથરં, અજ્જવમદ્વચ્ચંતિવિમુત્તિસમાહિનિર્હિં, સંતિકરં પળમામિ  
 દમુત્તમતિત્થયરં, સંતિમુળી મમ સંતિસમાહિવરં દિસડ । સોવાળયં  
 ॥૮॥ સાવત્થિપુવ્વપત્થિવં ચ વરહત્થિમત્થયપસત્થવિચ્છિન્ન-  
 સંથિયં, થિરસરિચ્છવચ્છં મયગલલીલાયમાળવરંગંધહત્થિપત્થા-  
 ણપત્થિય સંથવારિહ હત્થિહત્થવાહું ધંતકળગરુઅગનિરુવહય-  
 પિંજરં પવરલક્ષણોવચિઅસોપચારુરુવં, સુહસુહમણાભિરામપરમ-  
 રમણિજ્જવરદેવદુંદુહિનિનાયમહુરયરસુહગિરં ॥ વેહ્દહઓ ॥૯॥  
 અજિં અજિઆરિગણં, જિઅસવ્વભયં ભવોહરિડં । પળમામિ  
 અહ પયઓ, પાવં પસમેડ મે ભયવં ! ॥ રાસાલુદ્ધઓ ॥૧૦॥  
 કુરુજળવચ્ચહત્થિણાડરનરીસરો પઠમં તઓ મહાચક્કવટ્ઠિમોણ  
 મહપ્પભાવો, જો વાવત્તરિપુરવરસહસ્સવરનગરનિગમજળવચ્ચવર્ડ-  
 ષત્તીસારાયવરસહસ્સાણુયાયમગ્ગો । ચડદસવરરયણનવમહા-  
 નિદ્ધિચડસટ્ઠીસહસ્સપવરજુવર્ડણ સુન્દરવર્ડ, તુલસીહયગયરહસ-  
 ચસહસ્સ સામી છન્નવડ્ઢગામકોહિસામી આસી જો મારહંમિ  
 ભયવં ॥ વેહ્દહઓ ॥૧૧॥ તં સંતિં સંતિવરં, સંતિણં સવ્વભયા ।  
 સંતિ થુણામિ જિણં, સંતિં વિદ્ધેડ મે ॥ રાસાનદિઅય ॥૧૨॥  
 ઇવ્વલાગ વિદેહનરીસર નવસદ્ધા મુણિવસદ્ધા, નવસારયસસિ-  
 સવલાળણ વિગય્તમા વિહુઅરયા । અજિઉત્તમ તેઅગુણેર્હિં  
 મહામુણિ અમિઅવલા વિડલકુલા, પળમામિ તે ભવભયમૂરણ  
 જગસરણા રુમ સરણં ॥ ચિત્તલેદ્ધા ॥૧૩॥ દેવદાણવિંદચંદસુરવંદ  
 દ્વદ્વત્તજિદ્વપરમ, લ્લદ્વરુવ વંતરુપ્પપટ્ટસેયસુદ્ધનિદ્ધધવલ, દંતપંતિ-  
 સંતિ સત્તિકિત્તિમુત્તિજુત્તિગુત્તિપવર, દિત્તતેઅવંદધેઅ સવ્વલોઅ-

सुद्धसज्जगी अपायजालवन्दिआहि। वलयमेहलाकलापनेउराभिग-  
मसहमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हावभावविन्ममप्पगारगहि।  
नच्चिऊण अंगहारएहि वन्दिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा,  
तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेस ह नमामि  
संतिमुत्तमं जिणं ॥ नारायओ ॥ ३१ ॥ छत्तचामरपडागज्जअ-  
जवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवससुद्धमंद-  
रदिसागयसांहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्करंकिआ ॥ ललिअयं  
॥ ३२ ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहि जिट्ठा।  
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहि इट्ठा रिसीहि जुट्ठा ॥ वाणवा-  
मिआ ॥ ३३ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपा-  
वया। संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया  
॥ अपरांतिका ॥ ३४ ॥ एवं तववलविउलं, थुअं मए अजिअ-  
संतिजिणजुअलं। ववगयक्कम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं  
॥ गाहा ॥ ३५ ॥ त बहुगुणप्पसायं, सुक्खसुहेण परमेण  
अविसायं। नासेउ मे विसाय, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं  
॥ गाहा ॥ ३६ ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभि-  
नंदिं। परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं  
॥ गाहा ॥ ३७ ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ-संवच्छरिए अवस्स  
मणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो  
॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअसं-  
तिथअं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति

उत्तमकंचणरयणपरुवियभासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणय-  
 भत्तिवसागयपजलिपेसियसीसपणामा ॥ रयणमाला ॥२३॥  
 वदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ।  
 पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥  
 खित्तयं ॥२४॥ तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोसभयमोह-  
 वज्जिअं । देवदाणवनरिदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातव नमे  
 ॥ खित्तयं ॥२५॥ अंतरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहु  
 गामिणिआहि । पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदल-  
 लोअणिआहिं ॥ दीवय ॥२६॥ पीणनिरंतरथणभरविणमिअ-  
 गायलआहि, मणिकंचणपसिहिलमेहलसोद्विअसोणितडाहिं ।  
 वरखिखिणीनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहि, रइकरचउरमणो-  
 हरसुंदरदसणिआहि ॥ चित्तक्खरा ॥ २७ ॥ देवसुदरीहिं  
 पायवदिआहिं, वदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा, अप्पणो  
 निडालएहि, मंडणोड्डणप्पगारएहि केहि केहि वि । अवंग-  
 तिलयपत्तलेहनामएहि चित्तलएहि संगयंगयाहि, भत्तिसंनिविट्ठ-  
 वदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ नारायओ ॥२८॥  
 तमहं जिणचर्दं, अजिअं जिअमोह । धूयसव्वकिळेसं, पयओ  
 पणमामि नदिअयं ॥२९॥ थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेव-  
 गजेहि, तो देववहूहि पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तम-  
 सासणअस्सा, भत्तिवसागयपिडिअयाहि । देववरच्छरसावहुआहि,  
 सुररररइगुणपंडिअयाहिं ॥ भासुरयं ॥३०॥ वंससद्वतंति-  
 तालमेलिए, तिउक्खराभिरामसद्वमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ

सुद्धसज्जगीअपायजालवंदिआहि।बलयमेहलाकलायनेउराभिरा-  
मसहमीसए कए अ,देवनट्टिआहि हावभावविन्ममप्पगाग्गहि।  
नच्चिऊण अंगहारएहि वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा क्रमा,  
तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेस ह नमामि  
संतिमुत्तमं जिणं ॥ नारायओ ॥३१॥ छत्तचामग्गपडागज्जअ-  
जवमंडिआ,झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा।दीवसमुद्धमंद-  
रदिसागयसांदिआ,सत्थिअवसहसीहरहचक्करंकिआ॥ललिअय  
॥३२॥ सहावलद्धा समप्पइद्धा, अदोसदुद्धा गुणेहि जिद्धा।  
पसायसिद्धा तवेण पुद्धा, सिरीहि इद्धा रिसीहि जुद्धा ॥ वाणवा-  
सिआ ॥३३॥ ते तवेण धुअसव्वपावया,सव्वलोअहिअमूलपा-  
वया।संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया  
॥अपरांतिका ॥ ३४॥ एवं तववलविउलं, थुअं सए अजिअ-  
संतिजिणजुअलं।ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं  
॥ गाहा ॥ ३५ ॥ त वहुगुणप्पसायं, मुखसुहेण परमेण  
अविसायं।नासेउ मे विसाय, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं  
॥ गाहा ॥३६॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभि-  
नंदिं।परिसा वि अ सुहनदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं  
॥ गाहा ॥३७॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ-संवच्छरिए अवस्स  
भणिअव्वो।सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो  
॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअसं-  
त्तिथअं।न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति-



॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा किंति सुवित्थडं भुवणे  
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्री अजितशाति स्तवन

### ७. श्री भक्तामरस्तोत्रम्.

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-

मुद्घोतकं दलितपापतमोवितानम् ।

सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-

वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलबाह्मयतत्त्वबोधा-

दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।

स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तरैरुदारैः,

स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !

स्तुतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।

बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुविम्ब-

मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,

कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।

कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,

को वा तरितुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !

कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः

प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,

नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,

त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माध् ।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरीति,

तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्सस्तवेन भवसंततिसंनिवद्धं,

पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।

आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,

सूर्या शुभिन्नमिव शर्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-

मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।

चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु,

मुक्ताफलद्युतिषुपैति नन्दविन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,

त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।

दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,

पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ,

भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,  
 भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥  
 दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,  
 नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।  
 पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,  
 क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥  
 यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,  
 निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।  
 तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,  
 यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥  
 वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,  
 निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।  
 विम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,  
 यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥  
 संपूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-  
 शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।  
 ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,  
 कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥  
 चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-  
 नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।  
 कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,  
 किं मन्दगाद्रिशिखरं चञ्चितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः

कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोपि ।

गम्यो न जातु मरुता चलिताचलानां,

दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

नास्त कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,

स्पष्टीकरोपि सहसा युगपज्जगन्ति ।

नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,

सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,

गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।

विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,

विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्गकिम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्मरीषु शशिनाऽहि विवस्वता वा,

युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ !

निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,

कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,

नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,

नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्ट्वा,

दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन्य नान्यः,  
 कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥  
 स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,  
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।  
 सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि,  
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥  
 त्वासांमनन्ति मृनयः परमं पुमांस-  
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।  
 त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,  
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥ २३ ॥  
 त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्गचमाद्यं,  
 ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।  
 योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,  
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥  
 बुद्धस्तमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात् ;  
 त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ,  
 धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्जिघ्रानात् ,  
 व्यक्तं तमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥  
 तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,  
 तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।  
 तुभ्यं नमस्त्रिजगतः पमेश्वराय,  
 तुभ्यं नमो जिन भवोदधिगोपणाय ॥ २६ ॥

को विष्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-  
 स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।  
 दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,  
 स्पृष्टान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥  
 उच्चैः शोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-  
 माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।  
 स्पष्टोलसत्किरणमस्तमोवितानं,  
 बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥  
 सिंहासने भणिमयूखशिखाविचित्रे,  
 विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।  
 बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितान,  
 तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥  
 कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,  
 विभ्राजते तव वपुः कलवौतकान्तम् ।  
 उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-  
 मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातक्रोम्भम् ॥ ३० ॥  
 छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-  
 मुच्चैः स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।  
 मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभ,  
 प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥  
 उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती,  
 पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन्य नान्यः,  
 कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥  
 स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,  
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।  
 सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि,  
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥  
 त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-  
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।  
 त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,  
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥ २३ ॥  
 त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्गचमाद्यं,  
 ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।  
 योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,  
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥  
 बुद्धस्तमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात् ;  
 त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ,  
 धाताऽसि धीर शिवमार्गावधेर्जिधानात् ,  
 व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥  
 तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,  
 तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।  
 तुभ्यं नमस्त्रिजगतः पमेश्वराय,  
 तुभ्यं नमो जिन भवोदधिगोपणाय ॥ २६ ॥

को विष्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-

स्त्वं संश्रितो निग्वकाशतया मुनीश ।

दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वः,

स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥

उच्चैःशोकरुसंश्रितमुन्मयूख-

माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।

स्पष्टोललसत्किरणमस्तमोवितानं,

विम्बं रवेरिव पयोधरपाश्वर्वर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,

विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।

विम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,

तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलवीतकान्तम् ।

उद्यच्छगाङ्कशुचिनिर्झरप्रारिधार-

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातक्रौञ्चम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-

मुच्चैः स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,

प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती,

धुल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।



पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,  
 पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥  
 इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !,  
 धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।  
 यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,  
 तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥  
 श्रुत्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-  
 मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।  
 ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,  
 दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥  
 भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-  
 मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।  
 वद्धक्रमः क्रमगत हरिणाधिपोऽपि,  
 नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥  
 कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम् ।  
 विश्वं जिघत्सुमिन् संमुखमापतन्तं,  
 त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥  
 रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,  
 क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।  
 आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-  
 स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥

वलगत्तुरङ्गजगर्जितमीमनाद-  
 माजौ वलं चलवतामपि भूपतीनाम् ।  
 उद्यद्दिवाकरमयूखशिखाऽपविद्धं,  
 त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥  
 कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-  
 वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।  
 युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-  
 सत्वत्पादपङ्कजतनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥  
 अम्भोनिधौ क्षुभितमीपणनक्रचक्र-  
 पाठीनपीठभयदोलवणवाडवाग्नौ ।  
 रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-  
 स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥  
 उद्भूतमीपणजलोदरभारभुग्नाः,  
 शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।  
 त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,  
 मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥  
 आपादकण्ठमुखशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,  
 गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।  
 त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,  
 सद्यः स्वयं विगतबन्धमया भवन्ति ॥ ४२ ॥  
 मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-  
 सद्ग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति मयं भियेव  
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥  
 स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निवद्धा.  
 भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रद्रुपदाम् ।  
 धत्ते जनो य इह कण्ठगतमजस,  
 तं मानतुङ्गमवगा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥  
 ॥ इति श्री भक्तामर स्तोत्रम् ॥

### ८ श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवघभेदि,  
 भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्गत्रिपद्मम् ।  
 संसारसागरनिमज्जदशेपजन्तु-  
 पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥  
 यस्य स्वयं सुरगुरुर्गिरिमाम्बुरागेः,  
 स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।  
 तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो  
 स्तस्याहमेव किल संस्तवनं करिष्ये ॥ युग्मम् ॥ २ ॥  
 सामान्यतोऽपि तत्र वणयितुं स्वरूप-  
 मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः ।  
 वृष्टोऽपि कौशिकगिर्युग्मं वा दिवान्धो,  
 रूपं प्ररूपयति ॥ किल वर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,  
 नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।  
 कल्पान्तवान्तप्रयमः प्रकटोऽपि यस्मा-  
 न्मीयेत केन जलवेर्ननु गन्तराशिः ॥ ४ ॥  
 अभ्युद्यतोऽस्मि तत्र नाथ ! जडागयोऽपि,  
 कर्तुं स्तवं लसद्मङ्गल्यगुणकरस्य ।  
 वालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,  
 विस्तीर्णता कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥  
 ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्त्रवेश,  
 वक्तुं कथं भवति तेषु समावकाशः ।  
 जाता तदेवमसमीक्षितकारितेय,  
 जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥  
 आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते,  
 नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।  
 तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,  
 ग्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥  
 हृद्वर्तिनि त्वयि दिक्षो शिथिलीभवन्ति,  
 जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।  
 सद्यो भुजङ्गममया इत मव्यभाग  
 मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥  
 मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र,  
 रौद्रेरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं मियेव  
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥  
 स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निवद्धा.  
 भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।  
 धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्र,  
 तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥  
 ॥ इति श्री भक्तामर स्तोत्रम् ॥

### ८ श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,  
 भीताभयप्रदमनिन्दितमद्भिपन्नम् ।  
 ससारसागरनिमज्जदशेपजन्तु-  
 पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥  
 यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाञ्चुराणेः,  
 स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।  
 तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो  
 स्तस्याहमेप किल संस्तवनं करिष्ये ॥ युग्मम् ॥ २ ॥  
 सामान्यतोऽपि ता वणयितु स्वरूप-  
 मस्मादृशाः कथमवीश भवन्त्यवीक्षाः ।  
 धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,  
 रूपं प्ररूपयति एक किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,  
 नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।  
 कल्पान्तवान्तपयमः प्रकटोऽपि यस्मा-  
 न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥  
 अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाद्योऽपि.  
 कर्तुं स्तब्धं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।  
 बालोऽपि किं न निजबाहुयुग वितत्य,  
 विस्तीर्णता कथयति स्वयिन्मुराशेः ॥ ५ ॥  
 ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,  
 वक्तुं कथं श्रूयति तेषु समायुक्ताः ।  
 जाता तदेवमसनीक्षितकारिदेय,  
 जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥  
 आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते,  
 नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।  
 तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदावे,  
 प्रीणाति पद्मसरमः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥  
 हृदयैर्नि त्वयि चिभो शिथिलीभवन्ति,  
 जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।  
 सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग  
 मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥  
 मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र,  
 रूपद्रवगतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्र,  
 चारैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥  
 त्व तारको जिन कथं भविना त एव,  
 त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।  
 यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेव नून  
 मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥  
 यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,  
 सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।  
 विध्यापिता हुतशुभ्रः पयसाऽथ येन,  
 पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥  
 स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-  
 स्त्वा जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।  
 जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाववेन,  
 चिन्त्यो न हन्त महता यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥  
 क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,  
 ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ।  
 प्लोपत्यमुत्र यदिवा शिशिराऽपि लोके,  
 नीलद्रुमाणि विभिन्नानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥  
 त्वा योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-  
 मन्वेपयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।  
 पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य-  
 दक्षस्य संभवि पद ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

व्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,  
 देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।  
 तीव्रानन्नादुपलभावमपास्य लोके,  
 चामीररत्नमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥  
 अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,  
 भव्यैः कथं तदपि नाशयसे जरीरम् ।  
 एतत्पञ्चरूपमथ मध्यत्रिवर्तिनो हि,  
 यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥  
 आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,  
 व्यातो जिनेन्द्र भवतोह भवत्प्रभावः ।  
 पालीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमान,  
 किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥  
 त्वामेव वीततमसं परवादिनाऽपि,  
 नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।  
 किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि गङ्गो,  
 नो गृह्यते विविधवर्णविषययेण ॥ १८ ॥  
 धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा  
 दास्ता जनो भवति ते तत्सुख्यशोकः ।  
 अभ्युद्गते दिनपतौ लमहीरुहोऽपि,  
 किं वा विबोधमुपयाति न जीवशोकः ॥ १९ ॥  
 चित्रं विभो कथमवाहमुखवृन्तमेव,  
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।



त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश,  
गच्छन्ति नूनमव एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गभीरहृदयोदविसंभवायाः,  
पीयूषता तत्र गिरः समुदीरयन्ति ।  
पीत्वा यतः परमसमदसङ्गभाजो,  
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरा मरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् मुदग्मवनम्य समुत्पतन्तो,  
मन्ये वदन्ति शुचय सुश्चामरौघाः ।  
येऽस्मै नर्ति विदधते मुनिपुङ्गवाय,  
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न,  
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।  
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः,  
श्रामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छता तव गितिद्युतिमण्डलेन,  
लुप्तच्छदच्छत्रिणोक्ततर्कभूव ।  
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतरागः  
नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भो प्रमादमवध्रय नजध्वमेन-  
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।

एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,  
मन्ये नदन्नमिनमः सुरदुन्दुभिस्तं ॥ २५ ॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,  
तारान्वितो विधुरयं त्रिहताधिकारः  
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र  
व्याजात्त्रिधा धृततनुषु वमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूजितजगत्त्रयपिण्डितेन,  
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन ।  
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,  
सालत्रयेण गगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यस्रजो जिन नमस्त्रिदशाविषाना-  
मुत्सृज्य रत्न रचितानपि मौलिवन्धान् ।  
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,  
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्व नाथ जन्मजलधेर्विपराद्मुखोऽपि,  
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठगन्तान् ।  
युक्त हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,  
चिञ्च विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥  
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं,  
किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ।

अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,  
 ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥ ३० ॥  
 प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा-  
 दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।  
 छायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो,  
 ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा, ॥ ३१ ॥  
 यद्गर्जदर्जितघनौघमदश्रमीम,  
 अश्रयत्तडिन्मुसलमासलघोरधारम् ।  
 दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,  
 तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥  
 ध्वस्तोर्व्यकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-  
 प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः  
 प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,  
 सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥  
 धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य-  
 माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।  
 भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः  
 पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥  
 अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश,  
 मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ।  
 आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे.  
 किं वा विपद्विपधरी सवित्रं समेति ॥ ३५ ॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव,  
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।  
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवाना,  
जातो निकेतनमहं मथितागयानाम् ॥ ३६ ॥  
नूनं न मोहतिमिश्रवृतलोचनेन,  
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।  
सर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,  
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥  
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,  
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।  
जातोऽस्मि तेन जनवान्धव दुःखपात्रं,  
यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥  
त्वं नाथ दुःखजनवत्सल हे शरण्य,  
कारुण्यपुण्यवसते वशिना वरेण्य, ।  
भक्त्या नते मयि महेश दया विधाय,  
दुःखाद्दुःखोद्दलनतत्परता विधेहि ॥ ३९ ॥  
निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य  
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।  
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,  
वन्ध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥  
देवेन्द्रवन्ध विदिताखिलवस्तुसार,  
संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ।

त्रायस्व देव करुणाहृद मा पुनीहि,  
 सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः  
 यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणा,  
 भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ।  
 तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,  
 स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥  
 इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र,  
 सान्द्रोल्लसत्पुलककङ्क्षुकिताङ्गभागाः ।  
 त्वद्विम्बनिर्मलगुखाम्बुजवद्धलक्ष्या,  
 ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥  
 जननयनकुमुदचन्द्र,  
 प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।  
 ते विगलितमलनिचया,  
 अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥

## ९ श्री बृहच्छान्ति स्तोत्रम्

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुत सर्वमेतत्,  
 ये यात्राया त्रिभुवनगुरोराहता भक्तिभाजः ।  
 तेपा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-  
 न्दारोग्यश्रीवृत्तिमतिकरी क्लेशविन्वसहेतुः ॥ १ ॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञाति वज्रशृङ्खला दज्जांकुशी-अप्रतिचक्रा-  
पुरुषदत्ता-काली-महाकाली गोरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महा-  
ज्वाला-मानवी-वैरोट्या अच्छुप्ता-मानसी महामानसी षोडश  
विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा ॥

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री णसंघस्य  
शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतु-  
सहिताः सलोकपालाः सोमयमवरणकुवेरवासवादित्यस्कन्द-  
विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे  
प्रीयन्ता प्रीयन्ता, अक्षीणकोशकोष्टागारा नरपतयश्च भवंतु  
स्वाहा ॥

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ कलत्र सुहृत्-स्वजन संबन्धि बन्धुवर्ग  
सहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डले आय-  
तननिवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधिदुःख  
दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-माङ्गल्योत्सवाः ।  
सदा प्रादुर्भूतानि, पापानि शाम्यन्तु दुरितानि ।

शत्रवः पराङ्मुखा, भवन्तु स्वाहा ॥

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।

त्रैलोक्यस्यामगाधीश-मुकुटभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।

शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥

उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।

संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥

श्रीसंघजगज्जनपद-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।

गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥

श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु ॥

श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसन्निवेशानां शान्ति-

र्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु । श्रीपौरमुख्याणां शान्ति-

र्भवतु । श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य शान्ति-

र्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु । शान्तिकलशं

गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्ना-

त्रचतुष्पिकाया श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पस्रक्चन्दनाभ-

रणालङ्कृतः पुष्पमाला कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा

शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।

स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान् कल्याणभाजो हि

जिनाभिषेके ॥ १ ॥

शिवमस्तु सवजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।

दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥ २ ॥

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।  
 अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥ ३ ॥ स्वाहा ।  
 उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।  
 मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥  
 सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।  
 प्रधानं सर्वधर्माणां, जैन जयति शासनम् ॥ ५ ॥

## ॥ श्री घंटाकर्णमंत्रः ॥

ॐ ह्रीं घंटाकर्णो महावीरः, सर्वव्याधिविनाशकः ।  
 विस्फोटकभये प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबल ॥ १ ॥  
 यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः ।  
 रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ॥ २ ॥  
 तत्र राजभय नास्ति, यान्ति कर्णेजपाः क्षयम् ।  
 शाकिनीभूतवेताल—राक्षसाः प्रभवन्ति न ॥ ३ ॥  
 नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते ।  
 अग्निचौरभयं नास्ति, ह्रीं घण्टाकर्णं नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥  
 ठः ठः ठः स्वाहा ॥



## श्री बीज तिथिनुं चैत्यवंदन

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा अभिनदन,  
 बीजे जन्म्या जे प्रभु, भव दुख निकन्दन ॥१॥  
 दुविध व्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय व्यान,  
 एम प्रकाश्यु सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥२॥  
 दोय बधन रागद्वेष, तेहने भावे तजीए,  
 मुज परे गीतलजिन कहे, बीज दिन शिव भजीए ॥३॥  
 जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण,  
 बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥४॥  
 निश्चय नय व्यवहार दोय, एकाते न ग्रहीए,  
 अरजिन बीज दिने च्यवी, एम जन आगळ कहीए ॥५॥  
 वर्त्तमान चोविशीए, एम जिन कल्याण,  
 बीज दिने केई पामीया प्रभु नाण निर्वाण ॥६॥  
 एम अनन्त चोविशीए, हुआ बहु कल्याण,  
 जिन उत्तम पद पढने, नमता होय सुख खाण ॥७॥

श्री बीज-तिथिनुं-स्तवन, (ढाल-३)

(ढाल-पहेली) (देशी-सुरती-महिमानी)

सरस वचन रस वरसति, सरसती कळा भण्डार,  
 बीज तणो महिमा कहु जेम कळो शाख मोझार १  
 जवूढीपना भरतमा, राजगृही नयरी उद्यान,  
 वीर जिणेद समोसर्या, वादवा आव्या राजन. २

श्रेणिक नामे भूपति, वेठा बेसण ठाय,  
 पूछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय ३  
 त्रिगडे वेठा त्रिभुवन पति, देअना दीये जिनराय,  
 कमळ सुकोमळ पाखडी, एम जिन हृदय सोहाय ४  
 शशी प्रगटे जेम ते दिने, धन्य ते दिन सुविहाण,  
 एक मने आराधता, पामे पद निर्वाण ५

**ढाल २ जी. (अष्टापद अरिहंतजी-ए राग.)**

कल्याणक जिनना कहु, सुण प्राणीजी रे,  
 अभिनदन अरिहंत, ए भगवन्त, भवि प्राणीजी रे,  
 माघ सुदि वीजने दिने, सुण०  
 पाम्या शिवसुख सार, हरख अपार भवि० १  
 वासुपूज्य जिन वारमा, सुण०  
 एहज तिथे थयु नाण, सफल विहाण, भवि प्राणीजी रे;  
 अष्ट कर्म चूरण करी, सुण प्राणीजी रे०  
 अवगाहन एकवार मुक्ति मोझार भवि० २  
 अरनाथ जीनजी नमु, सुण प्राणीजी रे,  
 अष्टादशमा अरिहन्त, ए भगवन्त, भवि प्राणीजी रे०  
 उज्जवल तिथि फागणनी भली, सुण प्राणीजी रे,  
 वरिया जिववधू सार, सुन्दर नार भवि० ३  
 दगमा जीतल जिनेश्वरू, सुण प्राणीजी रे०  
 परम पदनी ए बेल, गुणनी गेल, भवि प्राणीजी रे;  
 वैगाख वदि वीजने दिने, सुण प्राणीजी रे,  
 मुक्यो सरवे ए साथ, सुरनर नाथ. भवि० ४

श्रावण सुदनी बीज भली, सुण प्राणीजी रे,  
सुमतिनाथ जिनदेव, सारे सेव, भवि प्राणीजी रे,  
एणी तिथिए जीनजी तणां, सुण प्राणीजी रे,  
कल्याणक पंच सार, भवनो पार. भवि० ५

ढाळ ३ जी

जगपति जिन चौबीशमो रे लाल,  
ए भाख्यो अधिकार रे भविकजन,  
अणिक आदे सह मळ्या रे लाल,  
शक्ति तणे अनुसार रे भविकजन,  
भाव धरीने सामळो रे लाल १

दोय वरस दोय मासनी रे लाल,  
आराधो धरी खन्त रे, भविक०  
उजमणु विधिशु करो रे लाल,  
बीज ते मुक्ति महन्त रे भ० भाव० २  
मार्ग मिथ्या दूरे तंजोरे लाल.

आराधो गुणना थोक रे, भविक०  
वीरनी वाणी सामळी रे लाल,  
उच्छरङ्ग थया बहु लोक रे भ० भाव० ३  
एणि बीजे केई केई तर्या रे लाल,  
वली तरशे करशे संगरे, भविक०

शशि सिद्धि अनुमानथीरे लाल,  
शैल नागधार अकरे भ० भाव० ४

अषाढ शुदि दशमी दिनेरे लाल,

ए गायो स्तवन रसाळरे, भविक०

नवलविजय सुपसायथी रे लाल,

चतुरने मगल माल रे भ० भाव० ५

कलश

एम वीर जिनवर, सयल सुखकर,

गायो अति उलट भरे,

अषाढ उज्ज्वल दगमी दिवसे,

सवत अढार अठोत्तरे,

बीज महिमा एम वर्णव्यो, रही सिद्धपुर,

चोमास ए,

जेह भविक भावे सुणे गावे,

तस घर लील विलास ए ॥१॥

विजनो स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष,

राय राणा प्रणमे, चन्द्र तणी जिहा रेख,

तिहा चन्द्र विमाने, गाश्चता जिनवर जेह,

हु बीज तणे दिन, प्रणमु आणी नेह ॥ १ ॥

अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतळनाश,

अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ

इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण,

हु बीज तणे दिन, प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥

परकाश्यो वीजे, दुविध धर्म भगवन्त,  
 जेम विमल कमल दौय, विपुल नयन विकसत,  
 आगम भति अनुपम, जिहा निश्चय व्यवहार,  
 वीजे सवि कीजे, पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥  
 गज गामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर,  
 चक्केसरो केसर, सरस सुगन्ध शरीर,  
 करजोडी वीजे, हु प्रणमु तस पाय,  
 एम लब्धिविजय कहे, पुरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥

### श्री पंचमोनुं चैत्यवन्दन.

त्रिगढे वेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे,  
 त्रिकरण शु त्रिहु लोकजन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥  
 आराधो भली भातसे, पचमी अजुवाली,  
 ज्ञान आराधन कारणे, एहिज तिथि निहाळी ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे ससार,  
 ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥  
 ज्ञान रहित क्रिया कही, काज कुसुम उपमान,  
 लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान, ॥ ४ ॥  
 ज्ञाना आसोआसमे, करे कर्मनो छेह,  
 पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥  
 देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,  
 ज्ञान तणो महिमा घणो, अज्ञ पाचमे भगवान ॥ ६ ॥

पञ्च मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टि,  
 पच वर्ष पंच मासनी, पचमी करो शुभ द्रष्टि ॥ ७ ।  
 एकावन ही पचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो  
 उजमणुं करो भावशु, टालो भव फेरो ॥ ८ ॥  
 ईम पचमी आराहिण ए, आणो भाव अपार.  
 वरदत्त गुणमजरी परे, रङ्गविजय ल्हो सार ॥ ९ ॥

### श्री ज्ञान पंचमीनुं स्तवन

प्रणमो पचमी दिवसे ज्ञानने, गाजे जगमा जेह, सुज्ञानी ॥  
 शुभ उपयोगे क्षणमां निर्जरे मिथ्या संचित खेह, सुज्ञानी  
 ॥ १ ॥ प्रण० ।  
 सतपदादिक नवद्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश, सु०  
 नय व्यवहारे आवरण क्षय करी अज्ञानी ज्ञान उल्लास,  
 सुज्ञानी, प्रणमो० २  
 ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य, सु०  
 अन्तरमुहूर्त रहे उपयोगथी, ए सर्व प्राणीने नित्य,  
 सुज्ञानी, प्रणमो० ३  
 लब्धि अन्तरमुहूर्त लघुपणे, ठासठ सागर जिदठ, सु०  
 अधिको नरभव बहुविध जीवने, अन्तर कदिये न दिदठ,  
 सुज्ञानी, प्रणमो० ४  
 सप्रति समये एक वे पामता, होय अथवा नवि होय, सु०  
 क्षेत्र पल्योपम भाग असख्यमा, प्रदेग माने बहु जोय,  
 सुज्ञानी, प्रणमो० ५

मतिज्ञान पाभ्या जीव असख्य छे,

कह्या पडिवाई अनन्त, सुजानी,

सर्व आशातन वरजो ज्ञाननी,

विजय लक्ष्मी लहो संत, सुजानी, प्रणमो० ६

श्री पंचमीनी स्तुति.

श्रावण सुदि दिन पचमीए, जन्म्या नेमि जिणद तो,  
श्याम वरण तनु जोभतुं ए, मुख शारद को चन्द तो,  
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवन्त तो,  
अष्ट करम हेले हणी ए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥

अष्टापद पर आदिजिन ए, पहोल्या मुक्ति मझार तो,  
वासुपूज्य चम्पापुरीए, नेमि मुक्ति गिरनार तो,  
पावापुरी नगरीमां बलीए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो,  
समेतशिखर वीस सिद्ध हुआए, गिर बहुं तेहनी आण तो ॥२॥

नेमिनाथ जानी हुवाए, भाखे सार वचन तो,  
जीव दया गुण बेलडीए, कीजे तास जतन तो,  
मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त निवार तो,  
अनन्त तीर्थकर एम कहै ए, परिहरीए परनार तो ॥३॥

गोमेध नामे जक्ष भलोए, देवी श्रीलम्बिका नाम तो,  
शासन सानिध्य जे करे ए, करे वळी धर्मना काम तो,  
तपगच्छ नायक गुणनीलोए, श्रीविजयसेन सूरिराय तो,  
ऋषभदास पाय सेवताए, सफल करो अवतार तो ॥४॥

### શ્રી અષ્ટમીનુ ચૈત્યવદન.

મહાસુદિ આઠમને દિને, વિજયા સુત જાયો,  
 તેમ ફાગણ સુદિ આઠમે, સમવ ચવી આવ્યો ॥૧॥  
 ચૈતર વદની આઠમે, જન્મ્યા ઋષભજિનંદ,  
 દીક્ષા પળ એ દિન લહી, હુઆ પ્રથમ મુનિચદ ॥૨॥  
 માધવ સુદિ આઠમ દિને, આઠ કર્મ કર્યા દૂર,  
 અભિનન્દન ચોથા પ્રભુ, પામ્યા સુખ ભરપૂર ॥૩॥  
 એહિજ આઠમ ડજલી, જન્મ્યા સુમતિજિનંદ,  
 આઠ જાતિ કલશે કરી, ન્હવરાવે સુર ઇન્દ્ર ॥૪॥  
 જન્મ્યા જેઠ વદિ આઠમે, મુનિસુવ્રત સ્વામી,  
 નેમ અષાઢ સુદિ આઠમે, અષ્ટમો ગતિ પામી ॥૫॥  
 શ્રાવણ વદની આઠમે, નમિ જન્મ્યા જગભાણ,  
 તેમ શ્રાવણ સુદિ આઠમે, પાસજીનુ નિર્વાણ ॥૬॥  
 ભાદરવા વદિ આઠમદિને, ચવિયા સ્વામી સુપાસ,  
 જિન ઉત્તમ પદ પદ્મને સેવ્યાથી શિવવાસ ॥૭॥

### શ્રી આઠમનું સ્તવન.

#### ઢાલ પહેલી

શ્રી રાજગૃહી શુભ ઠામ, અધિક દીવાજે રે,  
 વિચરન્તા વીરજિનંદ, અતિગય છાજે રે.  
 ચોત્રીઝ અને પાત્રીઝ, વાણી ગુણ ગાજે રે,  
 પાડધર્યા વવામણી જાય, શ્રેણિક આવે રે ૧



तिहा चोसठ सुरपति, आवीनेत्रिगडु वनावे रे,  
 तेमा बेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे,  
 सुरनर ने तिर्यैच, निज निज भाषा रे,  
 तिहा समजीने भवतीर, पामे सुख खासारे २  
 तिहा इन्द्रभूति गणधार, श्री गुरुवीरने रे  
 पूछे अष्टमीनो महिमाय, “कहो प्रभु अमने रे,  
 तव भाखे वीरजिणंद “सुणो सहु प्राणी ! रे,  
 आठम दिन जिनना कल्याण, धरो चित्त आणी रे.” २

### ढाल-बीजी

श्री ऋषभनु जन्म कल्याण रे,  
 वली चारित्र लह्यु भळे वान रे,  
 त्रीजा सभवनु च्यवन कल्याण—  
 भविजन ! अष्टमी तिथि सेवो रे  
 ए छे शिववधू वरवानो मेवो—भविजन० १  
 श्री अजित सुमति नमि जन्म्या रे,  
 अभिनन्दन शिवपद पाम्या रे,  
 जिन सातमा च्यवन पाम्या—भविजन० २  
 बीशमा मुनि सुव्रत स्वामी रे, तेनो जन्म होय गुण धामी रे—  
 बावीसमा शिव विशरामी—भविजन० ३  
 पारस जिन मोक्ष महता रे, ईत्यादिक जिन गुणवता रे—  
 कल्याणक मोक्ष महता—भविजन० ४

श्रीवीर जिणदनी वाणी रे, निसुणी समज्या भवि प्राणी रे,  
 आठम दिन अति गुणखाणी-भविजन० ५  
 आठ कर्म ते दूर पलाय रे, एथी अडसिद्धि अडबुद्धि थाय रे,  
 ते कारण सेवो गुण लाय-भविजन० ६  
 श्री उदय सागर सूरि राया रे, गुरु जिण्य विवेके व्याया रे,  
 तस न्यायसागर जय व्याया-भविजन० ७

### श्री अष्टमीनी स्तुति.

चोवीशे जिनवर हु प्रणसु नित्यमेव,  
 आठमदिन करीए, चदप्रभुनी सेव,  
 मूर्ति मन मोहन, जाणे पूनमचद,  
 दोठे दुख जाए, पामे परमानन्द ॥१॥  
 मळी चोसठ इन्द्रो, पूजे प्रभुजीना पाय,  
 इन्द्राणी अपच्छरा, कर जोडी गुण गाय,  
 नंदीश्वर द्वीपे, मळी सुरवरनी कोट,  
 अट्ठाई महोत्सव, करता होडाहोड ॥२॥  
 शत्रुंजय शिखरे, जाणी लाभ अपार  
 चोमासु रखा, गणधर मुनि परिवार,  
 भवियणने तारे देई धर्म उपदेश,  
 दूध साकरथी पण वाणी अधिक विशेष ॥३॥  
 पोसह पडिक्कमणु, करीए व्रत पञ्चक्खाण,  
 आठम दिन करीए, अष्ट कर्मनी हाण,  
 अष्टमगल याये, दिन दिन क्रोड कल्याण,  
 एम सुखसूरि कहे जीवित जन्म प्रमाण ॥४॥

### श्री एकादशीनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो,  
 सद्य चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो ॥१॥  
 माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ,  
 इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज ॥२॥  
 ऐकादशसे चउगुणो, तेहनो परिवार,  
 वेद अर्थ अवळो करे, मन अभिमान अपार ॥३॥  
 जीवादिक सगय हरीए, एकादश गणधार,  
 वीरे थाप्या वदीए, जिनशासन जयकार ॥४॥  
 मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी  
 ऋषभ अजित मुमति नमी, मल्लि घनघाती विनाशी ॥५॥  
 पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी,  
 एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघळी जोटी ॥६॥  
 दशक्षेत्रे त्रिहु काळना, त्रणसे कल्याण,  
 वर्ष अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ॥७॥  
 अगियार अ ग लखावीए, एकादश पाठा,  
 पुजणी ठवणी वीटणा, मशी कागळ काठा ॥८॥  
 अगीयार अव्रत छडवाए, वहो पडिमा अगीआर,  
 क्षमाविजय जिनशासने, सफळ करो अवतार ॥९॥

### श्री मौन-एकादशीनुं स्तवन.

पंचम सुरलोकना वासी रे, नव लोकातिक सुविलासी रे.

करे विनति गुणनी राशी, मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे,  
 भवि जीवने शिवसुख दीजे, मल्लि० ए आकणी० ॥१॥  
 तुमे करुणा रस भडार रे, पाम्या छे भवजल पार रे,  
 सेवकनो करो उद्धार, मल्लि० ॥ २ ॥ भवि० ॥  
 प्रभु दान सवत्सरी आपे रे, जगना दारिद्र दु ख कापे रे,  
 भव्यत्व पणे तस थापे, ॥ म० ॥ भ० ॥ ३ ॥  
 सुरपति सघळा मलि आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे,  
 प्रभु चरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ४ ॥  
 तीर्थोदक कुंभ लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे,  
 सुरपति भक्ते नवरावे ॥ मल्लि ॥ भ० ॥ ५ ॥  
 वस्त्राभरणे गणगारे रे, फूल माला हृदय पर धारे रे  
 दु खडा इन्द्राणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ६ ॥  
 मल्या सुरनर कोडी कोडी रे, प्रभु आगे रखा कर जोडी रे,  
 करे भक्ति युक्ति मद मोडी, ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ७ ॥  
 मृगशिर शुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे,  
 वर्या संयम वधु लटकाळी ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ८ ॥  
 दीक्षा कल्याणक एह रे, गाता दु ख न रहे रेह रे,  
 लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ९ ॥

### श्री एकादशीनी स्तुति.

एकादशी अतिरूअडी गोविंद पूछे नेम,  
 कीण कारण ए पर्व महोदु, कहो मुज शु तेम,  
 जिनवर कल्याणक अति भला, एकसो ने पचास,  
 तिण कारण ए पर्व महोदु, करो मौन उपवास ॥१॥

अगीयार श्रावकतणी पडिमा, कही ते जिनवरदेव,  
एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम रेव,  
चौवीस जिनवर सयल सुखरुग, जेसा सुरतरु चग,  
जेम गग निर्मळ नीर जेवुं, करो जिनसु रग ॥२॥

अगीआर अग लखावीए, अगीयार पाठा सार,  
अगीआर कवली बीटणा, ठवणी पुजणी सार,  
चावखी चगी विविधरगी, शास्त्रतणे अनुसार,  
एकादशी एम उजवो, जेम पामीए भवपार ॥ ३ ॥

वर कमल नयणी, कमल वयणी, कमल सुकोमल काय,  
भुज दड अखड चण्ड जेहने, समरता सुख थाय,  
एकादशी एम मन वमी, गणी हर्ष पडित शिष्य,  
शासन देवी विघ्न निवारो, सघतणा निशदिश ॥ ४ ॥

### श्री वीशस्थानक तपनु चैत्यवंदन

पहेले पद अरिहंत नमु, बीजे सर्व सिद्ध,  
त्रोजे प्रवचन मन वरो, आचार्य सिद्ध ॥१॥  
नमो थेराण पाचमे, पाठक पद छे,  
नमो लोए सव्वसाहण, जे छे गुण गरिट्ठे ॥२॥  
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भावो,  
विनय करो गुणवंतनो, चारित्र पद ध्यावो ॥३॥  
नमो वंभवय धारीण, तेरमे क्रिया जाण,  
नमो तवस्स चौदमे, गौयमं नमो जिणाणं ॥४॥

संयम ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तित्थस्स जाणी,  
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुखखाणी ॥५॥

### श्री वीश स्थानकनुं स्तवन.

हारे मारे प्रणमु सरस्वती मागु वचन विलास जो,  
वीशेरे तप स्थानक महिमा गाईशु रे लोल,  
हारे मारे प्रथम अरिहत पद, लोगस्स चौवीश जो,  
बीजे रे सिद्ध स्थानक पन्नर भावशु रे लोल १  
हारे मारे त्रीजे पवयणशु गणजो लोगस्स सातजो,  
चउथे रे आयरियाणं छत्रीजनो सही रे लोल,  
हारे मारे थेराण पद पाचमे दश उदार जो,  
छट्ठे रे उवज्झायाण पचवीजनो सही रे लोल २  
हारे मारे सातमे नमो लोए सम्मसाहू सत्तावीश जो,  
आठमे नमो नाणस्स पचे भावशु रे लोल,  
हारे मारे नवमे दरिसण अडसठ मनने उदार जो,  
दशमे नमो विणयस्स दश वखाणीये रे लोल ३  
हारे मारे अगीयारमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो  
बारमे नमो बभस्स नव गुणे सही रे लोल,  
हारे मारे किगियाण पद तेरमे वळी पचवीश जो,  
चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सही रे लोल ४  
हारे मारे पदरमे गोयमस्स अष्टावीश जो,  
नमो जिणाण चउव्वीश गणशु सोळमे रे लोल;-

हारे मारे सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो,

नाणस्सनो पद गणशु एकावन अटारमे रे लोल ५

हारे मारे ओगणीशमे नमो सुअस्स वीश पिस्तालीशजो,

वीसमे नमो तित्थस्स वीश भावशु रे लोल,

हारे मारे तपनो महिमा चारणे उपर वीश जो,

षट् मासे एक ओळी पूरी कीजीए रे लोल ६

हारे मारे तप करता वळी गणीए दोय हजार जो,

नवकारवाळी वीशे स्थानक भावशु रे लोल,

हारे मारे प्रभावना सध साहम्मि वत्सल सार जो,

उजमणा विधि कीजीये विनय लीजीये रे लोल ७

हारे मारे तपनो महिमा कहै श्री वीर जिनराय जो

विस्तार ईम संबध गोयम स्वामीने रे लोल,

हारे मारे तप करता वळी तीर्थकर पद होय जो,

देव गुरु ईम क्रांति स्तवन सोहामणो रे लोल, ८

श्री वीश-स्थानक तपनी स्तुति ।

पूछे गौतम वीर जिणदा, समवसरण वेठा सुखकदा,

पूजित अमर सूदिदा,

केम निकाचे पद जिन चंदा, किणविध तप करता भवफदा,

टाले दुरितह ददा,

तव भाखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति नन्दा,

निर्मल तप अरविंदा,

વીજ સ્થાનક તપ કરતા મહિદા, જેમ તારક સમુદાઈ ચન્દા,  
તેમ એ સવિ તપ હદા ૦ ॥૧॥

પ્રથમ પદે અરહત નમો જે, વીજે સિદ્ધ પવયણ ત્રીજે,  
આચારજ થેર ઠવીજે,

ઉપાધ્યાય ને સાધુ ગ્રહી જે, નાળદસણ પદ વિનય વહી જે,  
અગીઆરમે ચારિત્ર લીજે,

વમ્બવ ધારિણ ગણી જે, કિરિયાણ તવસ્સ કરી જે,  
ગોયમ જિણાણ લહીજે,

ચારિત્રનાણ સુઅતિથ્થસ્સ કીજે, ત્રીજે મવ તપ કરત સુળી જે,  
એ સવિ જિન તપ લીજે ॥૨॥

આદિ નમો પદ સઘલે વીજ, વાર પન્નર વાર વલી છત્રીજ,  
દસ પળ વીસ સગવીસ,

પાંચ ને સહસઠ તેર ગણીજ, સત્તર નવ કિરિયા પળ વીજ,  
વાર અટ્ઠાવીજ ચોવીજ,

સિત્તેર હગવન પીસ્તાલીજ, પાંચ લોગસ્સ કાઠસ્સગ રહીજ,  
નોંકારવાલી વીજ,

એક એક પદે ઉપવાસ વીજ માસ ય્વે એક ઓલી કરીજ,  
એમ સિદ્ધાત જગીજ ॥૩॥

ગત્તિ એકાસણું તિવિહાર, છટ્ઠ અટ્ઠમ માસસ્વમણ ઉદાર,  
પઢિવ્વકમળા દોય વાર,

હત્યાદિક વિધિ ગુરુગમ ધાર એક પદ આરાધન ભવપાર,  
ઉજમણું વિધિ પ્રકાર



मातंग जक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धार्ड शासन रखवाल,  
सघ विघन अपहार,  
खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आवार,  
वीरविजय जय कार ॥४॥

### श्री पर्युषणनुं चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्प विहार,  
चार मासान्तर थिर रहे, एहिज अर्थ उदार ॥१॥  
अपाड सुदि चौदश थकी, सवत्सरी पचास  
मुनिवर दिन सित्तरमे, पडिक्कमता चौमास ॥२॥  
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,  
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, साभले थड एकतान ॥३॥  
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विगाल,  
प्राये अष्ट भवातरं, वरिये गिव वरमाल ॥४॥  
दर्पणश्री निज रूपनो, जुवे सुदष्टि रूप,  
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि नूप ॥५॥  
आत्मस्वरूप विलोकताए, प्रगटयो मित्र स्वभाव,  
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥६॥  
नव वखाण पूजी सुणे, शुक्ल चतुर्थी सीमा,  
पंचमी दिन वाचे सुणे, होय विरोधी नियमा ॥७॥  
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चोथे,  
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहानाथे ॥८॥

वीण स्थानक तप करता महिदा, जेम तारक समुदाई चन्दा,  
 तेम ए सवि तप इदा० ॥१॥  
 प्रथम पदे अरहत नमो जे, वीजे सिद्ध पवयण व्रीजे,  
 आचारज थेर ठवीजे,  
 उपाव्याय ने साधु ग्रही जे, नाणदसण पद विनय वही जे,  
 अगीआरमे चारित्र लीजे,  
 बभवय धारिण गणी जे, किरियाण तवस्स करी जे,  
 गोयम जिणाण लहीजे,  
 चारित्रनाण सुअतित्यस्स कीजे, व्रीजे भव तप करत सुणी जे,  
 ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥  
 आदि नमो पद सघले वीण, बार पत्तर बार वली छत्रीण,  
 दस पण बीस सगवीस,  
 पाच ने सडसठ तेर गणीण, सत्तर नव किरिया पण वीण,  
 बार अटठावीण चोवीण,  
 सित्तेर इगवन पीस्तालीण, पाच लोगस्स काउस्सग रहीण,  
 नौकारवाली वीण,  
 एक एक पदे उपवास वीण, मास खटे एक ओली करीण,  
 एम सिद्धात जगीण ॥३॥  
 शक्ति एकासणुं तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार,  
 पडिक्कमणा दोय बार,  
 इत्यादिक विधि गुरुगम धार एक पद आराधन भवपार,  
 उजमणु विधि प्रकार

मातंग जक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाई शासन रखवाळ,  
सघ विघन अपहार,  
खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आवार,  
वीरविजय जय कार ॥४॥

### श्री पर्युषणनुं चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्प विहार,  
चार मासान्तर ग्रि रहै, एहिज अर्थ उदार ॥१॥  
अषाढ सुदि चौदश थकी, सवत्सरी पचास  
मुनिवर दिन सित्तरमे, पडिक्कमता चौमास ॥२॥  
श्रावक ण समता धरी, करै गुरुना बहुमान,  
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, साभळे यड एकतान ॥३॥  
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विजाल,  
प्राये अष्ट भवातरै, वरिये शिव वग्माल ॥४॥  
दर्पणथी निज रूपनो, जुवे मुदष्टि रूप,  
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥५॥  
आत्मस्वरूप विलोकताए, प्रगटयो मित्र स्वभाव,  
राय उदायी स्वामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥६॥  
नव बखाण पूजी सुणे, शुक्ल चतुर्थी सीमा,  
पंचमी दिन वाचे सुणे, होय विरोधी नियमा ॥७॥  
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चोथे,  
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहानाथे ॥८॥

श्रुतिकेवली वयणा सुणी लही मानव अवतार,  
श्री शुभवीरने शासने, पाग्या जयजयकार ॥९॥

### श्री नवपदजीनुं चैत्यवंदन.

श्री सिद्धचक्र आराधीये, आसौ चैतर मास,  
नवदिन नव आयबिलकरी, कीजे ओळी खास ॥१॥

केसर चन्दन घसी घणा, कस्तुरी वरास,  
जुगते जिनवर पूजीया, मयणा ने श्रीपाळ ॥२॥

पूजा अष्ट प्रकारनी, देववदन त्रण काळ,  
मत्र जपो त्रण काळने, गुणगु दोय हजार ॥३॥

कष्ट टल्यु उबर तणु, जपतां नवपद ध्यान,  
श्री श्रीपाल नरिद थया, वाढ्यो वमणो वान ॥४॥

सातसो कोढिया सुख लह्या, निज आवास,  
पुण्य मुक्ति वधू वर्या, पाग्या लील विलास ॥५॥

### श्री सिद्धचक्र स्तुति.

जिन शासन वाळित, पूरण देव रसाल,  
भावे भवि भणीये, सिद्धचक्र गुणमाल,  
त्रिहु काळे एहनी, पूजा करे उजमाल,  
ते अमर पद सुख पामे सुविशाल ॥१॥

अरिहत सिद्ध वदो, आचारज उवज्झाय,  
मुनि-दरिसण-नाण, चरण-तप ए समुदाय,  
ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय,  
ए ध्याने भविना, भव कोटि दुख जाय ॥२॥

आसो चैतरनी, सुढ सातमशी सार,  
 पूनम लगे कीजे, नव आयविल निरधार,  
 दोय सहस गणेरु पद सम साटाचार,  
 एकाशी आयविल, तप आगम अनुसार ॥३॥

श्री सिद्धचक्र सेवक, श्री विमलेसर देव,  
 श्रीपालतणी परे, सुख पूरे स्वयमेव,  
 दुख दोहग नावे, जे करे ऐहनी सेव,  
 श्री सुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यमेव ॥४॥

### दिवाळीनुं-चैत्यवंदन

मगध देश पावापुरी, श्री वीर प्रभु पधार्या,  
 सोळ पहोर देई देशना, भविक जीवने तार्या ॥१॥

अढार भेदे भावे भणी, अमृत जेवी वाणी,  
 देशना देता रयणीए परण्या शिव राणी ॥२॥

ऊठो राय दीवा करो, अजुआळो दिन एह,  
 आसो मासे कार्तकी, दिवाळी दिन एह ॥३॥

मेरु थकी इन्द्र आवीया, लेई हाथमा दीवो,  
 मेरैया । ते कारणे, लोक कहे चिरजीवो ॥४॥

कल्याणक कर्या जेणे, गुणणु जे गणशे,  
 जाप जपे जिनराजनुं, सौ पुस्तक नमशे ॥५॥

पहेले दिन गौतम नमु, पाम्या केवळज्ञान,  
 चार सहस गुणणु गणे, तेथी कोड कल्याण. ॥६॥

सुर नर वदु निर्मळा, गौतमने आपो,

आचारज पट्टी थाय, सौ साखे स्थापो ॥७॥

जुहार पटोरा ने कारणे, लोकातिक व्यवहार;

वेने भाई जमाडीयो, नदिवर्धन सार ॥८॥

भावड बीज तिहा थई, वीरे जाण्यु सार;

नयविमल सुख सपदा, मेरुशिखर उवज्झाय ॥९॥

श्री दिवाळीनी स्तुति.

शासन नायक श्री महावीर. सात हाथ हम वरण शरीर,  
हरि लछन जिन धीर;

जेहने गौतमस्वामी वजीर, मदन सुभट गजन वडवीर,  
सायर परे गभीर;

कार्तिक अमावास्ये निवांण, द्रव्य उद्योत करे नृप जाण,  
दीपक त्रेणी मडाण;

दिवाली प्रगट्यु अभिधान, पश्चिमरजनीए गौतम जान;  
वर्धमान वर ध्यान ॥१॥

चउवीस ए जिनवर सुखकार, पर्व दिवाळी अति मनोहार,  
सकल पर्व णिणमार,

मेरैया करे भवि अविकार, महावीर सर्वज्ञाय पढ सार,  
जपीये दोय हजार;

मज्झिम रजनी देव वदीजे, महावीर पारगताय नमीजे,  
तस महस दोय गुणीजे,

वळी गौतम सर्वज्ञाय नमीजे, पर्व दिवाळी एणिपेरे कीजे,

अग अगीयार उपागज वार, पयन्ना दस छ छेद मूल चार,  
नदो अनुयोग द्वार,  
छ लाख ने छत्रीस हजार, चौद पूरव विरचे गणधार,  
त्रिपदीना विस्तार,  
वीर पचम कल्याणक जेह, कल्पसूत्रमाहि भात्यु तेह,  
दीपोत्सव गुण गेह,  
उपवास छट्ठ अष्टम करे जेह, सहस लाख कोटी,  
फल लहे तेह, श्री जिनवाणी एह ॥३॥

वीर निर्वाण समय मुर जाणी, आवे इन्द्र अने इन्द्राणी,  
भाव अधिक मन आणी,  
हाथ ग्रही दीवी निशि जाणी, मेरैया मुख बोले वाणी,  
दिवाली कहेवाणी,  
एणी पेरे दीपोत्सव कर ओ प्राणी, सकल सुमगल  
लागण जाणी, लाभविमल गुणखाणी,  
वदति रत्नविमल ब्रह्माणि, कमल कमडल बीणा पाणि,  
बो सरस्वती वर वाणी ॥४॥

श्री सीमधर जिन स्तुति.

सीमधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,  
अरिहत सकळनी, भाव वरी करु सेव,  
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,  
जयवती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥१॥

श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन.

श्री रे सिद्धाचल भेटवा, मुज मन मन अधिक उमाहो,

ऋषभ जिणद पूजा करी, लीजे भव तणो लाहो श्रीरे० १  
 मणिमय मुरति श्री ऋषभनी, निपाई अभिराम,  
 भवन कराव्या कनकना, राख्या भरते नाम श्रीरे० २  
 नेम विना त्रेवोज प्रभु, आव्या सिद्धक्षेत्र जाणी  
 ऋजुजा समो तीरथ नही, बोल्या सीमवर वाणी श्रीरे० ३  
 पूर्व नवाणुं समोसर्या, स्वामी श्री ऋषभ जिणद,  
 राम पाडव मुगते गया, पाम्या परमानद श्रीरे० ४  
 पुरव पुन्य पसाउले, पुटरिकगिरि पायो,  
 कान्तिविजय हरखे करी, श्री सिद्धाचल गायो श्रीरे० ५

### श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति (थोथ)

श्री सिद्धाचल मडण, ऋषभ जिणंद दयाल,  
 नडुदेवानंदन वदन करु वणकाळ,  
 ए तीरथ जाणी, पुरव नवाणु वार,  
 आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥१॥

### श्री आपस्वभावनी सज्झाय.

आप स्वभावमा रे, अवधु सदा मगनमे रहेना ॥

जगत जीव हे करमाधिना, अचरिज कल्लुअ न लीना ॥ आप० ॥  
 ॥ १ ॥ तु नहीं केरा, कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा० ॥  
 तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सवे अनंरा । आप० ॥२॥  
 वपु विनाशी तु अविनाशी, अव हे इनकु विलासी ॥ वपु सग जव  
 दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥३॥ राग ने रीसा



दोय खचीसा, ए तुम दुखका दीसा, जव तुम उनकु दूर  
करीसा, तव तुम जगका इसा ॥ आप० ॥ ४ ॥ पारकी  
आशा सदा निगशा, ए हे जग जन पासा ॥ वो काटनकुं  
करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा ॥ आप० ॥ ५ ॥  
कवीहीक कार्जा कवहीक पार्जा कवहीक हुआ अपभ्राजी ॥  
कवहीक जगमे कीर्ति गाजी, सभ पुदगलर्का वाजा ॥ आप०  
॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग न समताधारी, ज्ञान चान मनोहारी ॥  
कर्म कलककु दूर निवारी, जीव बरे जिवनारी ॥ आप० ॥ ७ ॥

श्री शीयलनी सज्जाय,

(वन्य धन्य ए दिन माहरो-ए देखी)

शीयल समु व्रत को नहि, श्रीजिनवर एम भाखेर, सुख  
आपे जे शाश्वता

दुर्गति पडता राखे रे. शी० १

व्रत पञ्चखण विना जुओ, नव नारद जेह रे,  
एकज शीयल तणे बळे,

गया मुगतिमा तेह र शी० २

साधु अने श्रावक तणा, व्रत छे सुखदायी रे,  
शीयल विना व्रत जाणजो,

कुसका सम भाई रे. शी० ३

तरुवर मूळ विना जीस्थो, गुण विण लाल कमान रे,  
शीयल विना व्रत एहवु,

कहे वीर भगवान रे. शी० ४

नव बाढे करी निर्मळु, पहेलु जीयलज धरजो रे,  
उदयरतन कहे ते पछी,

व्रतनो खप करजो रे ५

श्री वैराग्यनी सज्जाय.

ऊचा मन्दिर माळीया, सोट वालोने नृतो,  
काढो काढो एने सहु कहे,

जाणे जनम्भोज नहोतो १

एकरे दिवस एवो आवशे. मन सबळोजी साले,  
मंत्री मळ्या सवि कारमा

तेनु काई न चाले० एक रे० २

साव सोनाना साकला, पहेरण नवा बाधा,  
धोळु रे वस्त्र एना कर्मनु,

ते तो शोधवा लाग्या एक रे० ३

चरु कढाड्या अति घणा, बीजानु नहि लेखु,  
खोखरी हाडली एना कर्मनी,

ते तो आगळ देखु एक रे० ४

केना छोरु ने केना वाछरु, केना माय ने बाप,  
अन्तेकाळे जावु जीवने एकलु,

साथे पुण्य ने पाप एक रे० ५

सगी रे नागी एनी कामिनी, उभी डगमग जुवे,  
तेनु पण काई चाले नहि,

वेठी वुसके रवे एक रे० ६

वहाला ते वहाला शु रुगे वहाला वोळावी वळजे,  
वहाला ते वनना लाकडा

ते तो साये ज वळजे एक रे० ७

नहि त्रापो नहि तुवडा, नथी तरवानो भारो,  
उदयरतन प्रभु टम भणे, मने पार उतारी एक रे० ८

संसारना खोटा सगपणनी सज्झाय.

(चेत तो चेतावु तने रे, पामर प्राणी—ए देगी)

सगु तारु कोण साचु रे, ससारीयामा—सगु०  
पापनो तो नाख्यो पायो, धरममा तुं नहि धायो,  
डाह्यो थडने तु दबायो रे ससा० १

कूडु कूडु हेतज कीधु, तेने साचुं मानी लोधु,  
अन्त काले दु ख दीधु रे ससा० २

विसवासे व्हाला कीधा, पीयाला झेरना पीधा,  
प्रभुने विसारी दीधा रे ससा० ३

मन गमतामा महाल्यो, चोरने मारग चाल्यो,  
पापीओनो सग झाल्यो रे० ससा० ४

घरने धंधे घेरी लीवो, कामिनीये वज कीवो,  
ऋषभदास कहे दगो दीवो रे० ससा० ५

## શ્રી રત્નાકર પચ્ચીસી.

મદિર ઝો મુક્તિતળી માગલ્યક્રીડાના પ્રમુ,  
 ને દ્વ નર ને દેવના સેવા કરે તારો વિમુ  
 સર્વજ છો સ્વામી વઢી ગિરદાર અતિગય સર્વના,  
 ઘણુ જીવ તુ ઘણુ જીવ તુ મહાર જ્ઞાનકલાતણા. ૧

ત્રણ જગતના આવાર ને અવતાર હે કરુણાતણા,  
 વઢી વૈદ્ય હે દુર્વાર આ સસારના દુ સ્વોતણા,  
 વીતરાગ વલ્લભ વિશ્વના તુજ પાસ અરજી ઉચ્ચરુ ,  
 જાણો છતા પળ કહી અને હુ હૃદય આ ચાલ્યો કરુ ૨

શુ વાઢકો માવાપ પાસે વાલક્રીડા નવ કરે,  
 ને મુખમાથી જેમ આવે તેમ શુ નવ ઉચ્ચરે ?  
 તેમજ તમારી પાસ તારક આજ બોલાભાવથી,  
 જેવુ વન્યું તેવુ કહું તેમા કશુ સ્વોટુ નથી ૩

મે દાન તો દોષુ નહીં ને ગીયલ પળ પાઠ્યુ નહીં,  
 તપથી દમી કાયા નહી શુભ માવ પળ ભાવ્યો નહીં  
 એ ચાર મેદે ધર્મમાથી કાઢ પળ પ્રમુ નવ કર્યુ,  
 મ્હારુ ભ્રમણ ભવસાગરે નિષ્ફલ ગયુ નિષ્ફલ ગયુ ૪

હુ ક્રોધ અગ્રિથી વલ્યો વઢી લોભ મર્પ હચ્યો મને,  
 ગલ્યો માનરૂપી અજગરે હુ કેમ કરી વ્યાહ તને ?  
 મન મારુ માયાજાઢમા મોહન ' મહા મુંઝાય છે,  
 ચઢી ચાર ચોગે હાથમા ચેતન ઘણો ચગડાય છે ૫

मे परभवे के आ भव पण हित काट कर्यु नहीं,  
तेथी करी ससाग्मा सुख अल्प पण पाम्यो नहीं,  
जन्मो अमारा जिनर्जा ' भव पूर्ण करवाने यथा,  
आवेल बाजी हाथमा अज्ञानयी हारी गया ६

अमृत झरे तुम मुखरूपी चद्रथी तो पण प्रभु,  
भीजाय नहीं मुझ मन अररे ' शु करु हु तो विभु,  
पत्थर थकी पण मारु मन खरे क्यायी द्रवे '  
मरकट समा आ मनयकी हु तो प्रभु हाथो हवे ७

भनतां महा भवसागरे पाम्यो पसाये आपना,  
जे ज्ञान दर्शन चरणरूपी रत्नत्रय दुष्कर घणा,  
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु कहुं छु खरु,  
कोनी कने किरतार आ पोकार हुं जईने करु ' ८

ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यना रगो धर्या,  
ने धर्मेना उपदेश रजन लोकने करवा कर्या,  
विद्या भण्यो हु बाद माटे केटली कथनी कहु ?  
साधु थईने बहारथी, दामिक अदरथी रहु ९

मे मुखने मेलुं कर्यु दोषो पराया गाडने,  
ने नेत्रने निदित कर्या परनारीमा लपटाडने,  
वली चित्तने दोषित कर्यु चिंती नठारु परतणु,  
हे नाथ मारु शु थजे चालाक थई चूक्यो घणुं १०

करे कालजाने कतल पीडा कामनी बीहामणी,  
ए विषयमा बनी अंध हु विडवना पाभ्यो घणी,  
ते पण प्रकाशुं आज लावी लाज आपतणी कने,  
जाणो सहु तेथी कहु कर माफ मारा वाकने ११

नवकर मत्र विनाश कीधो अन्य मत्रो जाणीने  
कुशालना वाक्यो वडे हणी आगमोनो वाणीने,  
कुदेवनी संगतथकी कर्मो नकामा आचर्या,  
मतिभ्रमथकी रत्नो गुमावी काच कटका मे ग्रह्या १२

आवेल दष्टि मार्गमा मूकी महावीर आपने,  
मे मूढधीये हृदयमा व्याया मदनना चापने,  
नेत्रवाणो ने पयोवर नामि ने सुन्दर कटी,  
गणगार सुन्दरीओतणा छटकेल थई जोया अति १३

मृगनयनी सम नारीतणा मुखचन्द्र नीरलवावती,  
मुज मन विषे जे रग लाग्यो अल्प पण गूढो अति,  
ते श्रुतरूप समुद्रमा धोया छता जातो नथी,  
तेनु कहो कारण तमे वचुं केम हु आ पापथी १४

सुन्दर नथी आ अरीर के समुदाय गुणतणो नथी,  
उत्तम विलास कलातणी देदीप्यमान प्रभा नथी,  
प्रसुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अकड फरु,  
चोपाट चार गतितणी ससारमा खेल्या करु १५

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पापबुद्धि नव घट,  
 आज्ञा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे,  
 औषध विषे करुं यत्न पण हु वर्मन तो नव गणु,  
 बनो मोहमा मस्तान हु पाया विनाना घर चणु १६  
 आत्मा नथी परभव नथी बळा पुण्य पाप कशु नथी,  
 मिथ्यात्वीनी कटु वाणी मे घरी कान पीधी स्वादथी,  
 रविसम हता ज्ञाने करी प्रभु आपथी तो पण अरे,  
 टीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खरे. १७  
 मे चित्तथी नहीं देवनी के पात्रनी पूजा चही,  
 ने श्रावको के साधुओनो वर्म पण पाळ्यो नहीं,  
 पाम्यो प्रभु नरभव वता रणमा रड्या जेबु श्रयुं,  
 धोबीतणा कुत्तासमु मम जीवन सहु एळे गशु. १८  
 हु कामधेनु कल्पतरु चितामणिना प्यारमा,  
 खोटा छता शख्यो घणु बनी लुब्ध आ ससारमा,  
 जे प्रगट सुख देनार त्हारो धर्म ते मेव्यो नहीं,  
 मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाश कर करुणा कई १९  
 मे भाग सारा चित्तव्या ते रोग सम चित्त्या नहीं,  
 आगमन इच्छु धनतणु पण मृत्युने प्रीछु नहीं,  
 नहीं चित्तव्यु मे नर्क कारागृह सभी छे नारीओ,  
 मयुर्विदुनी आज्ञामही भय मात्र हु भूली गयो २०  
 हु शुद्ध आचारोवडे साधु-हृदयमां नव रह्यो,  
 करी काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्यो,

करे कालजाने कतल पीडा कामनी ब्रीहामणी,  
ए विषयमा बनी अंध हु विडवना पाम्यो वणी,  
ते पण प्रकाश्यु आज लावी लाज आपतणी कने,  
जाणो सहु तेथी कहु कर माफ मारा वाकने ११

नवकर मत्र विनाज कीधो अन्य मत्रो जाणीने,  
कुशाखना वाक्यो बडे हणी आगमोनो वाणीने,  
कुदेवनी संगतथकी कर्मो नकामा आचर्या,  
मतिभ्रमयकी रत्नो गुमावी काच कटका मे ग्रह्या १२

आवेल दृष्टि मार्गमा सूकी महावीर आपने,  
मे मूढधीये हृदयमा व्याया मदनना चापने,  
नेत्रवाणो ने पयोवर नामि ने सुन्दर कटी,  
जणगार सुन्दरीओतणा छटकेल थर्ड जोया अति १३

मृगनयनी सम नारीतणा मुखचन्द्र नीरस्तवावती,  
मुज मन विपे जे रग लाग्यो अत्प पण गूढो अति,  
ते श्रुतरूप समुद्रमा धोया छता जातो नथी,  
तेनु कहो कारण तमे वचुं केम हु आ पापयी ? १४

सुन्दर नथी आ गरीर के समुदाय गुणतणो नथी,  
उत्तम विलास कलातणी देदीप्यमान प्रभा नथी,  
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरु,  
चोपाट चार गतितणी ससारमा खेल्था करु १५



आयुष्य घटतु जाय तो पण पापबुद्धि नव घटे,  
 आत्मा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे,  
 औषध विषे करुं यत्न पण हु वर्मन तो नव गणु ,  
 वनो मोहमा मस्तान हु पाया विनाना घर चणु १६  
 आत्मा नथी परभव नथो बळा पुण्य पाप कशु नथी,  
 मिथ्यात्वीनी कटु वाणी मे धरी कान पीधी स्वाढथी,  
 रविसम हता ज्ञाने करी प्रभु आपथी तो पण अरे,  
 दीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खगे. १७  
 मे चित्तथी नही देवनी के पात्रनी पूजा चही,  
 ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पात्रयो नही,  
 पाथ्यो प्रभु नरभव हता रणमा रड्या जेवु थ्युं,  
 धोवीतणा कुत्तासमु मम जीवन सह एळे गतु. १८  
 हु कामधेनु कल्पतरु चितामणिना प्यारमा,  
 खोटा छता झळ्यो घणु बनी लुब्ध आ ससारमा,  
 जे प्रगट सुख देनार त्हागे धर्म ते सेव्यो नही,  
 मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कई १९  
 मे भाग सारा चितव्या ते रोग सम चित्या नही,  
 आगमन इच्छ्यु धनतणु पण मृत्युने प्रीछ्यु नही,  
 नही चितव्यु मे नर्क कारागृह सभी छे नारीओ,  
 मधुविंदुनी आगामहीं भय मात्र हु भूली गयो २०  
 हु शुद्ध आचारोवढे साधु—हृदयमा नव रख्यो,  
 करी काम पर उपकारनां यश पण उपार्जन नव कर्यो,

वर्त्ता तीर्थना उद्धार आदि बोड कार्यो नव कर्या,  
फोगट अरे । आ लक्ष चोराजीतणा फेग फर्या २१

गुरुवाणीमा वैराग्यकेरो रग लाग्यो नही अने,  
दुर्जनतणा वाक्योमही शान्ति मळे क्याथी मने ।  
तरु केम हु संसार आ अध्यात्म तो छे नही जरी,  
तूटेल तळीआनो घडो जलथी भराये केम करी २२

मे परभवे नथी पुण्य कीधु ने नयी करतो हजी,  
तो आवता भवमा कहो क्याथी श्छे हे नाथजी ।  
भूत भावी ने साप्रत त्रणे भव नाथ हु हारो गयो,  
स्वामी त्रिशुंकु जेम हु आकशमा लटको रह्यो २३

अथवा नकामु आप पासे नाथ शु बकवु धणु.  
हे देवताना पूज्य । आ चारित्र मुज पोतातगु,  
जाणो स्वरूप त्रण लोकनु तो माहरु शु मात्र आ,  
ज्या क्रोडनो हिसाब नहीं त्या पाटनी तो बात क्या ? २४

ह्वारथी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु ।  
म्हारथी नहीं अन्य पात्र जगमा जोता जडे हे त्रिभु ।  
मुक्ति मगळ स्थान तोय मुजने, इच्छा न लक्ष्मीतणी,  
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी २५

**अब्भुट्ठिओ**—यह सूत्र बोल कर, हमसे गुरुमहाराजके जो कुछ अपराध हुए हो, उनकी क्षमा मागी जाती है ।

**इरियावहि**—इस सूत्रसे चलते फिरते जो कुछ पाप लगा है वह दूर होता है ।

**तस्सउत्तरी**—‘इरियावहि’ से पाप दूर होता है, किन्तु उस पापकी विशेष शुद्धिके लिये यह सूत्र बोला जाता है ।

**अन्नत्थ**—काउस्सग्गके १६ आगार (अपवाद), व काउस्सग्गमे किस तरह रहे ना—यह सूत्रमे बतलाया है ।

**लोगस्स**—चौबीस जिनेश्वरो के नामोल्लेख पूर्वक उनकी स्तुति की गई है ।

**करेमि भंते**—सामायिक लेनेके बाद पापकार्य, निन्दा, विकथा न करके धर्मका अभ्यास या वाचन करना । पढ़े हुएका स्मरण करना, नवकारवाली—माला फेरनी—इत्यादि कार्य करनेका इस सूत्रमे कहा गया है । ‘सामायिक’ शब्दका मतलब है की ‘जिससे समताका लाभ, बधे हुए प्राचीन कर्मोंका नाश, और नवीन कर्मों की रुकावट हो’—ऐसी ४८ मिनटोंकी ज्ञानीओने बतलाई हुई क्रिया । सामायिकमे कच्चे पानी, कच्ची मट्टी, अग्नि, वायु वनस्पति, स्त्री (पुरुषके लिये स्त्री व स्त्रीके लिये पुरुष) और पैसे को स्पर्श नहीं किया जाता ।

**समाइय—वयजुत्तो**—उस सूत्रसे सामायिककी समाप्ति की जाती है । और जितनी बार सामायिक किया जाय उतनी बार अशुभ कर्मोंका नाश होता है व उतने समयके लिये श्रावक साधुके

जैसा गिना जाता है, एव सामायिक बार बार करना चाहिए यह इस सूत्रमें कहा गया है ।

**जगच्चितामनी**—यह चैत्यवदन गुरुश्री गौतमस्वामीजी जब अष्टापद तीर्थकी यात्राके लिये गये थे उस समय उन्होंने रचा था ।

इसकी पहली गाथामे अष्टापद पर स्थित चौबीस तीर्थकरोकी मूर्तिओको, दूसरीमे महाविदेह आदि क्षेत्रोके तीर्थकरोको केवलजानीओ व साबुओको, तीसरी गाथामे जत्रुज्जय आदि तीर्थोंमें रहे हुए जिनेश्वरोको, चौथीमे तीन लोक स्थित ८५७००२८२ शाश्वत जिनचैत्यो को, और पाचवीं गाथामे १५४२५८३६०८० शाश्वत जिनप्रतिमाओको वदन किया है ।

**जंकिचि**—इस सूत्रसे तीन लोकमे स्थित नाम रूप तीर्थों की जिन प्रतिमाओको वदना की गई है ।

**नमुत्थुणं**—इस सूत्रमे अगिहत भगवानके गुण कहे गये हैं । तीर्थकरोके पाचो कल्याणकोके अवसर पर इन्द्र महाराज इस सूत्रसे भगवानकी स्तुति करते हैं ।

**जावंति चेइआई**—इस सूत्रसे स्वर्ग, मर्त्यलोक व पातालमे रही हुई जिन प्रतिमाओको वन्दन किया है ।

**जावत केवि साहू**—इस सूत्रमे भरत, ऐरवत और महाविदेह क्षेत्रके अंदर रहे हुए साधु—साव्वीजीओको वदन किया है ।

**नमोऽर्हत**—इस सूत्रसे पाचो परमेष्ठिओको नदस्कार होता है । यह सूत्र श्रीमान् सिद्धसेनदिवाकरगूरिजी नामक आचार्य महाराजने बनाया है ।

**उवसगरं**—यह श्री पार्श्वनाथ भगवानका स्तोत्र—स्तवन है। इसके पढ़ने से सर्व विघ्न दूर होते हैं। इसमें भगवान पार्श्वनाथकी स्तुति करके समकितकी याचना की गई है। इसे श्री भद्रबाहु-स्वामीजी नामक आचार्य महाराजने रचा है।

**जय वीरराय**—इस सूत्रसे भगवानके पास उत्तम गुणोंकी याचना की गई है, और दुःखका क्षय, कर्मका क्षय, समाधि मरण व समकित इन चार चीजोंके लिये प्रार्थना की गई है।

**अरिहत चेइआणं**—इस सूत्रसे अरिहत भगवानको नमस्कार किया है, और वदन, पूजन, सत्कार, बोधिबीज (समकित) व मोक्षके हेतु काउत्सर्ग करनेका इसमें कहा गया है।

**कल्लाणकंदं**—इसकी प्रथम गाथामें श्रीऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ पार्श्वनाथ व महावीरस्वामी इन पांच जिनोंकी दूसरीमें सर्व जिनेश्वरोंकी, तीसरी गाथामें ज्ञानकी और चौथी गाथामें सरस्वती देवीकी स्तुति की है।

हर त्रयोदशीके दिन देवासि प्रतिक्रमणमें यह स्तुति ही बोली जाती है।

**ससारदावा**—इस सूत्रकी प्रथम गाथामें भगवान महावीर-स्वामी और दूसरी, तीसरी चौथी गाथाओंसे 'कल्लाणकंद' स्तुतिके सुताविक स्तुति की गई है। इसे श्रीमान् हरिभद्रमृगिजीने सम-संस्कृतमें (प्राकृत व संस्कृत दोनों भाषाओंमें गिनी जा सके ऐसी भाषामें) रची है, और यह चार ग्रन्थरूप गिनी जाती हैं।

**पुखखरवरदीवद्दे**—इस सूत्रसे वर्तमानमे विचरते बीस तीर्थ-करोकी व ज्ञानकी स्तुति की है ।

**सिद्धाणंबुद्धाणं**—इस सूत्र से सब सिद्ध महावीरस्वामी नेमीनाथ व अष्टापदस्थित चौबीस तीर्थकरोकी स्तुति की है ।

**वेयावच्च**—इससे समकित्ती देवोका स्मरण किया जाता है ।

**इच्छामिठामि**—इस सूत्रसे दिवसभरमें लगे हुए पापों को सामान्य रूपसे प्रगट करके उनकी माफी मागी जाती है ।

**नाणंमि**—इन आठ गाथाओंसे ज्ञानादि पांच आचारोंके भेदोंका वर्णन किया जाता है ।

**सुगुरुवंदना**—इस सूत्रसे सुगुरुको द्वादशावर्तवदन करके उनके प्रति जो अपराध हुआ हो उसकी क्षमा मागी जाती है ।

**सातलाख**—इससे तीन लोकमे रहे हुए ८४ लक्ष योनी के जीवोंमे से जिनका वध हुआ हो उसके वास्ते 'मिच्छामि दुक्कड' दिया जाता है ।

**अठारह पापस्थानक**— इस सूत्रमे सब मिलाकर जिन १८ प्रकारके पापका ब्यवन होता है उनके नाम दिये गये हैं, और उनमेस जिस प्रकार पाप किया गया हो उसके लिए 'मिच्छामि दुक्कड' की याचना करनेमे आती है ।

**वंदित्तु**—इस सूत्रमे श्रावकधर्मके बारह व्रत वगैरहम जो दोष लगे हो उनको पश्चात्तापके साथ प्रकट करते हुए, ऐसे दोष पुनः न लगे ऐसी भावना दरखाने के साथ, उनके लिए क्षमा मागी जाती है ।

**आयरिय उवज्झाए**—इस सूत्रसे आचार्य, उपाध्याय, समस्त सघ तथा सर्वजीवोंके प्रति क्रोध आदि कषाय किया गया हो एव अन्य जो कोई अपराध हुआ हो उसके लिए क्षमापना की जाती है ।

**इच्छामो अणुसद्धि**—इस सूत्रसे महावीरस्वामी, सर्व तीर्थ-करो तथा जिनवाणी की स्तुति की गई है । यह सूत्र देवसि प्रतिक्रमणमे बोला जाता है । इसे केवल पुरुषो ही बोलते हैं ।

**विशाललोचन**—इस सूत्रमे महावीरस्वामी, सर्व तीर्थकरो तथा जिनवाणीकी स्तुति की गई है । यह सूत्र राइ प्रतिक्रमणमें बोला जाता है । इसे केवल पुरुषो ही बोलते हैं ।

**श्रुत देवता की स्तुति**—सिर्फ पुरुष ही बोलते हैं ।

**क्षेत्रदेवता की स्तुति**—सिर्फ पुरुष ही बोलते हैं ।

**कमल दल स्तुति**—(यह श्रुतदेवता की स्तुति है । लियो 'सुअदेवया' की स्तुतिके बदलेमे इसे बोलती है ।)

**भुवनदेवताकी स्तुति तथा क्षेत्रदेवताकी स्तुति**—ये दोनो स्तुतिया भुवनदेवता तथा क्षेत्रदेवताकी है । ये दोनो पाक्षिक प्रतिक्रमणमे बोली जाती है । और लीया 'जिसे खित्ते साह' के स्थानमे "यस्या क्षेत्रं" वाली गाथा बोलती है ।

**अड्ढाडज्जेसु सूत्र**—इस सूत्रमे अढाई द्वीपमे रहे हुए सर्व मुनिओको नमस्कार किया जाता है ।

**वरकनक स्तुति**से उत्कृष्ट भावसे विचरनेवाले १७० तीर्थकरो को नमस्कार किया जाता है । इसे सिर्फ पुरुष ही बोलते हैं ।

**લઘુશાંતિ**—શ્રી નાડુલ નગરમા મરકી હઠાવવા શ્રીમાનદેવમૂરિ-  
જીએ આ સ્તોત્ર રચ્યું છે અને મળવાથી, સામઝવાથી તથા ગ્ના  
વઢે મત્રેલુ જલ છાટવાથી સર્વ રોગો દૂર થયા હતા અને યાય છે.  
અને ગાતિ ફેલાય છે આ સ્તોત્ર પૂર્વમાથી ઉદ્ધરેલુ છે, તેથી જયા-  
દેવી આકર્ષાઈને કેવી રીતે ગાતિ ફેલાવે છે, તેની સ્ત્રૂવીનો ચમત્કા  
રિક રીતે વિકાસ વતાવવામા આવ્યો છે

**ચઠકસાય સૂત્ર**— આ શ્રીપાર્વનાથ પ્રમુના ગુણોની સ્તુતિ-  
રૂપ ચૈત્યવદન છે.

**મરહેસરની સજ્ઞાય**— આ સજ્ઞાયમા પ્રાત સ્મરણીય વ્રહ્મ-  
ચારી દાનેશ્વરી તથા તપસ્વી વગેરે ઉત્તમ પુરુષો અને મહાસતીઓના  
નામ ગણાવ્યા છે.

**મન્નહ જિણાણં સજ્ઞાય**—આ સજ્ઞાયમા શ્રાવકને કરવા  
યોગ્ય છત્રીસ કૃત્યોનું વર્ણન છે

**સકલ-તીર્થ-વદના**— આમા ત્રણ લોકની અંદર આવેલા  
શાશ્વતા અશાશ્વતા ચૈત્યો તથા તેની અંદર રહેલી પ્રતિમાઓની  
સહ્યા વતાવી, તેમને નમસ્કાર કરવામા આવ્યો છે આ તીર્થમાલા  
શ્રીજીવિજયજી મહારાજાએ રચેલ છે.

**સકલાર્દ્દત સ્તોત્ર**— ચોવીશેય તીર્થકર પરમાત્માઓની  
સ્તુતિરૂપ આ સૂત્ર પાશ્વિકાદિક ૩ પ્રતિક્રમણોમા ચૈત્યવદન તરીકે  
ચોલાય છે આમાંના ૨૬ મા વિના ૨૭ મા સુધીના શ્લોકો  
શ્રીમાન્ કલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યવિરચિત ત્રિષષ્ટિ—શલાકા  
પુરુષચરિત્રના મગલાચરણ તરીકે હોવા છતાં, મહત્વના હોવાથી  
તેનો ચૈત્યવદન તરીકે ઉપયોગ કરવામા આવ્યા છે અને ૩૧ મો



શ્લોક પળ તેમના જ અન્ય પ્રથોમાનો છે વાકીના અન્ય આચાર્ય-  
કૃત જણાય છે ૨૮મો શ્લોક શ્રીમદ્ હરિભદ્રસૂરિવિરચિત અનેકા-  
ન્તજયપતાકા પ્રથના મગલાચરણરૂપ છે

**સ્નાતસ્યા-સ્તુતિ** શ્રીમત્ કલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્ય  
મહારાજાના ગિય્થ વાલચદ્રમુનિએ રચેલી આ મહાવીરસ્વામિની સ્તુતિ  
જ માત્ર તેમના સતોષ સ્વાતર પાક્ષિકાદિ પ્રતિક્રમણોમા બોલવા  
શ્રીસઘે કબૂલ કરેલી છે

**પાક્ષિકાદિ અતિચાર**—પાંચ આચાર, સમ્યક્ત્વ સહિત વાર  
વ્રતો, સલેષણા, અને પ્રતિસિદ્ધકરણાદિના અતિચારો આમા  
આપવામા આવેલા છે )

**અજિતશાંતિ સ્તવ** — આમા પ્રાકૃત ભાષામા ભક્તિભર્યા હૃદ-  
યથી વિવિધ મધુર છદોમા શ્રીનદીષેણ આચાર્ય મહારાજે શ્રીઅજિ-  
તનાથ પ્રમુ અને શ્રીશાંતિનાથ પ્રમુની કાવ્યમય સ્તુતિ કરી છે

**બૃહચ્છાન્તિ સ્તોત્ર**

શ્રીસઘમા અને સર્વત્ર ગાતિ—તુષ્ટિ—પુષ્ટિ જલ્લવાય માટે જેવી  
રીતે શ્રીજિનેશ્વર પરમાત્માના જન્માભિષેક વચ્ચે ઇન્દ્રાદિક દેવો  
શાંતિની ઉદ્બોધણા કરે છે, તે પ્રમાણે પ્રતિષ્ઠા સ્નાત્રાદિના પ્રસંગે  
શાંતિનો ઉદ્બોધણા કરવા માટે મગલમય આ સ્તોત્ર છે

**શ્રી સંતિકર સ્તોત્ર**

શ્રીગાંતિનાથ પ્રમુનુ આ સ્તોત્ર સર્વ વિઘ્નોથી રક્ષણ કરનારું  
છે રોજ એક વચ્ચત, ત્રણ વચ્ચત, સાત વચ્ચત કે એકવીંચ વચ્ચત  
પવિત્રતા સાથે ગણવાથી તરત સફલતા મળે એવું હોવાનું કહ્યું છે.

## चंदितु सूत्रका भावार्थ

चंदितु (श्रावक का प्रतिक्रमण सूत्र) दिन और रात्रि में लगे हुए जुदा-जुदा अतिचार (प्रगट हुवे आत्म गुणों को मलिन करने वाले दोषों) से पीछे हटने के लिये शाम को सूर्यास्त के समय और सुबह सूर्य उगते समय बोलने का होता है। इसमें श्रावक के सम्यक्त्व सहित १२ व्रतों का वर्णन तथा उनमें लगने वाले जुदा-जुदा दोषों की समझ और उनकी माफी, आत्म साक्षी निंदा गुरु साक्षी गृही किया जाता है।

सर्वज्ञ ऐसे तीर्थंकर व सिद्ध भगवान को और धर्माचार्य को, उपाध्याय और सब साधुओं को वन्दना करके श्रावक धर्म में लगे हुए दोषों से पीछे हटने की इच्छा करता हूँ ॥१॥

ज्ञान दर्शन और चरित्र में मैंने जो कुछ सूक्ष्म या वादर व्रत के दोष लगाये हो, उनकी निंदा करता हूँ और गुरु साक्षी से गद्दी करता हूँ ॥२॥

दो प्रकार सचित्त (सजीव वस्तु) और अचित्त (अजीव वस्तु) ऐसे ही पाप वाला और बहुत आरम्भ वाला स्वयं करने से और दूसरो पासे कराने से दोष लगा हो उन सब से मैं पीछे हटता हूँ ॥३॥

पाच इन्द्रियो से अशुभ भावना वाला, चार कपायों युक्त, राग और द्वेष से जो कुछ मैंने अशुभ कर्म बाधा हो, उनकी निंदा करता हूँ और गुरु समक्ष गद्दी करता हूँ ॥४॥

## (सम्यग्दर्शन के अतिचार)

अर्थ:—विना उपयोग से राज कर्मचरियों व बहुत लोगों के आग्रह से या पराधिनता के कारण से (मिथ्यात्वयों के मदिरादिक में) आने जाने में, व उन स्थान पर खड़े रहने में, व इधर उधर फिरने में जो कुछ अतिचार रूप पाप कर्म दिवस सम्बन्धी किया हो, उन सब से पीछे हटता हूँ अर्थात् गुरु समक्ष सब को त्याग करता हूँ ॥५॥

अर्थ : (१) जिन वचन में शंका, (२) अन्य धर्म मानने की इच्छा (३) साँस साँची का मलिन वस्त्र व शरीर देखकर या धर्मपति पुरुषों की क्रिया देखकर दुर्गुला (४) मिथ्यात्वयों की प्रशंसा और (५) सन्यासी तापसादिकों का अत्यन्त गाढ परिचय करना यह सम्यक्त्व के पांच अतिचार दिन में किये हो उनसे पीछे हटता हूँ ॥६॥

खुद के लिये, दूसरो के लिये और दोनों के लिये आहारादिक पकाने में या पकवाने में छः काय जीवों सम्बन्धी आरम्भ प्रवृत्ति करने से जो कुछ पापमय दोष लगा हो उन सब दोषों की निन्दा करता हूँ ॥७॥

॥ सामान्य १२ व्रत के अतिचार ॥

जिन व्रतों में कुछ भी छूट छाट न हो वो सूक्ष्म व्रत कहलाते हैं जिनको साधु महाराज पालते हैं और जिन व्रतों में छूट छाट रखी जाय उनका स्थूल व्रत कहते हैं । छता यह गृहस्थों के लिये मुख्य धर्म क्रिया का अंग है ॥

(क) पांच अणुव्रतों (१) स्थूल जीव हिंसा का त्याग

(२) स्थूल मृषावाद का त्याग (३) स्थूल अदत्तादान का त्याग  
(४) स्वदारासंतोष पर स्त्रीगमन से अटकना (५) धन-द्रोक्त  
धान-जमीन-जेवर-आदि का परिमाण ।

(ख) तीन गुणव्रत (१) भोग और उपभोग का  
परिमाण (२) दिशा का परिमाण (३) अनर्थ दंड विरमणव्रत  
दूसरे को पाप करने का उपदेश देना ।

(ग) हिंसा प्रदान-यानी हिंसाकारी शस्त्र-मिट्टर  
और मशीनरी दूसरे को देना-खुद बनाना और प्रमादाचरण-  
नाटक, सरकस, सिनेमा, रेडीयो - टेलीवीजन वगैरह  
वगैरह जो कुछ अतिचार लगाया हो उनसे पीछे  
हटता है ॥८॥

॥ अर्थ सामायिक व्रत ॥

(९)(१०) अणुव्रत के अन्दर प्रमाद से अप्रशस्त भावना में  
हकर स्थूल प्राणातिपात त्याग करके जो कुछ किसी जीवों  
हो मारा हो, दुख दिया हो-इत्यादि इस पहला व्रत सम्बन्धी  
देन में दुराचरण किया हो उन सब का प्रतिक्रमण करता  
है ॥९॥१०॥

(११) दूसरे अणुव्रत में प्रमाद के कारण क्रोधादि भाव  
में रहनेसे स्थूल असत्य वचन बोलने से अतिचार लगा हो  
उसकी माफी चाहता है ॥

(१२) बिना विचारे किसी पर आरोप रख देना ।  
किसी को स्त्री व पति की गुप्त बात कही हुई प्रगट की या  
खोटा उद्देश दिया, झूठा लेख लिखा हो यह ५ अतिचारों

द्वारा मैंने दिन भरमें अशुभ कर्म बाधा हो उन तमाम दोषों से पीछे हटता हूँ ॥

(१३) तीसरे अणुव्रत में प्रमाद के कारण से दूसरे की वस्तु ग्रहण करने का सोगद त्याग करके अप्रशस्त काम किया हो उनकी शुद्धि करता हूँ ॥

(१४) चोरी से मस्ती चीज ली हो या उनकी चोरी करने में मदद की हो । अच्छी बुरी चीजों को इकट्ठा करके बेची हो । बुरी को अच्छी करके बेची हो राज तरफ से मनाई किये हुए देश में जाना, राजद्रोह करना या जकात, सेलटेक्स इनकमटेक्स वगैरह वगैरह चोरी करना, भुग तोत, नाप रखना इत्यादि दिन सम्बन्धी जो कुछ दोष लगाया हो उसको मैं शुद्धि करता हूँ ॥

(१५) अर्थः सदा के लिये लिया हुआ परस्त्री सम्बन्धी का सोगन तोड़ कर चौथे सदास संतोष व्रत के अन्दर प्रमाद से खराब मन के भावना पूर्वक अशुद्ध आचरण किया हो ।

(१६) अर्थ-अण अ शुद्ध आचरण बनते हैं ॥

किसी की ग्रहण की हुई या परणी हुई न हो ऐसी स्त्री वैश्यादि से सम्बन्ध करना, कुछ समय के लिये किसी की स्वीकार की हुई स्त्री से मोह करना परस्त्री के साथ काम क्रीडा करना, दूसरे की पुत्र-पुत्री का व्याह कराना, काम भोगे की तीव्र इच्छा करना-इस तरह से चौथे

व्रत अतिचारों से कर्म बन्ध किये हो तो दिन भर के सब पापों से पीछे हटता हूँ ॥

(१७) इस पाचवे व्रत में स्थूल परिग्रह धन, पैसादि, खेत, मकान, विलिङ्ग रुपया—आदी, सोना हीरा, वगैरह धातु, २४ प्रकार का धान इत्यादि अशुभ मन के भावों से प्रमाद पूर्वक परिमाण का सौगन त्याग कर अशुभ आचरण किया है ॥

(१८) उँची—पहाड़ पे जाने की, नीची भोयंरे में जाने की दिशा, तिर्छी, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व चार अग्नि आदि दिशा में अमुक अमुक मिलों तक जाने के परिमाण किये वाद भूल के कारण जाने से एक दिशा में जाना, दूसरी दिशा में ज्यादा जाने से पहले गुण व्रत में जो अति-चार लगा हो उसको निदा यानी आत्म साक्षी धिक्कारता हूँ ॥

(२०) शराब आदि कोई प्रकार की नशा वाली चीज, मांस वगैरह नहीं खाने योग्य चीज और फुल फल सुगन्धी तेल आदि वस्तु, व सुगन्धी फूलों की माला इत्यादिक मर्यादा उपरात अधिक वापरने से उपयोग परिभोग के दूसरे गुणव्रत में लगे हुए अतिचारों की मैं निन्दा करता हूँ ।

(२१) नियम से ज्यादा सचित्त खाया हो, सचित्त के साथ मिली हुई चीज खाई हो, कच्ची पचित मिश्र वस्तु खाई हो, आधी कच्ची आधी पकी वस्तु खाई हो, तुच्छ औषधि—दवाई या तुच्छ पदार्थ के तरह का अभक्ष्यादि वस्तु

खार्त हो, खाने से दिन सम्बन्धी लगे हुवे सब दोषों को विसराता हूँ, अर्थात् त्याग करता हूँ॥२१॥

(२२) कुम्हार, लुहार, सुनार, भाड भुजादिक काम में अग्नि सम्बन्धी पाप कर्म किया हो तो अंगार कर्म (१) पुष्प-फल वनस्पति अनाज के लिये वाग खेती वाड़ी अनाज आदि कर्म किया हो तो वन कर्म (२) गाड़ी बैल घोडा ऊट हाथी आदि को बेचना-व्यापार करना व साठी कर्म (३) बैल घोडा ऊट आदि किराये, पे देना या लेना व भाटिक कर्म (४) कुवाँ, वावड़ी, नीव खण आदि खोदे या और के पास खुदवाये व स्फोटिक कर्म-यह ५ कर्म श्रावक को अवश्य ही त्याग करना चाहिए ।

फिर हाथी दात व्यापार १-लाख-पापडा का व्योपार (२) गुड तेल घी आदिरस व्यापार (३) तोता, मैना, मुर्गा वकरा, ऊँट, दास, दासी का सेश अधिक व्यापार ॥ (४) व विष जह्वार व्यापार अफीम, गाजा, भाग, चरस-सामेल आद का व्यापार ५ इन पाच कुव्यहार को भी श्रावकों को छोड़ना चाहिये ॥२२

वैसे ही फिर घंटी, विजली की आटा पीसने की मशीन हर जात की मोटर आइलडजन चरखा-कपडा बनाने की सोचे साठा तेल आदि का हर प्रकार के मशीन यंत्र चाहे हाथ से चले या विजली के मशीन यंत्र से चले (१) जानवर के नाक कान बिधाना या उनको खस्सी करवाना व निल्ल-

छण कर्म (२) खेत या बाग में घाम काँटादि जलाने का आग लगवाना व दवदाह कर्म (३) छोटा या बड़ा तलाव व द्रह आदि का पानी सुखाना व सौसए कर्म (४) दुर्गा-चारी वेश्या, सिनेमा, टी. वी., रेडियो, ग्रामोफोन, नाटक, नाच, सरकस, भाड, तमासगिरों को व हिसक जीवों का पालन पोसण करना व दसई पोस कर्म यह ५ सामान्य कर्म भी श्रावकों को अवश्य छोड़ना चाहिये ॥२३॥

इस तरह १५ कर्मादान का व्यापार ही त्याग करना—त्याग करने से सातवाँ भोग व भोग व्रत में अतिचार लगता नहीं ॥

॥ आठवा अन्वर्थदंड व्रत के ५ अतिचार को बनाने वाला अधिकरण यानि पाप कर्म का साधन बताते हैं ॥

आठ अन्वर्थ दंड में मैंने शस्त्र कोई जात हथियार अग्नि, मुसल, यन्त्र किसी प्रकार की मशीनरी व मशीनरी में काम आने वाले मीटर वगैरह, घास, लकड़ा, मूल जड़-किसी प्रकार की दवाई, सापादिक को खिलाने का मंत्रादिक साप को पकड़ने के लिये जड़ी बूटी इत्यादिक पापकारी पदार्थ काम में लिये हो उन सब का दिन में अति चार लगा हो उनको विसराता हूँ अर्थात् त्याग करता हूँ ॥२४॥

अर्थ—बिना छाने पानी से या बेकाम स्नान किया हो, तेल पीठी का मर्दन कर मैल उतारा हो—नखों की पोलीश, पफ पावडर, मैदी वगैरह शरीर पर लगाया हो,



सुगन्धी केसर चंदन अत्तर आदि से विलेपन किया हो, कुतूहल से या मोह दशा से रेडियो, टेलीवीजन, ग्रामोफोन, गायिका-वेश्या का गाना सुना हो स्त्री-आदि का रूप निरीक्षण किया हो, रस गंध की उत्तमता देखकर बेकाम विगेष उपयोग किया हो । वस्त्रादिक आसन, कुरसी टेबल बेंच गद्दी आदि व आभूषणादिक फिजूल प्रमाद से ज्यादा वापरा हो, उन सम्बन्धी दिन में लगे हुए सब अतिचार का त्याग करता हूँ ॥२५॥

काम भोग व स्त्री कथा करना, १ लोगों की हंसी मजाक हो वैसा काम चेष्टा करना । २ चपलता से कुवचन कहना या गाली देना । ३ पाप कृत कोई प्रकार की चीज तैयार करना या करवाना । ४ मर्यादा उपरांत ज्यादा चीज काम में लेना इत्यादि अनर्थ दंड होता है । इसमें लगे हुए अतिचार की मैं निंदा करता हूँ ॥ २६ ॥ (जिससे आत्मा व्यर्थ पाप से दूडाय, उसको अनर्थ दंड कहते हैं ॥

मन, वचन, काया संबन्धी ३ प्रकार के दुष्ट प्रणिधान, भाव या बुरे योग व्यापार करना—ये तीन अतिचार, अस्थिर पने से सामायिक में सामायिक के टाइम पहले ही उठ-जाना ४ मैंने सामायिक ली है या नहीं ली ॥ प्रमाद से यह याद नहि रखना—इस तरह से—गलत सामायिक करने से ९ सामायिक व्रत नाम के पहला शिक्षाव्रत में लगे हुए दोषों की मैं निंदा करता हूँ ॥२७॥

अर्थ—दिशा परिमाण व्रत में बाहर से वस्तु मगाना, अपने पास से बाहर भेजना, उप शब्द से अपना होना मालूम करना और पत्थर आदि फेंककर जाण करना इत्यादि कार्य करते देशवगासिय नाम के दूसरे शिक्षाव्रत में जो दोष आ गया हा उसकी मैं निन्दा करता हूँ ॥२८॥

अर्थ—पोषध में संथारा करते, पड़िलेहन करते, मलमुत्र त्याग की विधि में प्रपाद हुआ, भोजन की चिंता हुई ॥ विधि में भूल हुई हो इस तरह से तीसरे शिक्षा व्रत में किसी तरह का दोष लगा हो उसको मैं निन्दा करता हूँ ॥२९॥

अर्थ—संचित पृथ्वी आदि पर साधु के लिये कल्पना या वस्तु रखना या संचित वस्तु फेंक देना, पराई वस्तु को अपना बनाना, अपनी वस्तु को पराया बनाना, बिना भाव व गुस्से से दान देना और गोचरी के समय को टालकर आमंत्रण करना इत्यादि इस तरह चौथे शिक्षाव्रत में जो कोई दोष लगा हो उनकी मैं निन्दा करता हूँ ॥३०॥

अर्थ—जो साधु ज्ञानादि गुण में रत हैं या जो वस्त्रपाल आदि उपाधि वाले हैं, वे सुखी कहलाते हैं । जो व्याधि से पीड़ित है तपस्या से खिन्न है या वस्त्र-पात्र आदि उपाधि से दुखी है या रोग के कारण दुखी हो और गुरु आज्ञा में रहने वाले विचरने वाले मुनिराज की मैंने राग या द्वेष के कारण आहार पानी आदि से भक्ति की हो तो मेरे कृत्य की निन्दा करता हूँ, धृणा करता हूँ ॥३१॥

कर्म बध होता है कारण कि वह निर्दयता से नाहिं करते परन्तु कोमल भाव से करते हैं ॥३६॥

अर्थ: जैसे अच्छा होर्गियार वैद्य शीघ्रता से रोग का नाश कर देता है उसी तरह से समकितधारी श्रावक भी अल्प कर्म बन्ध का प्रतिक्रमण, पश्चाताप, प्रायश्चित्त द्वारा नष्ट कर देता है ॥३७॥

अर्थ: जैसे शरीर में रहे हुवे सर्पादिक के जहर का मंत्र तंत्र जानने वाला वैद्य मंत्रों से नाश करता है व शरीर को विष रहित करता है, वैसे ही वो प्रतिक्रमणादि विधि पूर्वक करके लगे हुए पाप को पापरहित करता है. अर्थात् आत्मा को निर्मल करता है ॥३८॥

अर्थ: इस प्रकार रागद्वेष से उत्पन्न किये हुए आठ प्रकार के कर्म को गुरु के पास जाहिर करके अर्थात् आत्म साक्षी से निन्दा करके अच्छा श्रावक शीघ्र उन कर्मों को नाश करता है ॥३९॥

अर्थ: पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु के पास पवित्र भाव से आलोचना कर, व आत्मसाक्षी से निन्दा करके, जैसे मजदूर बोझा उतारकर अत्यन्त हलका होता है वैसे ही वह बोझा उतर जाने से अत्यन्त हलका होता है ॥४०॥

अर्थ: जबकि श्रावक संसारी कार्य में बहुत लयलीन होता है तो भी इन ६ आवश्यक क्रिया ( सामयिक, लोगस्स गुरुबंदन, प्रतिक्रमण, काउस्सग ) के भाव सहित करने से थोड़े ही समय में दुःख का अन्त कर मोक्ष पायेगा ॥४१॥

अर्थ—निर्दोष आहार पानी होते हुए भी तथा तपधारी चरण तीसरी करण तिसरी वाले मुनिराज का योग होने पर भी प्रमाद के कारन मैंने दान नहीं दिया हो तो मैं अपनी निंदा करता हूँ ॥ घृणा करता हूँ ॥३२॥

अर्थ—धर्म प्रभाव से इस भाव में सुख की इच्छा व दूसरे भाव से देव इन्द्रादि के सुख की इच्छा होने के लिये मन का व्यापार किया हो । ३ अनसन के लिये व विद्वता के लिये अपना सम्मान हुआ देख कर जीने की इच्छा (४) दुःख आने पर मरने की इच्छा (५) काम भोग के वास्ते तीव्र म्त्री की इच्छा का व्यापार यह संलेसणा के ५ प्रकार के अतिचार मेरे को (हे गुरुवर्य) जीवन पर्यन्त न होवे ॥३३॥

अर्थः—सब व्रतों के अतिचार मैंने काया के योग से किये हो उनको काया के शुभयोग से वचन से किये हुए का वचन द्वारा अशुभ चितवन को मन द्वारा आल निन्दा कर पडिक्कमता हूँ ॥३४॥

अर्थ—२ प्रकार के वदन (मुनि वदन और चैत्यवंदन) १२ प्रकार के व्रत, चार कपाय, दो प्रकार की शिक्षा (ग्रहण और आसवेन रूप) ३ गारव, ४ संज्ञा ३ दण्ड, ३ गुप्ती, ५ समिति और श्रावक की ११ पडिमा उनके विषय में जो कोई दोष लगा हो उसकी निन्दा करता हूँ ॥३५॥

अर्थः—जो कि सम्यग् दोष जीव (योग्य कारण) से थोड़ा भी पाप करे तो भी उनको निश्चय से अल्प ही

कर्म बन्ध होता है कारण कि वह निर्दयना से नाहिं करते परन्तु कोमल भाव से करते है ॥३६॥

अर्थ: जैसे अच्छा होगियार वैद्य शीघ्रता से रोग का नाश कर देता है उसी तरह से समकितधारी श्रावक भी अल्प कर्म बन्ध का प्रतिक्रमण, पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त द्वारा नष्ट कर देता है ॥३७॥

अर्थ: जैसे शरीर में रहे हुवे सर्पादिक के जहर का मंत्र तंत्र जानने वाला वैद्य मंत्रों से नाश करता है व शरीर को विष रहित करता है, वैसे ही वो प्रतिक्रमणादि विधि पूर्वक करके लगे हुए पाप को पापरहित करता है. अर्थात् आत्मा को निर्मल करता है ॥३८॥

अर्थ: इस प्रकार रागद्वेष से उत्पन्न किये हुए आठ प्रकार के कर्म को गुरु के पास जाहिर करके अर्थात् आत्म साक्षी से निन्दा करके अच्छा श्रावक शीघ्र उन कर्मों को नाश करता है ॥३९॥

अर्थ: पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु के पास पवित्र भाव से आलोचना कर, व आत्मसाक्षी से निन्दा करके, जैसे मजदूर बोझा उतारकर अत्यन्त हलका होता है वैसे ही वह बोझा उतर जाने से अत्यन्त हलका होता है ॥४०॥

अर्थ: जबकि श्रावक संसारी कार्य में बहुत लयलीन होता है तो भी इन ६ आवश्यक क्रिया ( सामयिक, लोगस्स गुरुवन्दन, प्रतिक्रमण, काउस्सग ) के भाव सहित करने से थोड़े ही समय में दुःख का अन्त कर मोक्ष पायेगा ॥४१॥

अर्थ: आलोपगा गुरु के पास छेने की बहुत प्रकार की होने पर भी प्रतिक्रमण के समय याद नाहि आई हो जिससे ५ अणुव्रत रूप मूलगुण व सातव्रत रूप उत्तर गुण में जो दोष लगा हा उनको मैं निन्दता हू अर्थात् मैं गहाँ करता हू ॥४२॥

अर्थ: - केवली भगवान का कहा हुवा श्रावक धर्म की विराधना के वास्ते मै खडा हुवा हूँ और धर्म की विराधना से पीछे हटा हूँ त्रिविध से पीछे हटा हुआ मै चोवीस तीर्थ-करो की वंदना करता हूँ ॥४३॥

अर्थ: जितनी प्रतिमाएँ व जितने जिन मन्दिर उर्वा-लोक ( ज्योतिष वैमानिक मे अधोलोक ( भुवनपति ) में तिरछालोक ( मनुष्यलोक व नंदीश्वर आदि द्वीपो ) मे है वहाँ रहे हुए उन सबको यहाँ पर रहा हुआ मै वंदन करता हूँ ॥४४॥

अर्थ: भरत, ऐरावत, और महाविदेह क्षेत्र में जो कोई साधु है और जो तीन करन, तीन दण्ड से विराम पाये हुवे सर्व साधुओ को मैने नमन किया है ॥४५॥

अर्थ: अनादि काल से डकट्टे किये हुवे पापों का नाश करने वाली लाखो जन्म जन्मान्तरो का अन्त करने वाली है और जा तीर्थङ्करो के पवित्र मुख से निकली हुई है, ऐसी सर्व हितकारक धर्म कथा से मेरा दिन व्यतीत होवे ॥४६॥

अर्थ: अग्रिहत, सिद्ध, भगवान, साधु, श्रुतधर्म व चरित्र

धर्म यह मुझे मंगल रूप द्योवे ओर समकित्तवागी देवता मुझे समाधि को देवे अथात् समाधि प्राप्त करने में सहायक हो ॥४७॥

स्थूल जिन द्विसा आदि पाप कर्मों के करने का श्रावक के लिये प्रतिषेध किया गया है उन कर्मों के किये जाने पर प्रतिक्रमण किया जाता है (२) दर्शन, प्रजन, सामयिक आदि जिन कर्तव्यों के करने की श्रावक को विधान किया गया है उनके न किये जाने पर प्रतिक्रमण किया जाता है । (३) जैन धर्म प्रतिपादित तत्त्वों की सत्यता के विषय में संदेह लाने पर अर्थात् अश्रद्धा उत्पन्न होने से प्रतिक्रमण किया जाता है । (४) जैन शास्त्रों के विरुद्ध विचार प्रतिपादन करने पर प्रतिक्रमण करने का है ॥४८॥

अर्थ: किसी ने मेरा कोई अपराध किया हो तो मैं उसको खमाता अर्थात् क्षमा करता हूँ । वैसे ही मैंने भी किसी का कुछ अपराध किया हो वो मुझे क्षमा करे ॥ मेरी सब जीवों के साथ मित्रता है किसी के साथ शत्रुता नहीं है ॥४९॥

अर्थ: मैंने पापों की सम्यगू प्रकारे आलोचना निन्दा, गद्दी और दुर्गच्छाकरी और त्रिविध प्रतिक्रमण करके अब मैं अन्त में फिर से २४ जिनेश्वरों का वन्दन करता हूँ ॥५०॥

## चार शरणां

( १ )

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी,  
केवली धर्म प्रकाशीओ, रत्न अमुलख लाधुंजां १  
चिहुंगति तणा दुःख छेदवा, समरथ शरणा एहोजी  
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधा शरणा तेहोजी. मुज० २  
संसारमाही जीवने, समरथ शरणां चारोजी,  
गणि समय सुंदर एम कहे, कल्याण मंगळ कारोजी. मुज० ३

( २ )

लाख चोरासी जीव खमात्रीए, मन धरी परम विवेकजी,  
मिच्छामि दुक्कडं दीजीए, जिन वचने लहीए टेकजी. लाख १  
सात लाख भू दग तेउ वाउना, दस चौद वनना भेदोजी,  
षट् विगल सुरतिरि नारकी, चउ चउ वौद वनना भेदोजी. लाख. २  
मुजने वैर नहि केहथुं, सहुथुं मैत्री भावोजी.  
गणि समय सुंदर एम कहे, पामीए पुन्य प्रभावोजी. लाख. ३

( ३ )

पाप अदारे जीम परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखेजी.  
आलोया पाप छूटीए, भगवंत एणी पेरे भाखेजी पाप. १  
आश्रम कपाय दोय बंधवा, वळी कलह अभ्याख्यानोजी.  
रति अरति पैशुन्य निदना, माया मोह मिथ्यात्वजी पाप. २  
मन वचन कायाए जे कीया, मिच्छामि दुक्कडं तेहोजी,  
गणि समय सुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी. पाप. ३



( ४ )

धन धन ते दिन गुज कदी होशे ? हुं पामीश संजम शुद्धोजी,  
 पूरव ऋषि पंथे चालशुं गुरु वचने प्रतिबुद्धोजी० धन० १  
 अन्त ग्रान्त भिक्षा गौचरी, रणवने काउस्सग्ग करशुंजी,  
 समता शत्रु मित्र भावशुं, संवेग सूधो धरशुं जी धन० २  
 संसारना संकट थकी, छुटीश जिन वचने अवधारोजी,  
 अन्य समय सुंदर ते घडी, पामीश भवनो हुं पारोजी. धन. ३

## श्री आदिनाथ भगवान का स्तवन

माता मरुदेवीना नंद, देखी तारी मूरति मारुं  
 मन लोभाणुंजी; मारुं दिल लोभाणुंजी. देखी० १  
 करुणा नागर करुणा सागर; कायाकंचनवान;  
 धोरी लंछन पाउले काई, धनुष्य पाचसेमान माता० २  
 त्रिगढ़े वेसी धर्म कहंता, सुणे पर्यदा वार,  
 जोजन गाभिनी वाणीमीठी, वरसंती जलधार माता० ३  
 उर्वशी रुडी अपछरा ने, रामा छे मन रग,  
 पाये नेयुर रणझणे काह, करती नाटारंभ माता० ४  
 तुही ब्रह्मा, तुंही विवाता, तुंही जगताणहार,  
 तुज सरीखो नहिं देव जगतमा, अरवरिआ आधार० ५  
 तुंही आता, तुही त्राता, तुंही जगतनो देव;  
 सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुजपद सेव. माता. ६  
 श्री सिद्धाचल तीरथ केरो; राजा ऋषभ जिणंद,  
 कीर्ति करे 'माणेक मुनि', ताहरी टालो भव भय फंद.  
 माता० ७

॥ ॐ ह्रीं श्रीं शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

हे शंखेश्वर स्वामि, प्रभु जग अंतर यामि.  
तमने वंदन करीए, (२) शिव सुखना स्वामि.

हे शंखेश्वर स्वामि १

मारो निश्चय एकज स्वामि, वनु तमारौ दास.  
तारा नामे चाले, (२) मारा थासो थास

हे शंखेश्वर स्वामि २

दुःख संकटने कापो स्वामी, वाछित ने आपो.  
पाप हमारा हरजो, (२) शिव सुखने देजो.

हे शंखेश्वर स्वामि ३

निश दिन हुं मागु छुं स्वामि, तम शरणे रहेवा.  
व्यान तमारुं व्यावु, (२) स्त्रीकारजो सेवा.

हे शंखेश्वर स्वामि ४

रात दिवस शंखु छुं स्वामि तमने मळवाने.  
आतम अनुभव मांगु, (२) भव दुःख टळवाने.

हे शंखेश्वर स्वामि . ५

करुणाना सागर छो स्वामि, कृपा तणा भंडार  
त्रिभुवनना छो नायक (२) जगना तारणहार.

हे शंखेश्वर स्वामि ६

પ પૂ આચાર્યશ્રી યશોદેવસૂરિ મહાગજ દ્વારા મ પાદિત શ્રી મુક્તિ ઉમલગ્ગ  
મોહનમાલા-વડોદરાના સોજ-ચથા આ ચિત્રો લેવામા આવેલા છે

સ્વમાસમણુ કેમ દેવું તે.  
પંચાંગપ્રણિપાતરૂપ  
'સ્વમાસમણ' મુદ્રા

પ્રથમ સ્થિતિ [પ્રારંભ]



દ્વિતીય સ્થિતિ [અન્ત]



પંચાંગ= બે હાથ હિ પગ અને મસ્તક-તે વડે પ્રણિપાત= નમસ્કાર

અમાસમાણુ કેમ દેવું તે—

આપણી તમામ ક્રિયાઓમા અમાસમાણુ આવવાનું જ ખીલુ  
ચિત્ર બરાબર જુઓ, અને તમે જે ગીત અમાસમાણુ દા છે  
તની સાથે સરખાવો અને ખાલી હાથ તો ફર કરો વધુ સમજળ  
મળવા પ્રાર લખા છાપેલું અમાસમાણુ કેમ દેવું તે લખાણ વાંચો

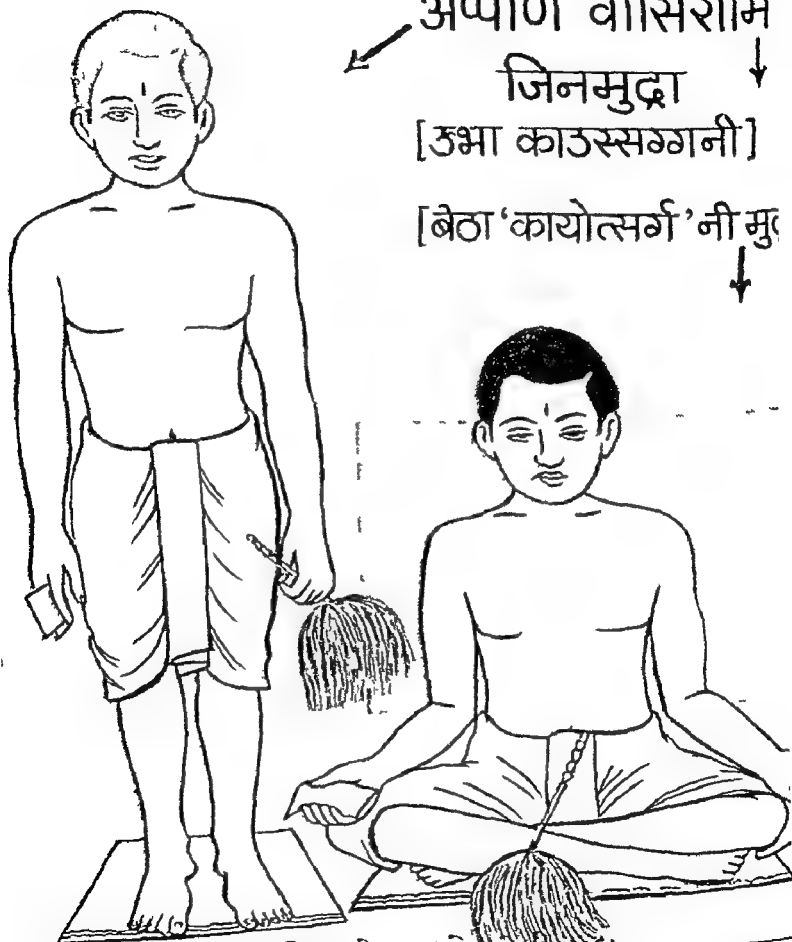
કાઠસગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા

‘અપ્પાણં વોસિરામિ’

જિનમુદ્રા

[ઊભા કાઠસ્સગની]

[બેઠા ‘કાયોત્સર્ગ’ ની મુદ્રા]



કાઠસગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા

ખેડા પ્રદેશના કુનારે હાથ કેમ ગણવા, ચર્ચાઓ કેમ ગણવા ત, કા  
પ્રદેશના કુનારે ખે પગના આગલા ભાગ વચ્ચે ફેટલું અલગ ગણવું  
મુકપત્તી ચર્ચાઓ હાથના ગણવા, હાથ જ પાની પાસે કેમ ગણ  
પગના આગલા ભાગ વચ્ચે ફેટલું અલગ ગણવું ત, કા ચિત્રથી સમજાશે

१ जपपूजा प्रारम्भथा उचसग्गह् सुधाना जयवीरराय। थी आभवन सुधी 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा'  
'योगमुद्रा'



चैत्यवदननी आसन- मुद्रा



जयवीरराय वरवतनी मुद्रा

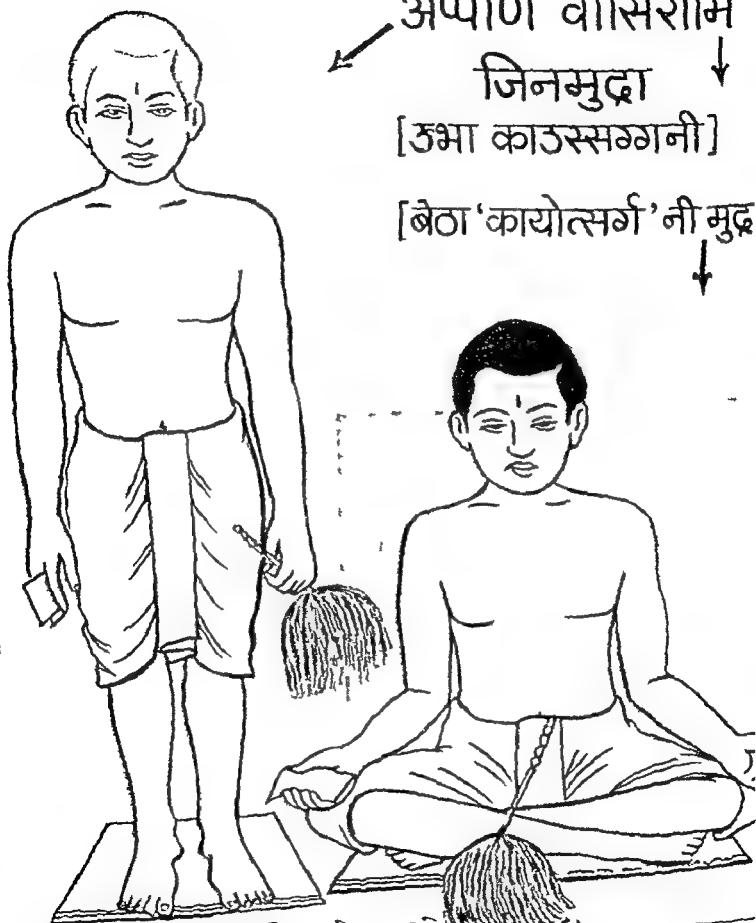
वारिज्जइ थी जैन जयति शासनम्। सुधी



કાઠસગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા.

← 'અપ્પાણં વોસિરામિ' ↓  
જિનમુદ્રા  
[ઊભા કાઠસ્સગની]

[બેઠા 'કાયોત્સર્ગ' ની મુદ્રા ↓



કાઠસગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા

બેઠા પ્રવિસગ કરનારે હાથ દેશ ગ મના, ચગવલો કમ ગખવો ન, ઠાણ  
પ્રવિસગ કરનારે બે પગના આગલા ભાગ વચ્ચે ફેટલું અતર ગખવું  
મુલપત્તી ચગવલો કયા હાથમાં ન મના, હાથ જ મના પાસે દેશ ગખવો  
અતે ધ્યાનન લગતી મ મમદ્રા દેશ ગ મના તે આ ચિત્રથી સમજારો

## પ્રતિક્રમણમા બેઠા હો ત્યારે

પ્રતિક્રમણમા કાઝવત્તે માથે કામલી નં



બે હાથ જોડી એકાદ પિતરાસી પ્રતિક્રમણ કરવું

કાઝવત્તે લઘુનીતિ યેસાબ લગેરે કરણ સુધા  
જવ પડે ત્યારે પિંગામ કતાવ્યામુજબ મારે કામલી નં

માતર - પેરાબ - વડુ ગ કાદિ કરના વ.  
અને તે વખતે કામલીને નાલ થઇ ગયે  
(મુખધમા હો) અને ઠાપાં વાગી ગયા  
ત્યારે અથવા વરસાદના મરુર હોય  
કામલી કોટીને જ માતર જુડુ  
કામલી ભૂલી ગયા હોય તે કોઈની  
માગી લેવી અથવા શ્રી મધે ચોડનાની  
રાખવી, મુહપતી કેડે ખોસવી  
ખગલમા રાખવો માતર મ્યાં પછી  
પાણીથી હાથ ધોઈ નાખવા

# મુહપત્તી અને શરીરની ૫૦, પડિલેહણા અને ૫૦, બોલ.

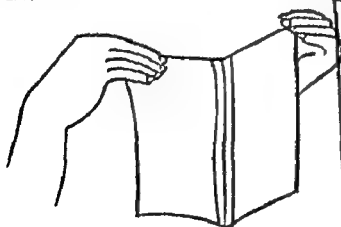
સૂચના ચરધલાવાટાનેજ ઝમ્મક બેસીને પડિલેહણ કરવાનું અધિકાર છે ન દોય તેને બેસી પડિલેહણ કરવી



- ૧ ઝમ્મક બેસો,
- ૨ હાથ બે પગની અંદર રાખો,
- ૩ મુહપત્તીને રવોલો,
- ૪ પછી અવલોકન કરો-  
તે સાથે 'સૂત્ર' આ બોલને  
મનમા બોલો

નં ૧ થી ૧  
મુહપત્તીપડિ  
૧ દષ્ટિપડિલેહણા

૧

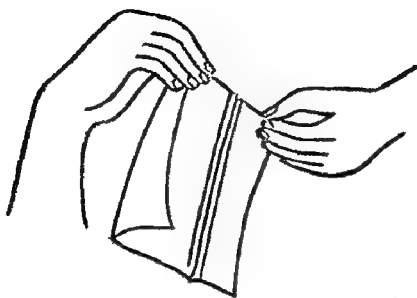


હવે મુહપત્તીને બીજી  
બાજુએ ફેરવી, પ્રમાર્જના  
કરવાની સાથે  
'અર્થતત્વકરીસદ્દહુ' બોલો

દષ્ટિપડિલેહણા

૨



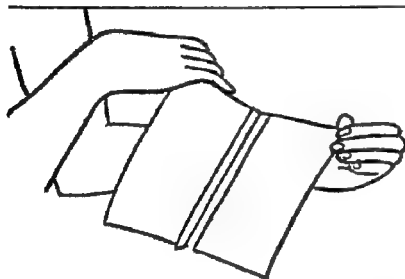


૨-૬ ઝૂધ્વપ્પકોડા

૩

“સમ્યક્ત્વ મોહનીય,  
મિશ્ર મોહનીય,  
મિથ્યાત્વ મોહનીય પરિહરૂં,”

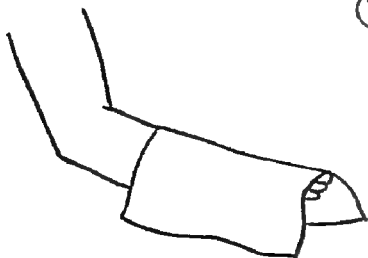
આ બોલ બોલીને મુહપતીના એક  
છેડાને ત્રણવાર સ્વસ્ત્વેરવો



૪

“કામ રાગ, સ્નેહ રાગ,  
દૃષ્ટિ રાગ પરિહરૂં”

આ બોલ બોલીને મુહપતીના બીજા  
છેડાને ત્રણવાર સ્વસ્ત્વેરવો પછી  
ચિત્ર મુજબ ડાબા હાથના કાઢાઉપર  
નારવવી





૫

મુહપતીને ચિત્રમા વતાવ્યા મુજબ  
આઘલીઓમા ભરાવો પછી આઘલાથી  
કાઢા તરફ અને ફરી કાઢાથી આઘલા  
તરફ મુહપતી વડે ત્રણ ત્રણવાર પ્રગાર્જના  
કરો સાથે નીચેના વોલ વોલો-  
“સુદેવ, સુગુરુ, સુધર્મ આદરુ”  
“કુદેવ, કુગુરુ, કુધર્મ પરિહરુ”,  
જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર આદરુ,

૬

જ્ઞાન વિરાધના, દર્શન વિરાધના,  
ચારિત્ર વિરાધના પરિહરુ”  
“મનો ગુપ્તિ, વચન ગુપ્તિ,  
કાય ગુપ્તિ આદરુ” “મનોદઢ  
વચન દઢ, કાયદઢ પરિહરુ”

પછી જમણા હાથના પૃષ્ઠભાગે  
મુહપતી (છઠ્ઠા ચિત્ર મુજબ) ફેરવતા

૭

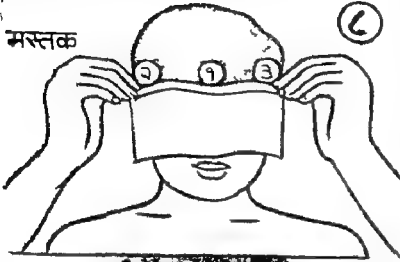
“હાસ્ય, રતિ, અરતિ  
પરિહરુ” બોલો

પછી ડાબા હાથમા મુહપતી ભરાવીને  
જમણા હાથના પૃષ્ઠભાગે ફેરવતા

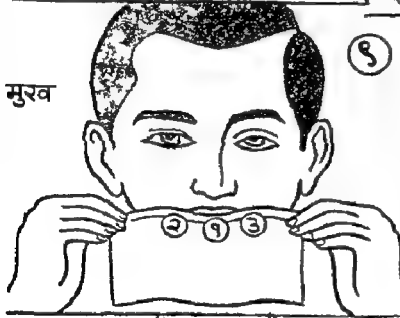
“ભય, શોક જુગુપ્સા  
પરિહરુ” બોલો



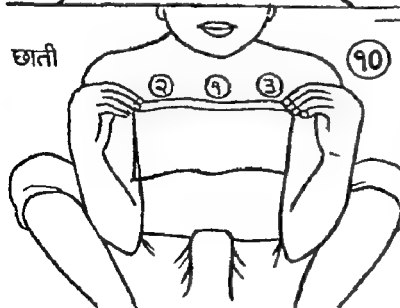
## શરીરની ૨૫, પડિલેહણામાં મસ્તકાદિની પડિલેહણા.



- ૮ પછી મુહપત્તીના બે છેડાને બે હાથથી પકડીને મસ્તકની વચ્ચોવચ અને તેની બંને બાજુએ પડિલેહણા કરતા અનુક્રમે “કૃષ્ણ લેહ્યા, નીલ લેહ્યા, કાપોત લેહ્યા, પરિહરુ,” બોલો



- ૯ પછી મુસ્વની પ્રમાર્જના કરતા- “રસગારવ, રિદ્ધિગારવ, સાતાગારવ પરિહરુ” બોલો



- ૧૦ પછી છાતીની પડિલેહણા કરતાં- “માયાશલ્ય, નિયાળશલ્ય, મિથ્યાત્વશલ્ય પરિહરુ.” આ બોલને મનમા બોલો

૧૧

## સ્વભા અને પગની પડિલેહણા

તે પછી મનમા નીચેના બોલ  
બોલવા પૂર્વક જમણા સ્વભાની  
પડિલેહણા કરો-

“ક્રોધમાન પરિહરુ.”

ડાબા સ્વમે કરતા-

“માયાલોભ પરિહરુ,”  
બોલો

ધને સ્વભા



બને પગો



૧૨

ચરવલાથી અથવા મુહપત્તીથી  
જમણા પગની (૩ વાર) પ્રમાર્જના કર

“પૃથ્વી કાય, અપ્કાય,  
તેઝકાયની રક્ષા કરુ,”

અને ડાબા પગે કરતા

“વાયુકાય, વનસ્પતિકાય,  
ત્રસકાયની રક્ષા કરુ”  
બોલો



સાધ્યજીને નં ૧૦ અને ૧૧ ની અને શ્રાવિકાઓને  
૮ ૧૦ ૧૧ નંબરની પડિલેહણા હોતી નથી

# સુગુરુવંદનના પ્રારંભનું

અવનતવન્દન  
[પ્રારંભનું શીર્ષનમન]



શુચના -પ્રાતઃક્રમણમા જિભા જિભા ઢરવાતી ક્રિયા જિભા જિભા જ ઢરવાતી હોય છે પણ આજની પરિસ્થિતિ એવી કમનમાળી ભરી છે કે સેકડો એ સી વી નેવુ ટગ લોકો જિભા યવા માટેના સીગ્નલ જેવો ચગવલો લાવતા નવી એટલે બેઠા બેઠા બધું રહે છે

અહીં આ જિભા જિભા વાદણ શક રગ ત્યાં પ્રાગભમા આ મુદ્રા કરવાની છે

# સુગુરુવંદન પ્રસંગના ૬ આવર્તો.

આવર્તો ચિત્ર-૧  
હો. યં. યં.



ગુરુ ચરણકર્મલ

અ.કા.કા.

મદદથી વખત મુકપતો, બે હાથ અને ચરવલો ડ્યા અને કપી રીતે રાખવા  
તે ચિત્રમા જુઓ  
અ બોલતી વખતે બે હાથ ડ્યા મૂઠવા અને હો બોલતી વખતે ડ્યા મૂકવા,  
બીજા અક્ષરો શરીરના ડ્યા સ્નાન પામે બોલવા તે તથા યથાગત મુદ્રા સચિત  
શીર્ષનમન વગેરે કેમ કરવું તે અક્ષીવી શરૂ થતા ૬ ચિત્રોમા બતાવ્યું છે  
વાદ્યવાની વધુ મમજ માટે પ્રાર્થના પદરમા પાના ઉપરનું ક્રમાશ્વ વાગે,  
જેથી વિધિપૂર્વક મદદ કરી શકે

# સુગુરુવંદનના પ્રારંભનું

અવનતવન્દન  
[પ્રારંભનું શીર્ષનમન]



શુચના -પ્રાતઃક્રમણમા જિલા જિલા ટરવાલી ક્રિયા જિલા જિલા જ કરનાની  
હોય છે પણ આજની પરિસ્થિતિ એવી કમનસીબી ભરી છે કે એકડો  
એસી વી નેવુ ટકા લોકો જિલા વખા માટેના સીગ્નલ જેવો ચગલો  
લાવતા નથી એટલે ખેલ ખેલા યથુ રહે છે

અહીં આ જિલા જિલા વાદણા શરૂ કરે ત્યાં પ્રાગ લખા આ મુદ્રા  
કરનાની છે

# સુગુરુવંદન પ્રસંગના ૬ આવર્તો.

આવર્તો ચિત્ર-૧

હો. યં ય.



ગુરુચરણકર્મલ

અ કા.કા.

નાથજી વખતે મુહપતી, બે હાથ અન ચગવેલાં ડ્યા અને કવી ગીત રાખવા  
તે ચિત્રમા જુઓ

અ બોલતી વખતે બે હાથ ઢવા મૂક્યા અને હો બોલતી વખતે ડ્યા મૂક્યા,  
બીજા અક્ષરો ગરીબના ડ્યા રવાન પામે બોલના તે તથા યથાબલ મુદ્રા સચિત  
શીર્ષનમન વગેરે ક્રમ કરવું તે અહીંથી શુ થતા , ચિત્રોમા ખતાવ્યું છે  
વાદજ્ઞાની વધુ સમજ માટે પ્રાગ્ લના પદ્ધતિ પાના ઉપરનું લખાણ વાંચો,  
તેથી વિધિપૂર્વક વાંચ કરી શકા



आवर्तो, चित्र-२

हो य य





-મે ણિ મે



મુમુક્ષુવદન

'સફાસ સ્વમણિજ્ઞો' 'સ્વામેમિ

[યથાજાતમુદ્રા]



તાવં

બેસીને વાદળા કરવાના હોય ત્યાં

—> હો



સફાસ વરવતે મુહુર્તની ઉપર સવળા હાથ શરવીને  
નમસ્કા કરવો પછી સ્વમણિજ્ઞો બોલતા તેમજ સ્વામેમિ

‘नमुत्थुण’ वरवते अन्य प्रकारे कराती बीजी थे योगमुद्राओ



नमुत्थुण' वरवते करवानी योगमुद्रा  
(प्रकार १)



नमुत्थुण वरवते करवानी योगमुद्रा  
(प्रकार ३)

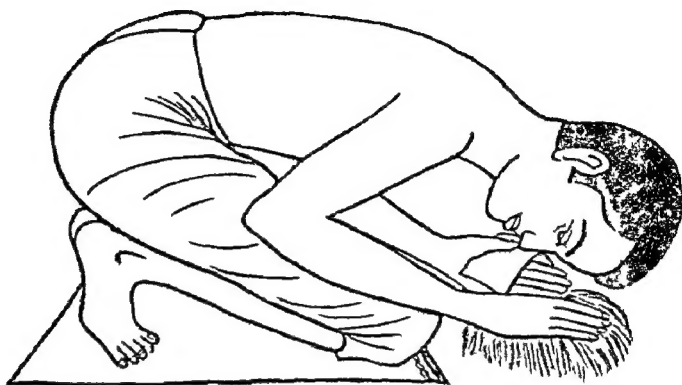
‘वदित्तुसूत्र’नु प्रचलित आसन

वदित्तुसूत्र’नु मुख्य आसन वीरासन



चरवलावाळो 'अब्भुट्टिओ' केवी रीते खामे

चित्र-



मूलमुद्रा

थापवानो हाथ जमण

बेठेलानु 'अब्भुट्टिओ'.



चित्र-२



नमो लोए सव्वसाहणं

नमो उवज्झायाणं

नमो आयरियाण

नमो सिद्धाणं

नमो अरिहन्ताणं

सक्ति

ॐ

एसा पंच नमोक्कारो

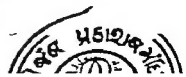
चव पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसि

इह्व हवइ मंगलम

अपरिग्रह  
ब्रह्मचर्य

अस्तय



ન પ્રકાશન મંદિર, અ વ

